★

महात्मा गांधी

—नव जीवन ट्रस्ट की आज्ञा से—

भूमिका

संघ ने 'सर्वोदय प्रकाशन' को हाथ में लेकर एक बहुत बड़ा क़दम उठाया है। बापू ने हमें जीवन की ज्योति दी, उसे हम चारों ओर फैलाने की कोशिश कर रहे हैं।

गांधी-विचार-धारा से सम्बन्ध रखने वाले साहित्य का देश भर में—विश्व भर में, असंख्य भाषाओं में प्रकाशन हुआ है, होता जा रहा है। परंतु हमारा प्रयास इन सबसे भिन्न है। हम केवल शहरों की पढ़ी लिखी जनता की बौद्धिक तुष्टि को लेकर आगे नहीं आये हैं। हम भारत के सात लाख गांवों में बसने वाली अपढ़ या अर्ध शिक्षित जनता के दिलों में बापू के विचारों को बैठा देना चाहते हैं। इसीलिए हमारे सामने यह सवाल ही नहीं उठता कि हमारी चीज़ें दूसरों से अधिक अच्छी और अधिक पूर्ण हैं। हमें किसी से भी प्रतियोगिता नहीं करनी है। हमारा ध्येय केवल यही है कि गांधी विचार-धारा की प्रामाणिक ढंग से ऐसी लोकप्रिय प्रस्तुति की जाय कि जनता को उसे सरलता पूर्वक ग्रहण कर लेने में रत्ती भर भी कष्ट न हो। सर्वोदय प्रकाशन की यही विशेषता है।

उपर्युक्त कारणों से ही हमने पुस्तकों का आकार और अक्षर (टाइप) बड़ा कर दिया है ताकि विशेषतः गाँव के भाइयों को इन्हें व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से अपनाने में असुविधा न हो। पुस्तकों का मूल्य भी कम से कम रखा गया है। आशा है हमें लोगों का पूरा सहयोग और पूरी सद्भावना प्राप्त होगी।

बापू के विचार चारों ओर व्यापक रूप से फैले हुए हैं। इनका संकलन और सम्पादन करना अथाह महासागर की तह से मोती निकालना है। अनेकों सूत्रों और अनेक साधनों का हमें सहारा लेना था। समय भी हमें 'कम से कम' था, इसलिए अधिक से अधिक व्यक्ति और शक्ति का योग लेना पड़ा। ईश्वर को धन्यवाद है कि सारी व्ययसाध्य कठिनाइयों से गुजरते हुए हम आज अपनी पहली भेंट लेकर आपके सामने उपस्थित हो रहे हैं। आशा है कि आप इसे दोषों के बावजूद भी अपने हृदय में स्थान देंगे।

'सर्वोदय प्रकाशन' की एक बड़ी विशेषता यह भी है कि हमारी प्रत्येक चीज किसी न किसी समस्या के हल के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। आज देश के सामने अनेक समस्याएँ अपने उग्रतम रूप में आ खड़ी हुई हैं। उन सब का एक-एक करके शमन करना है। हमने उन्हें एक-एक करके ही हाथ में लिया है और यह दिखलाने की चेष्टा की है कि बापू के विचारों के अनुसार उनका क्योंकर समाधान किया जा सकता है। बापू की बहुमुखी ज्योति में लोगों को चकाचौंध न हो इसलिए हमने उसे एक-एक निश्चित विचार बिन्दु पर घनीभूत करने की चेष्टा की है ताकि प्रत्येक प्रश्न को लोग आँख भर कर देखें और समझें।

अब कुछ अपनी बात है। यह कार्य हमने व्यापार नहीं, 'मिशन' (सेवा) रूप में ही लिया है। इसीलिए हमारे सभी साथियों को इसमें स्वार्थ की अपेक्षा सेवा का ही अधिक फल मिलना है। अपनी अनेक जिम्मेदारियों का गुरुतर भार वहन करते हुए भी उन्हों ने जो हमें योगदान दिया है हम उसका आभार मानते हैं और विश्वास करते हैं कि वे लोग हमें इसी प्रकार आगे भी बराबर सहयोग देते रहेंगे।

—रामकृष्ण

१-१२-४८, काशी

पाठकों से,

आपके सामने 'हरिजन' के रखते समय मुझे इस विषय सम्बन्धी दो एक बातें कह देनी आवश्यक हैं। एक तो यह कि खण्डों का विभाजन ऐतिहासिक नहीं, बल्कि भावना मूलक है। जनता के सामने सूत्रवद्ध ढंग से एक पूरे संदेश को रखते समय कई जगह से बाँटने को विभाजन नहीं कहा जा सकता, ठीक वैसे ही जैसे मील के पत्थरों से रास्ता साफ होता है, बँट नहीं जाता।

एक बात साथियों के सम्वन्ध में—मुझसे यह संकलन का कार्य न हो पाता यदि अन्य मित्रों के साथ मंगल नाथ सिंह, कमला प्रसाद सिंह तथा श्यामलाकान्त वर्मा आदि का प्रत्यक्ष योगदान न मिला होता। हम सब साथी हैं, मित्र हैं इसलिए कहने सुनने की कोई बात नहीं उठती।

—ठाकुर प्रसाद सिंह

★

क्रम

१—मेरे लिए ... ... १—८

२—यह धर्म नहीं पाखण्ड है ... ... ६—२६

३—मैं आपको पुकारता हूँ ... ... २७—४४

४—ऐसे नहीं ... ... ४५—५४

५—इस रास्ते चलो ... ... ५५—६६

६—उद्धार, दृढ़ता और आहुति ... ... ६७—७६

मेरे लिए तो यह जीवन-मरण का प्रश्न है
मैं चाहे टुकड़े टुकड़े कर दिया जाऊँ
पर दलितों से आत्मीयता न छोड़ूँगा।

मैं फिर जन्म ग्रहण करना नहीं चाहता। पर यदि मेरा पुनः जन्म हो तो मैं उन्हीं अछूत जातियों में पैदा होना चाहता हूँ जिससे मैं उनके दुःखों का साथी बन सकूँ, उनकी यातनाओं और तिरस्कारों को भोगूँ ताकि उस दुःखमय अवस्था से मैं उनके उद्धार की चेष्टा करूँ। इसलिए मैंने प्रार्थना की कि यदि मेरा पुनर्जन्म हो तो मैं न क्षत्रिय के घर में पैदा होऊँ, न ब्राह्मण के न वैश्य के और न शूद्र के, बल्कि पतित से भी पतित किसी जाति के घर में पैदा होऊँ।

★

जिस समय मेरी अवस्था बारह वर्ष की भी नहीं थी इस असमानता का भाव मेरे हृदय में उदय हुआ था। उका नाम का मेहतर मेरे घर पाखाना साफ करने आया करता था। घर के लोग मुझे उसे छूने से मना किया करते थे। मैं अपने भाई से इसका कारण बहुधा पूछा करता। यदि कभी मैं उका को छू लेता या उससे छू जाया करता तो मुझे स्नान करना पड़ता था और कपड़े बदलने पड़ते थे। उस समय मैं बड़ों की आज्ञा का पालन तो अवश्य कर लेता था पर साथ ही साथ हृदय के विरोधी भाव को हँसते हँसते व्यक्त कर दिया करता था कि हिन्दू धर्म इस तरह की योजना कभी नहीं कर सकता। हिन्दू धर्म में अछूतों की चर्चा नहीं हो सकती। मैं बड़ों की आज्ञा मानना अपना धर्म समझता था, इसलिये जो कुछ वे लोग कहते थे उसे स्वीकार कर लेता था और उसके विरुद्ध कभी भी आचरण नहीं करता था। तो भी कभी कभी इस प्रसंग को लेकर कुछ न कुछ विवाद हो ही जाया करता था। मैं अपनी माताजी से बहुधा कहा करता था आप उका को छूना पाप समझतीं हैं पर यह आपका भ्रम है।

स्कूल में मैं अछूतों को बहुधा छू दिया करता था, पर यह बात मैं अपने माता-पिता से कभी छिपाता नहीं था। उनसे सब बातें सदा कह दिया करता था।

★

रामायण सुनकर मेरे हृदय में यह भाव उठा कि जिस रामायण में राम को गंगा पार उतारने वाला ही अछूत था उस रामायण में किसी व्यक्ति को अछूत कैसे कहा गया है। हम लोग परमेश्वर को 'पतित-पावन' आदि की उपाधि दिया करते हैं इससे इस पुण्य-भूमि में उत्पन्न किसी व्यक्ति को अछूत या अपवित्र समझना महापाप है और उसपर आचरण करना शैतानी है। उसी समय से मैं सदा यही कहा करता हूँ कि इस तरह के विचार पाप पूर्ण हैं। उस समय यद्यपि यह भाव मेरे हृदय में दृढ़ नहीं हो गया था तथापि मैं उसी समय से छुआछूत के भाव को पाप समझता था।

किसी समय मेरी चित्त-वृत्ति दोलायमान हो गई थी। मैं यह निश्चय नहीं कर सकता था कि मैं कौन धर्म ग्रहण करूँ। हिन्दू-धर्म पर डटा रहूँ कि ईसाई हो जाऊँ। पर मेरी यह अवस्था अधिक काल तक न रही। होश सँभालते ही मैंने देखा कि मेरी गति हिन्दू धर्म में ही है और उसी से मैं मुक्ति-लाभ कर सकता हूँ। उसी समय से मेरा विश्वास हिन्दूधर्म पर और भी दृढ़ और अटल हो गया। पर उस समय भी मेरे मन में यह विश्वास जमा ही रह गया कि छुआछूत से हिन्दू धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं है और यदि वास्तव में यह प्रश्न हिन्दू-धर्म के अन्दर है तो मैं ऐसे हिन्दू-धर्म को प्रणाम करता हूँ।

★

छुओछूत के प्रश्न को प्रश्रय देकर हिन्दू-धर्म ने पाप किया है। उसने हमें नीचे गिरा दिया है, साम्राज्य में अछूत बना दिया है। यह सब पाप उसी छुआछूत के पाप से निकला है।

★

मेरी धारणा है कि जब तक हिन्दू लोग छुआछूत को अपने धर्म का अंग समझते रहेंगे तब तक भारत में स्वराज्य की स्थापना नहीं हो सकती। युधिष्ठिर बिना अपने कुत्ते के स्वर्ग में प्रविष्ट नहीं हुए तो भला युधिष्ठिर की सन्तान अपने उन अछूत भाइयों को छोड़कर स्वराज्य पाने की अभिलाषा किस तरह कर सकती है। जिस अत्याचार का दोषारोपण हम अंगरेजों पर करते हैं क्या उसी पाप के भागी हम अपने अछूत भाइयों की तरफ से नहीं हैं। हम लोगों ने इन्हें पददलित किया है।

★

चाहे मैं टुकड़े टुकड़े कर दिया जाऊँ, पर दलित जातियों से आत्मीयता न छोड़ूँगा।

जिस प्रथा की बदौलत हिन्दुओं का एक बड़ा भाग पशु से भी बदतर हालत को जा पहुँचा है, उसके लिए मेरे रोम रोम में घृणा व्याप्त हो रही है। जिस धर्म के अनुयायियों के कारण अन्त्यजों को पानी भी मिलना दुश्वार हो जाय उसकी निर्दयता को क्या कहा जाय! पानी का त्रास तो एक दुश्मन को भी नहीं दिया जा सकता और यह सब होता है धर्म के नाम पर।

लेकिन यह सच है कि अधिक समय तक इस कलंक को छाती पर लगा कर रखा न जा सकेगा।

★

मैं हरिजन-उद्धार के कार्य में तनिक भी नरम नहीं हुआ हूँ। मैं अपने विचार से जिस से हरिजन उद्धार की संभावना देखता हूँ उस मार्ग से उसे हटाने की मिटाने की कोई बात उठा नहीं

रख रहा हूँ। सुधारक को शुरूआत में हमेशा ही अकेला रहना पड़ा है। अस्पृश्यता हमारे देश की पुरानी बुराई है और खासकर इसे धर्म का चोंगा पहिना दिया गया है। × × काम करने वाले को निराश होकर बैठ नहीं जाना चाहिये। जो सदियों से कुचले गये हैं उन्हें तेजस्वी बनते तो समय जरूर लगेगा।

★

एक मेरे हरिजन साथी ने हाल ही के मेरे एक वक्तव्य में हरिजन की जगह आये 'भंगी' शब्द के लिए लिखित शिकायत भेजी है। हरिजन शब्द मुझे एक गुजराती अस्पृश्य ने सुझाया और मैंने इसे प्रसन्नता पूर्वक ले भी लिया था, परन्तु इसके मानी यह नहीं है कि एक उप जाति के लिए जो शब्द व्यवहार में आ रहा है उसका उपयोग किया ही न जाय। मै अपने को हरिजन ही मानता हूँ और अपने को भंगी सम्बोधित होने में मुझे प्रसन्नता ही होती है।

'भंगी' शब्द के बारे में लोगों की जो राय हो पर मेरा विचार तो यह है कि यह 'शिव' जी का दूसरा नाम भी है। चाहे आप एक झाड़ू लगाने वाले को मेहतर कहो या भंगी, वह तो शिवजी की ही भाँति आदमियों के लिए स्वास्थ्य का इन्तजाम करता है। एक घर द्वार साफ करके यह करता है जब कि दूसरा मनको परिष्कृत करके।

★

मैं मानता हूँ कि यदि मुझमें जरा भी वैष्णवपन शेष होगा तो अन्त्यजों का त्याग करके मिलने वाले स्वराज्य को त्याग करने की शक्ति भी ईश्वर मुझे देगा।

जिस प्रथा की बदौलत हिन्दुओं का एक बड़ा हिस्सा पशु से भी अधम अवस्था को जा पहुँचा है उसके लिए मेरे रोम रोम में घृणा व्याप्त हो रही है। बेचारे अन्त्यज को इस रास्ते जाने दिया जाय तो कुछ फैसला हो सकता है पर उसे न तो विचार शक्ति है और न उसके लिए कोई रास्ता है। क्या पंचम अछूत के पास ऐसी कोई जगह है जिसे वह अपनी कह सके? जिन सड़कों को वह साफ करता है, जिनके लिए वह अपने रक्त को पसीना बना देता है उन्हीं पर वह चलने नहीं पाता। वह औरों की तरह कपड़े नहीं पहन सकता तिसपर लेखक सहिष्णुता की बात करते हैं।......यह केवल वाणी-व्यभिचार है। एक तो हमने उन्हें नीचे गिरा दिया और फिर उन्हीं के पतन का उपयोग उनके उत्थान के खिलाफ करने की धृष्टता हम करते हैं।

★

मेरे लिए स्वराज का मतलब है हीन से हीन की आजादी।

यदि हमारे लिए स्वराज-प्राप्ति की यह शर्त आवश्यक है कि हम मुसलमानों से मेल करें तो यह भी उतना ही आवश्यक है कि इसके पहले कि हम जरा भी इन्साफ या आत्मसम्मान के नाम पर स्वराज की बातें करें, हम पंचम भाइयों से मेल करलें। मुझे इस बात में कतई

दिलचस्पी नहीं कि हिन्दुस्तान की गरदन पर से अंग्रेजों का जुवा हट जाय। मैं तो देश के गले पर से हर तरह के जुवे हटा देना चाहता हूँ और इसी पर तुला हूँ। मैं नहीं चाहता कि भूत को हटा कर पिशाच को गद्दी पर बिठाऊँ।

इसलिए मेरे नजदीक स्वराज के माने हैं आत्मशुद्धि का आन्दोलन।

★

मैंने छूआछूत का प्रश्न सबसे आगे रखा है क्योंकि जनता को इसके प्रति मैं सर्वथा उदासीन या सुस्त पाता हूँ। हिन्दू असहयोगियों को इस प्रश्न पर जरा भी असावधानी नहीं दिखलानी चाहिये। खिलाफत के साथ हमलोग न्याय भले ही करवालें पर जबतक छूआछूत का घुन हिन्दू-समाज को चालता जायगा तबतक स्वतंत्रता की व्यवस्था कदापि नहीं हो सकती। यदि हम लोग भारतीय जनता के पाँचवें भाग को अनन्त काल तक के लिए दबाये रखना चाहते हैं और उन्हें राष्ट्रीय सभ्यता का फल नहीं चखने देना चाहते तो हम लोगों के लिये स्वराज का कोई अर्थ नहीं है। इस आत्म-शुद्धि के आन्दोलन में हम ईश्वर की सहायता तो चाह रहे हैं पर साथ ही उसकी सबसे प्यारी सन्तान को मनुष्य के साधारण अधिकार से भी वञ्चित रखना चाहते हैं।

★

मैं तो अछूत जातियों को अपने से अलग रखने की अपेक्षा अपने शरीर के टुकड़े टुकड़े कर दिये जाने से अधिक संतुष्ट हूँगा अगर हिन्दू अपने उच्च और उदात्त धर्म को, अस्पृश्यता का कलंक कायम रखते हुए, निन्दनीय बनावेंगे तो वे अवश्य ही कभी न तो स्वतंत्रता के योग्य होंगे और न उसे प्राप्त ही कर सकेंगे। और चूँकि मैं हिन्दू धर्म को अपने प्राण से भी अधिक प्यार करता हूँ, इसलिए यह कलंक मेरे लिये एक असह्य भार हो गया है। अपनी जाति के पञ्च-मांश मनुष्यों को बराबरी के साथ रहने देने का अधिकार देने से इनकार करके हम ईश्वर से मुँह न मोड़ें।

★

जो लोग यह समझते हैं कि हिंदुओं की संख्या कम न हो जाय इस उद्देश्य से गांधीजी ने यह आंदोलन चलाया था उनके लिए वर्धा में गांधी जी ने कहा था :—

आप जानते हैं कि मेरे जीवन का इतिहास यह बताता है कि मैं किसी बात में संख्या पर कोई आधार नहीं रखता। राजनीति में भी मैंने गुण पर, सदाचार पर, सत्य प्रियता पर जोर दिया है संख्या पर कभी जोर नहीं दिया। हजार कौड़ी लेकर मैं क्या करूँ? इसके बदले तो सोने चाँदी का एक टुकड़ा मिले वही अच्छा। संख्या-बलसे तो किसी धर्म की रक्षा नहीं हो

सकती यदि सवर्ण हिन्दू इस पापको जड़ मूल में नहीं धो डालते और एक मनुष्य भी अस्पृश्य रह जाता है तो भी हिन्दू धर्म डूबने वाला ही है।.......दूध में जरासा जहर हो तो हम उसे तुरंत फेंक देते हैं। हिन्दू धर्म रूपी दूध में जरा भी यह जहर रहेगा तो ईश्वर और संसार उसे फेंक देगा और वह नष्ट हो जायगा।

★

शायद संसार में इससे बड़ा सुधार अभी तक नहीं हुआ है। मैं इसे सबसे महान सुधार इसलिए कहता हूँ कि पहले तो इसमें करोड़ों मनुष्यों का सुख निहित है और दूसरे इसका संबंध सैकड़ों वर्ष की पुरानी रूढ़ि से है। अस्पृश्यता को यदि हमने प्रयत्न से मिटा दिया तो मानव-समाज के लिए बड़े गौरव की बात होगी और संसार भर में शांति का साम्राज्य स्थापित हो जायगा।

★

यदि हिंदू अस्पृश्यता की राक्षसी से अपना पिंड छुड़ाने में, अपने हृदयों से अस्पृश्यता निकालने में सफल हो सके तो सब जातियाँ परस्पर सुख, शांति और प्रेम से रहेंगी और मुझे जरा भी संदेह नहीं कि जिस एकता के लिए हम छटपटा रहे हैं वह हार्दिक एकता भी हो जायगी। पारस्परिक स्नेह और विश्वास के सामने संदेह अपने आप नहीं टिकेगा।

★

मेरी कारखाइयों में साम्प्रदायिकता का लेश भी नहीं है। मेरा पक्का विश्वास है कि अगर हिंदू धर्म ने अपने अंदर से ऊँच नीच का भेद-भाव हटा दिया तो सर्वथा समान शर्तों पर मुसलमान, ईसाइयों और दूसरे लोगों से मिलने में हिंदू समर्थ हो सकेंगे।...

ईसाई और मुसलमानों को भी अपने में मिला लेना मैं पसन्द करूँगा पर उन्हें हिन्दू बनाकर नहीं बल्कि उनके संदेह का निवारण करके। तब अल्पसंख्यक जातियाँ अपने को अल्प संख्यक न समझेंगी।......अस्पृश्यता न केवल हिंदू और हिंदू बल्कि मनुष्य मनुष्य के बीच भी बाधा पैदाकर देती है।

★

मेरी अल्पबुद्धि के अनुसार तो भंगी को मैल चढ़ता है वह शारीरिक है और वह मैल तुरत दूर हो सकता है। परन्तु जिनपर असत्य पाखण्ड का मैल चढ़ गया है वह इतना सूक्ष्म है कि उसको दूर करना बड़ा कठिन है। किसी को अस्पृश्य यदि गिन सकते हैं तो असत्य और पाखण्ड से भरे हुए लोगों को।

★

भंगी-चमार तो अपने अन्दर बैठे हुए हैं, उनका बहिष्कार करना हैं, उनसे छूकर हमें नहाना है। दूसरे भंगी-चमार तो मैला काम करते हुए भी ऐसे अच्छे, ऐसे शान्त-सरल और ऐसे नीतिज्ञ हैं कि वे पूजा करने योग्य हैं। भंगी चमारों ने दुर्गुणों और दूसरे वर्णों ने सद्गुणों का पट्टा नहीं लिखा लिया है।

★

अगर किसी अल्प संख्यक के एक भी न्यायसम्मत अधिकार को कुचलने से स्वराज मिलता हो तो मैं उसे पाने की इच्छा नहीं करूँगा।

जब हमारी रवादारी भरी और मिली जुली तहजीब अपने आप जाहिर नहीं होती तो हिन्दुस्तान और उसके करोड़ों लोगों को प्यार करनेवाले के नाते मेरे स्वाभिमान को चोट पहुँचाती है।

अगर हिन्दुस्तान अपने फ़र्ज को भूलता है तो एशिया मर जायगा। यह ठीक ही कहा गया है कि हिन्दुस्तान कई मिलीजुली सभ्यताओं और तहजीबों का घर है जहाँ वे सब साथ-साथ पनपती हैं। हम सब ऐसे काम करें कि हिन्दुस्तान एशिया की या दुनिया की किसी भी हिस्से की कुचली और शोषित जातियों की आशा बना रहे।

विद्या विनय सम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि
शुनि चैव श्वापके च पंडिताः समदर्शिनः

"ईश्वर प्रकाश है अन्धकार नहीं वह प्रेम है घृणा नहीं, वह सत्य है असत्य नहीं। फिर यह धर्म के नाम पर अन्धकार, घृणा और असत्य कैसा ?"

"या तो इस पृथ्वी पर अस्पृश्यता ही रहेगी या हिन्दू धर्म ही रहेगा। एक साथ दोनों नहीं रह सकते !"

यह धर्म नहीं पाखंड है

जो वस्तु जगत के सामने नहीं रखी जा सकती जो वस्तु हृदय और बुद्धि का स्पर्श नहीं करती वह सनातन धर्म नहीं हो सकती। क्या हिन्दू धर्म इतना ऊँचा उठेगा कि वह बदनाम अन्धविश्वासों से चिमटा रहने और बुरे रीति-रिवाजों की नक़ल करने की जगह मर जाना पसन्द करेगा ?

★

गीता कहती है कि "देवों को संतुष्ट रखना चाहिये"। देवता आसमान पर नहीं है। आप के देव अन्त्यज हैं आपके दूसरे देव अस्पृश्य हैं।

★

कोई प्राणी जन्म से ही अस्पृश्य है और उसे अस्पृश्य अवस्था में ही मरना पड़ेगा, ऐसा हिन्दू-धर्म में नहीं है, यह मेरा विश्वास है। ऐसे अधर्म को धर्म का नाम देना अधर्म करने के समान है। जो अस्पृश्यता आज व्यवहार्य नहीं है उसे त्याग करने का मैं हिन्दुओं से आग्रह कर रहा हूँ।

★

अस्पृश्यता के साथ संग्राम एक धार्मिक संग्राम है। यह संग्राम मानव-सम्मान की रक्षा के लिए है। यह संग्राम हिन्दू-धर्म में बहुत ही बलवान सुधार के निमित्त है। यह संग्राम सनातनियों के खाईदार गढ़ों के विरुद्ध है। इसमें विजय निश्चित है और यह विजय सच्चे हिन्दू-युवकों के धैर्य और बलिदान के योग्य ही होगी। धैर्य की विधि इस संग्राम में दत्तचित्त नवयुवकों के लिए आत्मशुद्धि की विधि है। यदि वे इसमें लगे रहे तो उनकी गणना भावी-भारत के निर्माण-कर्त्ताओं की पंक्ति में की जाएगी।

★

ईश्वर प्रकाश है, अंधकार नहीं। वह प्रेम है, घृणा नहीं। वह सत्य है, असत्य नहीं। एक ईश्वर ही महान् है हम उसके बन्दे उसकी चरण-रज हैं। आओ हम सब मिलकर नम्र बनें और ईश्वर के छोटे से छोटे बन्दे के भी इस दुनियाँ में रहने के हक को तसलीम करें।

★

अस्पृश्य सदा के लिए अस्पृश्य नहीं बना रह सकता। जब एक बार यह मान लिया गया कि केवल द्वादशाक्षर (ॐ नमो भगवते वासुदेवाय) मन्त्र का उच्चारण करने से कोई भी अस्पृश्य 'स्पृश्य' हो सकता है, तब अस्पृश्यता का गढ़ तो उसी वक्त ढह गया। जैसी अस्पृश्यता आज मानी या बरती जाती है, उसके समर्थन में सनातनियों ने अब तक एक भी शास्त्रीय वचन उपस्थित नहीं किया।

★

ऐसी एक भी माता को मैं नहीं जानता, जो अपने बच्चों में भेदचार रखती हो। फिर जगतपिता परमात्मा अपनी सन्तान में यह भेद-भावना कैसे रख सकता है, कि एक संतान स्पृश्य है और दूसरी अस्पृश्य? निश्चय ही शास्त्रों में अस्पृश्यता के लिए कोई आधार नहीं है। धर्म ग्रन्थ कभी अधर्म का उपदेश नहीं कर सकते। 'अद्वैत' ही वेदों का मूल सिद्धांत है, जिसके अनुसार मनुष्य-मनुष्य में कोई अन्तर हो ही नहीं सकता, इसलिये मैं आशा करता हूँ कि आप लोग किसी मनुष्य को अछूत न मानेंगी और हरिजनों को अपने सगे भाई-बहिनों की तरह समझेंगी।

★

अस्पृश्यता का नाश न हुआ, तो हमारा नाश और हिन्दू-धर्म का नाश निश्चित है। हमें संसार के आगे नीचा देखना पड़ेगा। संसार हमसे पूछेगा और हमारे धर्म-सिद्धान्तों की हँसी उड़ाएगा।

अगर हमने अस्पृश्यता का नाश नहीं किया, तो हिन्दू-धर्म एक दिन निश्चय ही नष्ट हो जायगा, इसे आप लोग मेरी भविष्यवाणी समझें।

मेरा नम्र विश्वास है कि हरिजनों के सम्बन्ध का मेरा यह भाव मेरे वैष्णव-धर्म को प्रदीप्त करता है। उसमें मेरी शुद्ध दया व्यापक है, उससे मेरी मर्यादा की शुद्धता सिद्ध होती है।

★

भगवान को हम पतित-पावन कहते हैं, दरिद्र नारायण कहते हैं, दयानिधि कहते हैं करुणासागर कहते हैं। भगवान के ऐसे हजारों विशेषण हैं, जिनसे हम सिद्ध करते हैं, कि भगवान किसी एक खास कौम के नहीं हैं। न ब्राह्मण के हैं, न क्षत्रिय के हैं, किन्तु सब के हैं। पर हम तो अपने अभिमान में डूबकर यह कहते हैं कि भगवान केवल हमारे लिए हैं, दूसरों के लिए नहीं। जो ऐसे पतित हैं, उनके लिये मैंने यह चीख चीख कर सुना दिया है, कि अगर शास्त्र में कुछ सत्य है, शास्त्र के सिद्धातों में कुछ सत्य है, तो जिस मन्दिर में हरिजनों के जाने का अधिकार नहीं है, उस मन्दिर में भगवान् नहीं हैं, वहाँ तो सिर्फ पाषाण है।

★

ऊँच नीच के मान तक ही यह आन्दोलन सीमित है, रोटी-बेटी के सम्बन्ध से इसका कोई वास्ता नहीं। मैं मुसलमानों और भंगियों के साथ खाता हूँ, पर यह तो मेरी व्यक्तिगत बात है। मैं तो अपने को भंगी मानता हूँ, इसमें मेरे लिए कोई शर्म की बात नहीं है। पर इसमें मेरा स्वेच्छाचार नहीं, संयम है। और ऐसा कहने को मैं आपसे नहीं कहता। मैं शास्त्र के बाहर नहीं जाता मैं तो अपनी इस बात को भी शास्त्र विहित ही मानता हूँ। रोटी-बेटी संबन्ध के व्यक्तिगत संयम के प्रचार करने की न तो आवश्यकता है न समय। मैं तो सिर्फ धर्म का तत्व ही

लोगों के सामने रख रहा हूँ। इस आन्दोलन का तो यही उद्देश्य है कि जो सामाजिक, नागरिक और धार्मिक हक्र दूसरे सवर्ण हिन्दुओं को मिले हुए हैं वही सब हरिजनों को मिलने चाहिएँ।

अस्पृश्यता का मूल उद्गम धर्म में नहीं है। उच्चता के इस खोटे अहंकार ने ही अस्पृश्यता को जन्म दिया है। अपने से दुर्बल को हम पैरों तले दबाये रहें इसी मनोवृत्ति से अस्पृश्यता पैदा हुई है। जब तक हरिजनों के साथ कोई संपर्क न रहेगा, और बुरी से बुरी बस्तियों में वे इसी प्रकार सड़ते रहेंगे, तब तक यह अस्पृश्यता जाने की नहीं। हमारे समाज में अगर वे सब लोगों के साथ आज़ादी से मिलने-जुलने लग जायँ और बिल्कुल बराबरी की हैसियत से सब काम धन्धे करने लगें तो उन्हें देखकर अचरज होगा कि क्या ये वही तिरस्कृत हरिजन हैं?

★

सचमुच ही यह आश्चर्य और दुख की बात है कि यहाँ के लोग अस्पृश्यता, दूरिता और अदर्शनीयता का समर्थन धर्म के नाम पर कर रहे हैं। शास्त्रों में कहा गया है कि जब बुरे दिन आते हैं तो धर्म का स्थान अधर्म ले लेता है और विज्ञान भी सत्य के नाम पर असत्य का प्रचार करने लगते हैं। अपनी योग्यता के अनुसार मैंने भी शास्त्रों का अध्ययन किया है और मुझे कहीं भी अस्पृश्यतारूपी पाप का समर्थन शास्त्रों में नहीं मिला। मैं तो अपने को सत्य का एक सच्चा सेवक समझता हूँ इसलिए अगर मुझे कहीं यह पता लग जाय कि वर्त्तमान अस्पृश्यता का समर्थन शास्त्र करते हैं तो मैं उसी क्षण हिन्दू-धर्म को अन्तिम प्रणाम कर लूँ। कोई भी असत्य, वह कितना ही मोहक क्यों न हो मुझे अपने दायरे में कैद नहीं रख सकेगा।

★

'जिस प्रकार आपने सच्चे फूलों के स्थान पर ये कृत्रिम फूल (एक कागदी फूलों की माला भेंट करने पर) रख लिये हैं उसी प्रकार आप की यह अस्पृश्यता भी कृत्रिम ही है। आपका जो आज यह खयाल है, कि वह खुद ईश्वर की बनाई हुई है, मैं आप के इसी विश्वास के विरुद्ध तो यहाँ चेतावनी देने आया हूँ कि अस्पृश्यता और दूरिता कोई दैवी रचना नहीं है। अस्पृश्यता तो आपके इस कागज के नकली फूलों की तरह मनुष्य की बनाई एक कृत्रिम चीज है। मेरी राय में तो यह सबसे महान पाप है। यह सबसे बड़ा मनुष्य द्रोह है और सबसे बड़ा ईश्वर विद्रोह भी है। हमारा यह कर्म-सिद्धांत पूरा पूरा व्यंग चित्र नहीं तो क्या है कि हम खुद तो मनुष्य को इतना पतित बनाने जा रहे हैं, और कहते क्या हैं कि यह सब जो उनके पूर्व कर्मों का फल है! मेरा दावा है कि मैं इस कर्म-विपाक को कुछ कुछ जानता हूँ। जब कोई अपने आपसे बिल्कुल अलग, चाहे जिस पर कर्म-सिद्धान्त को थोप देता है तब उस कर्मवाद का रूप विकृत हो जाता है। बेचारे नयाड़ियों या अन्य लोगों के विषय में आप जो बार बार पूर्व कर्म की बात बीच में लाते हैं वह बिल्कुल निरर्थक है।

अगर यह कर्म का कानून हम अपने ऊपर खुद लगाने लगें तो फिर अपनी दुनिया ही कुछ दूसरी पायेंगे। इसलिए मैं तो आप से यही प्रार्थना करने आया हूँ कि अब आप कर्मवाद का अधिक मखौल न उड़ावें और छुआ छूत के इस दैत्य को तो अब हृदय से निकाल ही दें। अगर आपने यह न किया तो यह दानव हम सब का भक्षण करके ही छोड़ेगा।

★

यह अस्पृश्यता मुझे बहुत ही साल रही है। मेरा यह पक्का विश्वास है, कि अगर यह अस्पृश्यता निर्मूल न हुई तो हिंदू धर्म रसातल को चला जायगा। फिर भी मैं यह नहीं चाहता कि किसी प्रकार के जोर जुल्म से धमकी देकर या बलात्कार से अस्पृश्यता का नाश किया जाय। यह कानून या बलात्कार से दूर होने की चीज नहीं। अस्पृश्यता निवारण तो करोड़ों हिन्दुओं के हृदय परिवर्तन से ही, सम्पूर्ण आत्मशुद्धि से ही सम्भव है। यह कार्य दूसरों को मारपीट करके नहीं बल्कि हजारों सेवकों के बलिदान से ही हो सकता है। इसलिए प्रत्येक शास्त्र पुकार पुकार कर कह रहा है कि धर्म की रक्षा तप से ही हो सकती है।

★

एक भी मन्दिर बलात्कार से खुलवाने का अपराधी मैं न बनूँगा। यह मैं अवश्य चाहता हूँ कि जहाँ मन्दिर खुलवाने के विषय में लोकमत पूरा पूरा और स्पष्ट रीति से जागरित हो गया हो वहाँ मंदिर खोल दिया जाय। ऐसा करने में अगर कोई कानूनी बाधा आ पड़ी हो तो उस बाधा को हटवा देना चाहता हूँ। 'मन्दिर प्रवेश बिल' का यही अभिप्राय है। आज बहुत से ट्रस्टी अपने प्रबंधाधीन मंदिरों को इस कानूनी बाधा के कारण ही बाध्यतः नहीं खोल सकते। उनकी यह विवशता ही मंदिर प्रवेश बिल दूर करना चाहती है। इसलिए इस मंदिर प्रवेश बिल या अस्पृश्यता निवारण बिल में किसी तरह की जबर्दस्ती या बलात्कार का लेश मात्र भी नहीं है।

★

दूसरी बात मुझसे पूछी गयी है कि इस आन्दोलन का ब्राह्मण धर्म का नष्ट करने का भी इरादा है क्या? मैं आपसे इतना ही कह सकता हूँ कि ऐसा इरादा तो मेरा हो नहीं सकता क्योंकि मैं तो ब्राह्मण धर्म के नाश को हिन्दू-धर्म के नाश का पर्याय मानता हूँ। पर इसका अर्थ यह नहीं कि आज ब्राह्मण नाम को धारण करने वाला जो व्यक्ति ब्राह्मणत्व का दावा रखता है उसे मैं स्वीकार करता हूँ। किसी भी मनुष्य को, उसके जन्म के कारण समाज ब्राह्मण नहीं मान सकता। ब्राह्मण शब्द का अर्थ समझ लेना चाहिए। जिसने ब्रह्म को जान लिया वही ब्राह्मण है।

हममें दो प्रकार के पंडित हैं जो शास्त्रों का जुदा-जुदा अर्थ करते हैं। ऐसी हालत में साधारण मनुष्य क्या करे? उसे तो ईश्वर द्वारा दी हुई बुद्धि का उपयोग करके दो में से एक को चुनना

होगा। मैंने तो इतने दिनों के अनुभव से पाया है कि अस्पृश्यता न तो हृदय को, और न तो बुद्धि को 'अपील' करती है। हृदय की सहानुभूति तो पापी की ओर होती है। मन्दिर तो पापियों के लिए ही हैं जहां जाकर वे अपने पापी हृदय को धो सकते हैं। यदि आपका विश्वास है कि वे अपने पूर्व कर्मों के ही कारण इस बुरी अवस्थामें हैं तो आपको उन्हें मंदिर में जाने का हक सबसे पहले देना चाहिए। संसार के सभी धर्मों में भगवान को पतित पावन, पाप-मोचन तथा दीनबंधु कहा गया है।

★

मैं मानता हूँ कि शास्त्रों में एक प्रकार की अस्पृश्यता है पर वह दूसरे अर्थ में है। जिस रूप में हम उसे आज मानते हैं उस रूप में नहीं है। क्रोध, वासना, घृणा, तथा अन्य कुवासनाएँ जो हमारे हृदय में भरी हैं असल में वे अस्पृश्य हैं। जिस रूप में हम आज अस्पृश्यता मानते हैं उस रूप में उसे शास्त्र सम्मत बतलाना बुद्धि का व्यभिचार है। संसार में बहुरूपता तो है पर उसका मतलब असमानता या अस्पृश्यता नहीं। हाथी और चींटी असमान हैं पर ईश्वर कहता है कि उसकी निगाह में दोनों समान हैं। रूप अनेक हैं पर अन्दर से सभी एक हैं। जब इस विविधता एवं अनेकरूपता के बीच सर्व व्यापक तात्विक एकता विद्यमान है तब इस ऊँच नींच के भेद भाव के लिए हिंदू धर्म में स्थान कैसे हो सकता है?

मेरा भाव मेरे वैष्णव धर्म की दीप्ति करता है उसमें मेरी शुद्ध दया व्यापक है उसमें मेरी मर्यादा की शत्रुता सिद्ध होती है।

कई वैष्णव यह समझते हैं कि मैं तो वर्णाश्रम धर्म को मलिनता से निकालकर उसका उच्च स्वरूप प्रकट कर रहा हूँ।

★

जात पांत हरिजनो की मित्र हो या शत्रु इसकी मुझे चिंता नहीं। जाति का एक तरह से जो अर्थ निकाला जाता है उस अर्थ में वह हरिजनों की शत्रु है। पर जब उसका अर्थ वर्ण किया जाता है तब वह उनकी शत्रु नहीं है। मगर धर्म तो किसी भी हालत में उसका शत्रु नहीं हो सकता। मैं धर्म के ही नाम पर तो हरिजनों का उद्धार करना चाहता हूँ। यह धर्म ही तो है जिसकी बदौलत मैं स्वेच्छा से हरिजन हो गया हूँ। अगर मेरे अन्दर गहरी धर्म-बुद्धि न होती तो मैं कदापि ऐसा न करता। यह कहना सत्य नहीं है कि धर्म हरिजनों का शत्रु है, उनका शत्रु तो अधर्म है। मैं बाहु उठाकर घोषित कर चुका हूँ कि जैसी अस्पृश्यता आज बरती जा रही है वह धर्म नहीं किन्तु अधर्म है। अस्पृश्यता को देवता ने नहीं शैतान ने बनाया है। संस्कृत में धर्म का अर्थ 'धारण करना' है।

★

सवर्ण हिंन्दुओं को जानना चाहिए कि कितने हरिजन युवक मौजूद हैं जो अपने जीवन से धर्म को एक दम उड़ा देना चाहते हैं। धर्म के बारे में उनकी जो गलतफहमी है उसके लिए उन्हें एक दम दोष नहीं देना चाहिए। दोषी जो हम सवर्ण हिन्दू हैं तो इस गलतफहमी के जिम्मेदार हैं। सवर्ण हिन्दुओं के लिए यह विश्वास कर लेना घातक होगा कि सिवा मंदिर प्रवेश के हरिजनों के लिए हमें अब कुछ भी करना बाकी नहीं रह गया। यह बिल्कुल ही गलत धारणा हैं कि आर्थिक स्थिति सुधरते ही हरिजनों के सारे कष्ट दूर हो जायंगे। आपको यह जान लेना चाहिए कि कुछ हरिजनों को उनकी आर्थिक उन्नति ने ही इस बात का ज्ञान कराया है कि सवर्ण हिन्दुओं ने उनका कैसा अधःपतन किया है।

★

आप अपने हृदय पटल पर लिख लीजिए कि जो अस्पृश्यता हम आज व्यवहार में ला रहे हैं अगर वह जीवित रही तो हिन्दू धर्म निश्चय ही नष्ट हो जायगा। कृपाकर मेरी इस बात पर आप विश्वास रखें और नाश की ओर जाते हुए हिन्दू समाज को बचालें। यह आपकी इच्छा पर निर्भर करता है कि आप दोनों में से किसका अस्तित्व चाहते हैं—अस्पृश्यता का अथवा हिन्दू धर्म का? दोनों में से किसी एक को चुन लें! यह चुनाव आज ही इसी क्षण कर सकते हैं नहीं तो फिर कभी नहीं।

★

धर्म में अस्पृश्यता, दूरिता, अदर्शनीयता जैसी चीज के लिए कोई स्थान नहीं हैं। यह तो शैतान की करामात है। मुझे इसमें लेश मात्र भी शंका नहीं कि ईश्वर मनुष्य की तमाम शैतानियों को असफल कर देगा। यह अस्पृश्यता अब आखिरी सांसें भर रही है। या तो इस पृथ्वी पर अस्पृश्यता ही रहेगी या हिन्दू धर्म ही रहेगा। एक साथ दोनों नहीं रह सकते।

★

वर्ण की मान्यता का आधार एक वैदिक ऋचा है। उसमें चार वर्णों की शरीर के चार मुख्य अंगों से उपमा दी गई है। यह कोई नहीं कहेगा कि शरीर का एक अंग दूसरे अंग से ऊँचा है अथवा नीचा। सब अंग एक-सरीखे ही हैं। वर्णों में समानता का मानना ही धर्म हो सकता है। ऊँच नीच का भेद भाव निश्चय ही अभिमान मूलक है, इसलिये अधर्म है।

★

मैं वैष्णव धर्म का अनुयायी हूँ, अतः कर्म की क्षणिक अस्पृश्यता मैं मानता हूँ। किन्तु जन्म की अस्पृश्यता मैं नही मानता। जब मैं अपने मल-मूत्र उठाने वाली अपनी माता का ध्यान करता हूँ, तब वह मुझे पूज्य प्रतीत होती है। उसी तरह जब भंगी की सेवा का विचार करता हूँ, तब मेरी दृष्टि में वह पूज्य हो जाता है।

मेरी अल्प बुद्धि के अनुसार तो भंगी पर जो मैल चढ़ता है, वह शारीरिक है और तुरन्त दूर हो सकता है किन्तु जिनपर असत्य पाखण्ड का मैल चढ़ गया है वह इतना सूक्ष्म है कि दूर करना बड़ा कठिन है। किसी को अस्पृश्य गिन सकते हैं तो असत्य और पाखण्ड से भरे हुये लोगों को।

वर्ण का अस्तित्व केवल सेवा के लिये ही हो सकता है स्वार्थ के लिए नहीं। इसी कारण न तो कोई उच्च है, न कोई नीच। उच्चता के अभिमान से मनुष्य वर्ण-च्युत होता है। यह समझना आवश्यक है कि शूद्र ज्ञान संचय और राष्ट्र-रक्षा का पूरा अधिकारी हैं। वर्ण-धर्म का अर्थ सेवा-धर्म है और वर्ण ही सच्चा धर्म है। जो कुछ सेवा भाव से हो।

वैष्णव धर्म का मूल दया है। अन्त्यजों के प्रति हमारा जो वरताव है उसमें तो मैं दया की एक बूंद नहीं देखता। हमने तो कई बार अन्त्यजों को गाली भी दी है। भूले चूके यदि अन्त्यज अपने डब्बे में आ बैठता है तो उस पर गालियों की बौछार होने लगती है। उन्हें हम पशुओं की तरह जूठा अन्न देते हैं यदि उन्हें बुखार चढ़े या सांप काट खाय तो हमारे वैद्य डाक्टर उनके इलाज के लिए नहीं जाते। यदि कोई जाने भी लगे तो हम से जहां तक हो सकता है हम उसे रोकते हैं। अन्त्यज के रहने के लिये खराब से खराब मकान दिये जाते हैं। न उनके लिए रोशनी की सुविधा होती है न रास्तों की। उनके लिए कुंए नहीं होते और सार्वजनिक कुवें धर्मशालाओं और विद्यालयों का वे उपयोग नहीं कर सकते। परन्तु ऐसे मामूली और व्यवहारिक विचार से अन्त्यज जाति को पैदा करना और फिर उसे गाँव के एक कोने में निकाल देना, जानवर से भी त्याज्य मानना, चाहे मरें या जिएं इसका ख्याल न मानना, उनके पतले में जूठा या सड़ा गला न फेंकना, उनके बच्चों को न पढ़ाना, दवा दरपन न करना, मन्दिरों में बैठने न देना, कुवों पर पानी न भरने देना, यह धर्म नहीं अधर्म है। इसे हिन्दू-धर्म का अंग मानकर हिन्दू धर्म को जड़ से उखाड़ने की तैयारी कर रहे हैं।

यह आत्म घातक है। यह असहिष्णुता की पराकाष्ठा है इसे दूर करने के प्रयत्न में मर मिटना हर एक हिन्दू का कर्तव्य है।

धर्माध्यक्ष धर्म के सच्चे रक्षक होने चाहिये थें पर वे धर्म के नाशक सिद्ध हुए हैं। उनका पांडित्य अगर एक वीभत्स वहम के घोर अन्याय के समर्थन में लगाया जाय तो वह खाक में मिलता है।

★

संसार में केवल सत्य ही जीता है असत्य नहीं। 'सत्यमेव जयते नानृतं' मेरा स्वदेश का अभिमान, धर्माभिमान से मर्यादित है। अतः देश हित यदि धर्म हित का विरोधी हो तो मै उसे त्याग देने को तैयार हूँगा। अन्त्यज को अछूत समझना मैं धर्म मानता हूँ। और धर्म को छोड़कर देशहित करने की मेरी कञ्चित इच्छा नहीं है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि जब देश में सच्ची धार्मिक जागृत होगी तभी स्वराज्य मिलेगा। ऐसी जागृति का समय आ रहा है ऐसा मालूम होता है।

★

अस्पृश्यता निन्दा के योग्य है। धर्म के नाम पर उसका पाप हिन्दू धर्म पर दो हज़ार वर्षों से चढ़ा है और चढ़ता जा रहा है इस प्रथा को मैं पाखंड कहता हूँ और इस पाखंड से हमें निकलना पड़ेगा। इसका प्रायश्चित हमें करना ही होगा।

ईश्वरीय अनुग्रह और प्रकाश का दान किसी एक कौम या जाति के लिए नहीं है। वह बिना किसी भेद भाव उन बंदो को प्राप्त है जो कि उसके दरबार में हाजिर रहते हैं। उस कौम और उस मजहब का नामोंनिशां दुनियाँ के सतह से मिटे बिना न रहेगा जो कि अपना दारोमदार बेइंसाफी झूठ और पशुबल पर रखती है। एक ईश्वर ही महान है। हम उसके बंदे उसकी चरणरज हैं। आओ, हम सब मिलकर नम्र बने और ईश्वर के छोटे से छोटे बंदे को भी इस दुनियाँ में रहने के हक को तसलीम करें। श्रीकृष्ण ने फटे पुराने चिथड़े पहने हुए सुदामा का वह स्वागत किया जो किसी का नहीं किया था।

★

सनातन धर्म की रक्षा शास्त्रों में छपे हुए श्लोकों को सच्चे बताने से न होगी प्रत्युत उन शास्त्रों में जो महान् सिद्धान्त है उनके अनुसार आचरण करने से होगी। जिन जिन धर्म प्रचारकों के साथ मुझे बात चीत करने का अवसर मिला है उन्होंने यह बात मंजूर की है। कितने ही विद्वान गिने जाने और लोगों में पूजे जाने वाले धर्म प्रचारकों से पूछने पर मालूम हुआ है कि भंगी आदि के व्यवहार के समर्थन की पुरानी प्रथा चली आई है इसके अतिरिक्त कुछ भी नहीं है।

★

कोई प्राणी जन्म से अस्पृश्य है और उसे अस्पृश्य अवस्था में ही मरना पड़ेगा, ऐसा हिन्दू धर्म में नहीं है यह मेरा विश्वास है। ऐसे अधर्म को धर्म का नाम देना अधर्म करने के समान है। जो अस्पृश्यता आज व्यवहार्य नहीं है उसे त्याग करने का मैं हिन्दुओं से आग्रह कर रहा हूँ।

★

वे धर्माध्यक्ष जो आज ब्राह्मण बनें और धर्म का भ्रष्टाचार करते हैं, हिन्दू धर्म के पालक नहीं हैं। जानबूझ कर या अनजान में वे उसी पेड़ की जड़ में कुल्हाड़ी मार रहे हैं जिस पर वे बैठे हैं और जब वे कहते हैं कि शास्त्रों में अस्पृश्यता की आज्ञा है और इतनी दूरी पर अन्त्यज के आ जाने से सवर्ण हिन्दू अपवित्र हो जाते हैं तो मुझे यह कहने में कोई उज्र नहीं होता कि वे अपने धर्म को झूठा बना रहे हैं।

★

वे हिन्दू धर्म का उलटा अर्थ बता रहे हैं। शायद अब आप हिन्दू समझ सकेंगे कि हम आप को क्यों कमर कस कर खड़ा कर रहे हैं। आप को एक प्राचीन राज्य की प्रजा होकर सुधार में आगे रहने का गर्व है। जहाँ तक मैं वातावरण को समझ सकूँगा अगर आप सुधार को सच्चे दिल से जी जान लगा कर करें तो हर घड़ी ही मंगल मय है।

★

मैंने अन्त्यजों में बहुतों को सरलचित्त, प्रामाणिक ज्ञानी एवं ईश्वर-भक्त पाया है। उन्हें मैं सब तरह से वन्दनीय मानता हूँ। उपाधि रहित हमारे बेपढ़े जो डाक्टर हैं उनकी बेइज़्ज़ती करके हम पाप करते हैं और ऐसा करके वैष्णव धर्म पर कलंक लगाते हैं।

★

गीता में भी यही कहा गया है कि समदर्शी के लिये ब्राह्मण, श्वान, अन्त्यज सब एक से हैं। नरसिंह मेहता यही गाते थे कि वैष्णवों में समदृष्टि होनी चाहिये। पर अन्त्यजों को सर्वथा अस्पृश्य मानते हुए समदर्शी नहीं रहा जा सकता। कम से कम वैष्णव तो ऐसा दावा कर ही नहीं सकते।

★

मैं तो मानता हूँ कि हमने जैसा बोया है वैसा ही काटना है। अन्त्यजों का तिरस्कार कर हमारे सारे अंग संसार के तिरस्कार के प्रधान पात्र बने हुये हैं। क्या जुलाहे अछूत हैं जिन का बुना हुआ कपड़ा हम अपने पाक शरीर पर पहनते हैं और जिससे मुँह पोछते हैं ?

★

अस्पृश्यता को बुद्धि ग्रहण नहीं कर सकती, वह सत्य का, अहिंसा का विरोधी धर्म है इसलिए धर्म ही नहीं। हम उच्च और दूसरे नीच हैं यह विचार ही नीच हैं। जिस ब्राह्मण में शूद्र का सेवा का गुण नहीं वह ब्राह्मण नहीं। ब्राह्मण तो वही है जिसमें क्षत्रिय के वैश्य और शूद्र के सब गुण हों और इनके सिवा शूद्र कोई ज्ञान से सर्वथा रहित अथवा विमुख नहीं होते। उनमें सेवा प्रधान है वर्णाश्रम धर्म में ऊँच नीच की भावना के लिए अवकाश ही नहीं। वैष्णव सम्प्रदाय में तो भंगी चांडाल आदि तर गये हैं। यह धर्म तो संसार मात्र को विष्णुसमान जानता है।

★

जब हम शौचादि क्रिया करते हैं, तो हम सभी नित्य उतने समय के लिए अस्पृश्य हो जाते हैं। पर हमारी वह अस्पृश्यता स्नानादि करने से दूर हो जाती है। हमारे कुत्सित विचार भी हमें अस्पृश्य बना देते हैं, किन्तु राम, वासुदेव, नारायण अथवा शिव का स्मरण करके और भगवान की अमोघ शरण का आश्रय लेकर प्रायश्चित और आत्मशुद्धि के द्वारा हमारी वह कुविचार जन्य अस्पृश्यता भी दूर हो जाती है। पर यहां की तो बात ही दूसरी है। कुछ सनातनियों का तो यह दावा है, कि हरिजनों की अस्पृश्यता तो असाध्य है और वह वंश-परंपरागत है, और वह सृष्टि के अन्त तक ऐसी ही बनी रहेगी।

★

भूकम्प-पीड़ित स्थानों में मैंने पूछा था कि इस आफत में आखिर तुमने क्या सीखा है? सरकार और कांग्रेस, हिन्दू और मुसलमान, स्पृश्य और अस्पृश्य आदि के बीच भेदभाव करने का यह समय नहीं। हिम्मत हारने से काम न चलेगा। यह महान् संकट तुम्हें जो सबक सिखा रहा है उस पर चलकर यह ऊँच-नीच का भाव अपने दिल से निकाल बाहर कर दो, संकट-निवारण-फण्ड से सहायता लो तो बदले में कुछ मेहनत भी करो।

★

दुःख की बात तो यह है कि हमारे वे सनातनी भाई ऐसे अमिट अस्पृश्यों की संख्या लाखों की बताते हैं। उनकी इस संख्या का प्रमाण किसी शास्त्र में तो है नहीं। वह तो मर्दुमशुमारी की रिपोर्टों में है—और वे रिपोर्टें भी कैसी, जिसमें हर दसवें साल कुछ हेर-फेर होता ही रहता है और जिन्हे ऐसे शुमारकुनिन्दा तैयार करते हैं, जिनको हिन्दू शास्त्रों का कुछ भी

ज्ञान नहीं होता और अनेक जगह के शुमार कुनिन्दा तो हिन्दू भी नहीं होते। असल में तो यह अस्पृश्यता एक ऐसा अन्ध विश्वास है, कि जिसके विरुद्ध प्रत्येक हिन्दुत्व-प्रेमी को विद्रोह की आवाज उठानी चाहिये।

विद्या विनय सम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि।
शुनि चैव श्वपाके च पंडिताः समदर्शिनः॥

ब्राह्मण और भंगी के प्रति एक समान बर्ताव कीजिए। जन्म से कोई मनुष्य अपवित्र नहीं हो सकता। अपवित्रता आपके और हमारे दिलों के भीतर मौजूद है। हमारे बुरे विचार ही अपवित्र एवं अस्पृश्य हैं। पवित्र तो केवल वही है, जो ईश्वर से डरकर चलता है और उसकी सृष्टि की सेवा करता है।

अस्पृश्यता रूपी पाप का यदि हम सच्चा प्रायश्चित करना चाहते हैं, तो हमें अपने इन आध्यात्म-भंडार मंदिरों में हरिजनों को अवश्य उचित भाग देना चाहिए। मंदिरों का खोल देना हरिजनों के लिये कितनी बड़ी बात है यह मैं जानता हूँ।

अपने धर्म के दोषों को निकालने के प्रयत्न को अन्य धर्मों की बात मान कर उन दोषों पर ही अड़े रहना धर्मान्धता है। इससे धर्म की अवनति ही होती है।

जिन श्लोकों को इसके समर्थन में पेश किया जाता है वे या क्षेपक हैं अथवा उनका अर्थ ठीक नहीं कहा जा सकता है। वैष्णवों ने अस्पृश्यता का धर्म रूप में कभी वर्णन नहीं किया। फिर जैसे जैसे दिन बीतते जाते हैं अस्पृश्यता का भी नाश हो जाता है।

रेलों सरकारी स्कूलों तीर्थस्थानों और अदालतों में इसकी गुंजाइश नहीं है और मिलों तथा दूसरे बड़े बड़े कारखानों में अन्त्यजों से कोई परहेज नहीं रखा जाता। इस प्रकार पाप मानते हुए भी वैष्णव लोग उनका जो स्पर्श करते हैं मैं चाहता हूँ कि वे इसे विचार कर और पुण्य मान कर करें।

अपनी धार्मिक जिम्मेदारी को पूरी तरह समझ कर ही मैं इस आन्दोलन में भाग ले रहा हूँ। कालान्तर में जिस प्रकार नर्मदाशंकर के विचार बदल गये थे एक समालोचक ने भी मेरा

भविष्य वैसाही बताया है। अगर वैसा समय आवे तो यही समझिएगा कि मैंने हिन्दूधर्म को छोड़ दिया। इस कलंक छुड़ाते हुए मेरी मौत भी हो जाय तो भी मैं समझता हूं कि उसमें कोई खास बात नहीं। जिस धर्म में नरसिंह मेहता सरीखे लोग हुए है उसमें अस्पृश्यता का कोई ठिकाना नहीं हो सकता।

अस्पृश्यता को पाप मानने को पाश्चात्य विचार बतलाना पुण्य को पाप मानने की चेष्टा के समान है। अखो भगत ने कहीं पाश्चात्य शिक्षा नहीं पाई थी पर उसने ही पद गाया है:—

"आभड़ छेद अद करु अंग"
भादेड़ होठ जय परुं में गंग

सनातनी भाई शायद यह मानते हों कि मैं हिन्दू-संसार के दिल पर आघात पहुँचाना चाहता हूं। मैं खुद अपने को सनातनी मानता हूं। मैं जानता हूं कि मेरा ऐसा दावा भाई बहन बहुत कम करते होंगे। पर मेरा यह दावा है और रहेगा। मैं तो कई बार कह चुका हूँ आज नहीं तो मेरी मृत्यु के बाद समाज जरूर इस को कबूल करेगा कि गांधी सनातनी हिन्दू था। सनातनी के माने हैं प्राचीन। मेरे भाव प्राचीन हैं अर्थात् ये भाव मुझे प्राचीन से प्राचीन ग्रंथों में दिखाई देते हैं और उन्हें मैं अपना जीवन क्रम बनाने की कोशिश कर रहा हूँ इसी कारण मानता हूँ कि मेरा सनातनी होने का दावा बिल्कुल ठीक है। बना बना कर शास्त्रों की कथा कहने वालों को मैं सनातनी नहीं कह सकता।

इस खयाल से बढ़कर कि धर्म पात्र की आधार संख्या है, और एक भी पाखंड नहीं। यदि एक भी आदमी सच्चा हिन्दू रहे तो हिन्दू धर्म का नाश नहीं हो सकता; पर यदि करोड़ों हिन्दू पाखंडी बन कर रहें तो उनसे हिन्दू धर्म सुरक्षित नहीं, उसका नाश ही निश्चित समझिये। मैंने जो कहा कि हिन्दू धर्म सुरक्षित रहेगा उसका भाव यह है कि जब उसका हम प्रायश्चित कर चुकेंगे अनेक युगों का चढ़ा हुआ ऋण अदा कर चुकेंगे, इस नादानी से छूट सकेंगे।

उपनिषद के रचयिता पाखंडी नहीं थे। उन्होंने जगत को ब्रह्ममय कहा है। अतएव हम यदि अन्त्यज के दुख से दुखी न होंगे तो अपने को जानवर से भी बदतर साबित करेंगे। हमारा धर्म पुकार पुकार कर कह रहा है कि जो जीव जानवर के अन्दर है वही हम सब लोगों के अन्दर है। पर आज हमने उस धर्म की गर्दन मरोड़ दी है। मैं तो दया भाव से, प्रेम भाव से, भ्रातृ भाव से कहिये तो भ्रातृ-

भाव से अस्पृश्यता का नाश करना चाहता हूँ। यदि ऐसा करेंगें तो हिन्दू धर्म की रक्षा ही नहीं बल्कि शोभा बढ़ जायगी।

★

धर्म का अनुयायी सनातन धर्म को चाहने वाला मैं किसी भी आदमी के दिल को चोट पहुँचाना नहीं चाहता। मैं तो सिर्फ इतना ही चाहता हूँ कि आप अन्त्यजों को स्पर्श करें क्योंकि अन्त्यज तो मनुष्य है और चाहता हूँ कि आप अन्त्यजों के आदमी बने। आप उनकी सेवा के लायक हैं। माता जो सेवा बालक की करती है वही सेवा वे समाज की करते हैं। उनको अछूत मानना उनका तिरस्कार करना मानों अपना मनुष्यत्व गवांना है। हिन्दुस्तान आज संसार में अछूत बन गया है। इसका कारण यह है कि वह अनेक कोटि अर्थात् असंख्य लोगों को अस्पृश्य मानता चला आया है।

★

सनातनी तो वेही हैं जिनके रगों रेशों में हिन्दू धर्म व्याप्त हो। इस हिन्दू-धर्म का वर्णन शंकर भगवान ने एकही वाक्य में कर दिया है—सत्य से बढ़ कर दूसरा धर्म नहीं या 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या' और दूसरे ने कहा कि हिन्दू-धर्म का अर्थ है 'अहिंसा'। इन में से चांहे आप जिसे ले लीजिये। उसमें आप को हिन्दू-धर्म का रहस्य मिल जायगा।

★

धर्म का नाश उसके भीतर कुछ गंदगी पैदा होने से ही हो सकता है, अस्पृश्यता हिन्दू-धर्म में एक ऐसी ही गन्दगी है। उसका नाश न हुआ तो हिन्दू-धर्म का नाश निश्चित है। अस्पृश्यता महा असत्य है, उसका निवारण स्पर्श से ही है। अस्पृश्यता हमारे दिल में है। यह आदमी अस्पृश्य जाति का है इसलिये में स्पर्श नहीं करूँगा ऐसा मानना घोर पाप है। इसमें घृणा भरी है, अहंकार है, उच्च-नीच मात्र है। यह सब अधर्म है। मुझे ज्ञात है कि असत्य का समर्थन सत्य से नहीं हो सकता, घृणा का समर्थन प्रेम से नहीं हो सकता है और अहंकार का निरहंकार से नहीं हो सकता है। यही कारण है कि आज सनातनी अखबारों में घृणा, अहंकार असत्य देख रहा हूँ। मुझसे सनातनी पूछेंगे —'क्या ऐसा कहने से तुम निजी असत्य, घृणा, अहंकार का दर्शन नहीं कराते हो? हो सकता है, में तो इतनी प्रतिज्ञा करता हूं कि मुझे ऐसा ज्ञान नहीं है। मुझे ज्ञान होगा, तब उसी समय उसका त्याग कर दूँगा। अपना दोष देखने के लिये में टीकाकारों से आदर से मिलता हूं और दोष को सुनता हूँ। वे जो लिखते हैं उसको

एक हद तक पढ़ लेता हूँ। जितना मैंने प्रयत्न किया उतना ही ज्यादा मैंने असत्यादि दोषों का दर्शन उन टीकाकारों में किया।

★

अछूतपन जैसा आज हम मानते हैं वह न पूर्व कर्म का फल है, न ईश्वरकृत है। आधुनिक अछूतपन मनुष्य-कृत है, सवर्ण हिन्दू-कृत है। कर्म का फल सब भोगते हैं, लेकिन ऐसा कह कर हमको और किसी को दोषी बताने का कोई अधिकार नहीं है। कर्म की गति गहन है। किस कर्म का क्या फल है, वह कोई जानता नहीं है। कुछ-न-कुछ हर दोष से हम सब भरे हुए हैं। इसलिये किसी के दोष की तुलना करने का हमें कोई अधिकार नहीं है। हमारा अधिकार और धर्म एक दूसरे को दोष-मुक्त होने में सहायता देने का है। अस्पृश्यता को कहीं स्थान ही नहीं हो सकता और क्योंकि हम चार करोड़ हिन्दुओं को अस्पृश्य मानते हैं, इस कारण उनको अवश्य विशेष और असाधारण कष्ट भोगना पड़ता है। अपने पास में पैसे होते हुये भी उन लोगों को न खाने का, न पीने का, न रहने का ठिकाना कहीं मिल सकता है, जैसा दूसरों को है। उनके लिये न मन्दिर है न धर्मशाला है न औषधिशाला है न पाठशाला है जैसे दूसरों के लिए है। उनको हमने ऐसा गिराया है जिससे वे अपने मनुष्यत्व को भी पूर्णतः भूल गये हैं। अपनी दीन स्थिति में से उठने की इच्छा तक भी उन चार करोड़ भाई-बहिनों को नहीं होती।

★

यदि माता-पिता कहें, "शराब पीओ, मुर्दार मांस खाओ, रिश्वत दो बेइमानी से नौकरी हासिल करो, व्यापार में असत्य धर्म है, नौ वर्ष की कन्या के शादी कर लो, अस्पृश्यता निवारण पाप है" तब सन्तान का क्या कर्तव्य होना चाहिये? जब माता पिता की आज्ञा स्पष्टतः अधर्म-रूप मालूम होती हो, तब उस आज्ञा का भंग ही धर्म हो जाता है।

★

अगर मनुष्यों को एक फासले पर दूर रखा जाय, उनका छूना, उनका पास आना, और उनको देखना भी भ्रष्टता समझी जाय, उन्हें दूर से बची खुची जूठन फेंक दी जाय, सार्वजनिक सड़कों और स्थानों तथा अन्य संस्थाओं में उपयोग का उनके लिए निषेध कर दिया जाय, यहाँ तक कि सार्वजनिक मंदिर भी उनके लिये बन्द रखे जायँ और फिर भी इसे तिरस्कार (घृणा) न कहा जाय, तो मैं नहीं जानता की तिरस्कार शब्द का क्या अर्थ है।

★

भंगियों को छूने में कई हिन्दू शास्त्र का अड़ंगा लगाते हैं। पर मैं कहता हूँ, कि यदि कोई शास्त्र भंगियों के स्पर्शको पाप मानता हो तो वह 'अशास्त्र' है। शास्त्र ऐसा हो ही नहीं सकता जो बुद्धि से परे हो, जो सत्य न हो। फिर शास्त्र के अर्थ तो चाहे जैसे लगाये जा सकते हैं। शास्त्र के नाम पर साधु-वेशधारी गाँजा फूँकते हैं, भाँग पीते हैं। शास्त्र के नाम पर व्यभिचार किया जाता है और कोमल बालिकायें वेश्यायें बनाई जाती हैं। इससे बढ़कर शास्त्र का अनर्थ और क्या हो सकता है?

★

'लोक-संग्रह' के लिये शरीर से श्रम-यज्ञ करना सभी वर्णों का धर्म है। इस यज्ञ से कोई नहीं बच सकता। बिना शरीर-श्रम के तो शरीर यात्रा असंभव है। जो इस श्रम-रूपी यज्ञ को नहीं करता, वह निश्चय ही चोरी करता है। यह कथन कि शरीर-श्रम केवल शूद्र का ही कर्म है धर्म के विषय में शुद्ध अज्ञान ही प्रगट करता है। परिचर्या का अर्थ शारीरिक श्रम नहीं है। जो मनुष्य अपना जूठा बर्तन धो लेता है, वह शरीर श्रम करता है, परिचर्या नहीं। मनुष्य क्या आजीविका के लिए दरवाजे पर बैठकर चौकी पहरा देता है? वह शरीर-श्रम नहीं करता किन्तु परिचर्या अवश्य करता है।

★

मेरी अल्प बुद्धि के अनुसार तो भंगी पर जो मैल चढ़ता है वह शारीरिक है और वह तुरन्त दूर हो सकता है। किन्तु जिन पर असत्य पाखंड का मैल चढ़ गया है, वह इतना सूक्ष्म है, कि दूर करना बड़ा कठिन है। किसी-को अस्पृश्य अगर गिन सकते हैं तो असत्य और पाखण्ड से भरे हुए लोगों को।

शास्त्र सचमुच ही अस्पृश्यता का समर्थन करते हैं तो मैं उसी क्षण हिंदू धर्म से अपना संबंध विच्छेद कर लूँ। मुझे हिन्दू शास्त्रों में अस्पृश्यता का कोई ऐसा आधार नहीं मिलता। लेकिन हिन्दू आज अस्पृश्यता को मानते हैं इसलिए उन्हें इस पाप से सचेत कर देना मेरा धर्म है।

यह आन्दोलन न तो मुसलिम विरोधी है और न ईसाई यहूदी विरोधी। यह तो एक पाखण्ड विरोधी आंदोलन है और इसीलिए मैं इसमें लगा हुआ हूँ।

★

दो शब्द 'हरिजन' नाम के विषय में। यह शब्द मेरा गढ़ा हुआ नहीं है, इस नाम को एक अंत्यज भाई ने ही सुझाया था। अस्पृश्यता एक घृणापूर्ण और निंदनीय चीज है लेकिन जो आज अस्पृश्य समझे जाते हैं उनके संबंध में जब कुछ कहा जायगा तो उन्हें कोई न कोई नाम तो

देना ही पड़ेगा। और निश्चय ही उन्हें ऐसे नाम से पुकारना बेहतर होगा, जो अपमान जनक या दिल दुखाने वाला न हो।

मेरा काम जो अगर संभव हुआ तो सिर्फ उन्हीं लोगों को उठाने का है जो आज बुरी तरह से पतनावस्था में पड़े हैं। मैं उन्हें इसलिए उठाना चाहता हूँ कि मुझे खुद अपना उद्धार करना है। उनकी पतनावस्था के साथ साथ मैं खुद अपने को पतित अनुभव कर रहा हूँ। मैं जानता हूँ कि अगर हिंदू अस्पृश्यता के अभिशाप से मुक्त हो गये तो आप देखेंगे कि ये तमाम नाशक भेद भाव न केवल हिन्दू हिन्दू के बीच के दूर हो जायँगे बल्कि हिन्दुओं और अहिन्दुओं के दर्म्यान के भी द्वेषजनित उच्च-नीच भाव उसी क्षण नष्ट हो जायँगे।

शुद्धि के देवता को बाहर रखकर आप पूजा किसकी कर रहे हैं ; भगवान आज मन्दिरों में नहीं इन अस्पृश्यों में हैं ।

●

मैं आपको पुकारता हूँ

मुझे आप यह कहने देंगे कि आपके लिए हाथ पर हाथ धरे यह विश्वास रखना कि अछूतपन पाप है, काफी नहीं है। जो कोई गुनाह होते देखता रहता है, वह भी उसमें हिस्सेदार है।

और कानून भी तो उसे दोषी मानता है।

ईश्वर की जो सर्वश्रेष्ट कृति मनुष्य है उसे विकृत करने का हमने प्रयत्न किया है। मनुष्य की आत्मा का सौन्दर्य तो फूल पत्तियों के असीम सौंदर्य से भी बढ़ कर है। पर ये सवर्ण हिंदू या अपने को उच्च समझने वाले हिन्दू तो आज समाज के एक भाग को दलित बनाये रखना, अपना हक मान बैठे हैं। थोड़े ही बरस बाद हमें इनके इस प्रयास की निरर्थकता स्पष्ट हो जायगी लेकिन इस मनुष्य ने तो अपने सिरजनहार के नाम पर हजारों लाखों प्राणियो को समाज से बहिष्कृत कर मनुष्यता को कुचलने का प्रयास करने में जरा भी कोर कसर नहीं रखी।

अगर हम सवर्ण कहलाने वाले हिंदू परीक्षा के इस नियत काल में हरिजनों के प्रति अपने प्राथमिक कर्त्तव्य से चूक गये, तो फिर हिन्दू धर्म का बस नाम ही शेष रह जायगा। इतिहास हमें बताता है, कि संसार की अनेक श्रेष्ठ संस्कृतियाँ, उनके प्रतिनिधियों की कमजोरी के कारण अर्थात् उनके पापों के परिणाम से नष्ट हो गयीं। इसलिए आप यह मानकर निश्चिंत न बैठ जाँय कि चलो हिन्दू धर्म तो अपवाद स्वरूप है, और हिन्दू ऋषि महर्षि हमारे लिए जो बहुमूल्य बसीयत छोड़ गये हैं, वह हमारे प्राचीन हिन्दू-धर्म को, हम नालायक साबित हों तो भी काल के मुख से निकाल लेगी।

मैं यहाँ यह कहने का साहस करूँगा कि बिहार के जीवन का पुनर्निर्माण करने के लिए जो सहायता भेजी जा रही है अगर उसका सर्वोत्तम उपयोग किया जाना है तो वहाँ के कार्य-कर्त्ताओं को निश्चय ही इस बात का यथेष्ट ध्यान रखना पड़ेगा, कि अब की नई सृष्टि में घृणित आदतें और रिवाज सिर न उठा सकें। अस्पृश्यता या परोक्ष रूप से अस्पृश्यता के आधार पर खड़े हुए जाति भेद को प्रोत्साहन न दें। प्रकृति ने नाश करते समय पक्षपात से काम नहीं लिया तो क्या हम पुनर्निर्माण करते समय सवर्ण, अवर्ण, हिन्दू, मुसलिम, ईसाई, यहूदी आदि एक दूसरे के विरुद्ध पक्षपात से काम लेंगे अथवा प्रकृति से यह शिक्षा ग्रहण करेंगे, कि जिस अस्पृश्यता को आज हम मान रहे हैं उस नाम की तो संसार में कोई चीज ही नहीं है!

★

अस्पृश्यता की उत्पत्ति के विषय में शास्त्रार्थ करने की मेरी इच्छा नहीं है, मुझे ऐसे शास्त्रार्थ में न तो विश्वास है और न मैं संस्कृत के विद्वान् होने का दावा ही करता हूँ।

कितनी ही ऐसी रूढ़ियों का नाम निशान नहीं रहा। जो बात आज वे स्वेच्छा से और शिष्टता पूर्वक करने को तैयार नहीं हैं कल उसी को उन्हें काल भगवान् की प्रेरणा से मजबूरन करना पड़ेगा।

यह अस्पृश्यता तो हिंदू धर्म रूपी शुद्ध दुग्ध में विष के समान है। यह धीरे-धीरे दूर करने की चीज़ नहीं है। इस विष को तो तुरंत दूध में से निकाल देना चाहिए नहीं तो वह दूध ही फेंक देना चाहिए।

हिन्दू धर्म में अगर अस्पृश्यता बनी रही तो २२ करोड़ हिन्दुओं का नाश अर्थात् हिंदुस्तान का नाश निश्चित है।

वर्ण-व्यवस्था एक सनातन सिद्ध व्यवस्था है। प्रकृति के ऐसे बहुत से नियम हैं जिनका हमें पता नहीं पर इसका यह मतलब नहीं कि उनका अस्तित्व ही नहीं है या हमारे जीवन में उनका उपयोग नहीं होता। कई युग बीत गये जब हमारे पूर्वजों ने वर्ण व्यवस्था का अनुसंधान किया था। मैंने इस प्राकृतिक नियम को जैसा समझा और उसका जो अर्थ किया है उससे तो यह नियम सर्वथा उपयोगी ही प्रतीत हुआ है। परन्तु प्रकृति के अनेक नियमों एवं व्यवस्थाओं की तरह यह वर्ण व्यवस्था भी विकृत हो गयी है और इसी से आज हमें वह भयावनी सी दिखायी देती है। मनुष्य ने--हिन्दू नामधारी मनुष्य--ने उसका रूप बिगाड़ दिया है, और उसमें छूत छात का काला रंग पोत कर उसे और भी कुरूप कर दिया है। वर्ण-धर्म तो एक आर्थिक नियम है। मेरा यह पक्का विश्वास है कि अगर सारी दुनिया इस आर्थिक नियम से चलने लगे तो यह तमाम संघर्ष जो आज हम अपने चारों तरफ देख रहे हैं फौरन ही दूर हो जाय। वर्ण-व्यवस्था तो एक पारस्परिक प्रेम की व्यवस्था है न कि द्वेष की।

मैं इसे अक्षरशः मानता हूँ कि अस्पृश्यता ने न केवल हिन्दू जाति को नष्ट भ्रष्ट कर दिया है-बल्कि भारत की अन्य जातियों पर भी उसका बुरा असर पड़ा है। एक जाति दूसरी से ऊँची है यह कल्पना उस जहर के समान है जो धीरे-धीरे हमारे शरीर में पैठ कर एक दिन हमें निष्प्राण करके ही छोड़ती है।

यह आंदोलन सवर्ण हिन्दुओं के लिए विशुद्ध प्रायश्चित का आंदोलन है। हरिजनों का जो ऋणी सवर्ण के सिर पर चढ़ा हुआ है, उन्हें वह साफ साफ कबूल कर लेना चाहिए और उस

सवर्णों के ऋण की उन्हें पाई पाई चुका देना चाहिए। ऐसा पूरा पूरा ऋण परिशोध तो हमारे सम्पूर्ण हृदय परिवर्त्तन से ही हो सकता है। राज्य की सहायता तो सिर्फ इतनी ही मिल सकती है कि अस्पृश्यता को उसने जो कानूनी स्वीकृति दे रखी है उसे रद कर दे।

★

अगर आप एक ऐसे व्यक्ति के शब्दों में विश्वास करने को तैयार हैं जो सदा सत्य की शोध में ही व्याकुल रहता है, तो आप मेरी इस बात का विश्वास कर लें, कि मैं अपनी जाग्रतावस्था के प्रत्येक क्षण में ही नहीं, बल्कि सुषुप्तावस्था में भी परमात्मा से यही प्रार्थना करता हूँ कि वह मेरी वाणी में वह वेधक शक्ति भर दे, जिससे मैं हिन्दुओं के हृदय का स्पर्श कर सकूँ। हृदय स्पर्श या हृदय जागृति के द्वारा ही अस्पृश्यता का नाश और उसके परिणाम स्वरूप हिन्दू समाज तथा हिन्दू धर्म की रक्षा संभव है।

★

आप का और मेरा कर्त्तव्य हरिजनों को सिर्फ बंधु बान्धवों की तरह मान लेने में ही समाप्त नहीं हो जाता। यह तो हमारे असली लक्ष्य का आरम्भ मात्र है। इस लक्ष्य की प्राप्ति तो तब होगी जब इस अस्पृश्यता राक्षसी से हम सर्वथा अपना पिंड छुड़ा लेंगे। हमें उच्च नीच का भाव बिल्कुल ही भुला देना चाहिए। भूल कर भी यह भाव दिल में न लाना चाहिए कि इस पृथ्वी पर एक मनुष्य ऊँचा है और दूसरा नीचा जब कि हम सब एक ही सिरजनहार की संतान हैं।

भले हमारा कोई भी धर्म या मजहब हो, कोई भी रूप रंग हो, हम अपने करतार की नजर में तो एक समान ही हैं। क्या यह बात आप की समझ में नहीं आ रही है कि जिस दिन हम इस घृणित उच्च नीच भाव को अपने हृदय से निकाल देंगे उस दिन दुनिया में हम हिन्दू-हिन्दू ही नहीं बल्कि हिन्दू-मुसलमान-ईसाई, पारसी यहूदी आदि सभी सुख और शांति से रहने लगेंगे।

★

मुझे सलाह दी गयी है कि मैं इस आन्दोलन को हिन्दू धर्म के नाम पर न चलाऊँ। मुझे बड़ा दुख है कि मैं आपकी इस सलाह पर सही नहीं कर सकता। यह कहना या खयाल करना गलत है कि यह आन्दोलन हिन्दू धर्म को या किसी चीज को मजबूत बनाने के लिए किया जा रहा है। अगर कोई पाप करके मैं उसका प्रायश्चित्त करना चाहता हूँ तो यह प्रायश्चित्त मैं अपने को मजबूत बनाने के लिए नहीं बल्कि अपनी आत्मा को शुद्ध बनाने के लिए करता हूँ। इसलिए इस आन्दोलन को तो हिंदू धर्म का एक सुधार आन्दोलन या शुद्धि आंदोलन ही कह सकता हूँ।

★

एक सवर्ण हिन्दू के रूप में मेरे न्याय तथा सत्य को यह देखकर ठेस पहुँचती है कि कुछ ऐसे भी हिन्दू हैं जो अवर्ण कहे जाते हैं। यह मेरे लिए एक घृणित विचार है कि जिस धर्म में मेरा जन्म और पालन पोषण हुआ हो उसमें एक भी मानव प्राणी ऐसा हो जो मुझसे नीच समझा जाय। इसीलिए मैं अपनी इच्छा से अछूत बन गया हूँ।

★

हिन्दू लोग जब तक भङ्गी-चमारों को अपने सगे भाई की तरह न मानेंगे तब तक मैं यह कहने की धृष्टता करता हूँ, कि वे हिन्दू ही नहीं है। और यह बात मैं अपने को कट्टर हिन्दू समझ कर कह रहा हूँ। जिस दिन हिन्दू, भङ्गी-चमारों से प्रेम के साथ गले मिलेंगे उस दिन आकाश से सुमन वृष्टि होगी और उसी दिन सच्ची गौ रक्षा होगी। मनुष्य का तिरस्कार और दया ये दो बातें साथ रहती ही नहीं। भङ्गी-चमारों के दूषणों को हम प्रेम के बल पर जीत सकते हैं। अध्यापक ध्रुव के शब्द मेरे कानों में हमेशा गूँजते रहते हैं। हमारे हृदय में जो भङ्गी-चमार भरे हुए हैं वे हमारे शत्रु हैं और वे अस्पृश्य हैं। जिन देह-धारियों को अस्पृश्य मानने का पाप हम कमा रहे हैं वे तो हमारे प्रिय जन हैं। उनके स्पर्श से उनकी सेवा से तो हमें स्वर्ग प्राप्त होगा। जब कोई वैष्णव किसी भङ्गी-चमार के साँप के काटे जहर को चूस कर बिना स्नान किए हुए अपनी कोठी में जायेगा तो वह कोठी पवित्र मानी जायेगी। जब तक छूआछूत-रूपी अश्वत्थ को हम जड़ मूल से न उखाड़ डालेंगे या अध्यापक ध्रुव की तरह अस्पृश्यता का सच्चा अर्थ न करेंगे तब तक सुलह का खयाल तक न करना चाहिए।

★

अन्त्यजों के प्रति सामान्य वर्ताव में केवल द्वेष ही भरा है, वे पढ़ लिख लेगें तो भङ्गीपन करेंगे यह कल्पना ही मुझे तो अनुचित प्रतीत होती है। किन्तु ऐसी कल्पना के कारण भी हम ही हैं। भङ्गी के धंधे को हम नीच मानते हैं किन्तु सच पूछिये तो यह शौच का कार्य होने के कारण पवित्र है माँ बच्चे का मैला उठाती है इसलिए वह पवित्र मानी गई है। रोगी की सेवा करने वाली बहिन अत्यन्त दुर्गन्ध वाली वस्तुएँ उठाती है उसका हम सम्मान करते हैं। तब जो सदैव हमारे पाखाने साफ कर हमें नीरोगी रहने में सहायता करते हैं उसकी हम कैसे पूजा न करें? उन्हें नीचा बना कर हम स्वयं नीच बने हैं। किसी को कूएँ में डालने वाले स्वयं भी कूएँ में गिरते हैं इसलिये हमें भङ्गी इत्यादि जातियों को नीच समझने का अधिकार ही नहीं है।

★

भोजा भगत मोची थे फिर भी हम उनके भजन आदर पूर्वक गाते हैं और उनकी पूजा करते हैं।
रामायण का कौन सा पढ़ने वाला निषाद की राम भक्ति देखकर उसकी पूजा नहीं करता है, फिर भङ्गी
इत्यादि यदि अपना धंधा छोड़ें तो हमें उनका विरोध करने अथवा उनसे घबराने का कोई कारण नहीं।

★

यह सब प्रेम के चिन्ह हैं। प्रेम अगणित सूर्यों से मिलकर बना है। एक छोटा सा सूर्य्य जब
छिपा नहीं रहता तब प्रेम क्यों छिपा रहने लगा? किसी माता को कहीं यह कहना पड़ता है कि मै
अपने बच्चे को चाहती हूँ? जिस बच्चे को बोलना नहीं आता वह माता की आँख के सामने देखता
है। जब आँख में आँख मिल जाती है तब हम देखते हैं कि वे किसी अलौकिक चीज को
देख रहो हैं।

★

अछूतों के साथ जो पापाचार हम लोग कर रहे हैं क्या उसके लिए हमें उचित दंड
नहीं मिल रहा है? क्या हम लोगों ने जैसा बोया है वैसा ही नहीं काट रहे हैं? क्या हम लोगों
ने अपने ही बन्धु-बान्धवों पर डायर और ओडायर का सा अत्याचार नहीं किया है? जिस तरह
हम लोगों ने परिया आदि जातियों को अपने से अलग कर रखा है उसी तरह ब्रिटिश उपनिवेशों
में हम लोग भी बहिष्कृत हैं। हम लोग उन्हें अपने कुएँ से पानी नहीं लेने देते। हम लोग उन्हें
घोरतम नीच समझते हैं। हम उनकी परछाईं तक बचाते हैं। जिस तरह हम लोग अंग्रेजों को
अपवाद देते हैं उसी तरह परिया भी हमें अपवाद देंगे।

★

अन्य वर्ण वाले (वर्णेतर) को भी अस्पृश्य मानना दयाधर्म नहीं वरन् कठोरता
है। रक्तपित्त के रोगी को छूने से आत्मा भ्रष्ट नहीं होती, प्रत्युत यदि स्पर्श सेवा-भाव
से किया जाय तब तो आत्मा की उन्नति होती है। अंत्यजों में भंगी की सेवा करना
धर्म्म है। दया इस बात का तक़ाज़ा करती है कि दर्द से पीड़ित भंगी की सार संभार तत्काल की
जाय। भंगी ने मैला उठाया हो तो उसे स्नान करना चाहिए। सफाई तथा शुद्धता के लिए यह आव-
श्यक है। पर न नहाना अधोगति या रसातल को पहुँचाने वाला नहीं। हाँ जरूरत के समय भंगी
का स्पर्श न करना पाप है और यह मानना कि उसे छूने से पाप हो जाता है, अज्ञानता है।

★

अछूतों पर जितना अत्याचार मद्रास प्रान्त में होता है उतना अन्यत्र कहीं भी नहीं
होता। यदि ब्राह्मणों पर उनकी परछाईं भी पड़ जाय तो वे अपने को अपवित्र समझते हैं।
अछूत जातियाँ उन सड़कों पर से नहीं चल सकतीं जिनपर से ब्राह्मण लोग चलते हैं। अब्राह्मण
भी उनके साथ अच्छा व्यवहार नहीं करते, इस तरह से अछूत जातियाँ—जिन्हें पञ्चम कहते

हैं-इन दोनों ब्राह्मण और अब्राह्मण—वर्ग के बीच में पड़कर बुरी तरह पीसी जा रही हैं। आश्चर्य तो यह है कि यहाँ सभी की धार्मिकता प्रसिद्ध है और वहां के मन्दिरों की तो चर्चा ही नहीं करनी चाहिए। यहाँ के निवासी बड़ी-बड़ी चोटियाँ रखें, लम्बा तिलक लगावें, खुले बदन इस तरह प्रतीत हों मानो प्राचीन ऋषिगण सशरीर उतर आये हों, पर इन लोगों की सारी धार्मिकता इन्हीं बाहरी दिखावटों तक ही बस है।

★

सारे ब्रिटिश साम्राज्य में हमारी गणना इस घृणा के साथ इसलिए की जाती है कि हम लोगों ने स्वयं अपने घरों में उन हजारों अपने भाइयों को कैदियों की तरह अलग कर रखा है। असहयोग हृदय में परिवर्तन लाने के लिए एक शस्त्र है पर यह परिवर्तन केवल अंग्रेजों के चित्त में परिवर्तन हो जाने से नहीं चल सकता बल्कि हमें अपने हृदय में परिवर्तन करना चाहिए। वास्तव में सच बात तो यह है कि हमें सबसे पहले अपने दिलों में परिवर्तन कर लेना चाहिए और तब अंग्रेजों से परिवर्तन के लिए कहें।

★

इस तरह से कांग्रेस में काम करनेवालों का यह धर्म है कि वे इन अछूत भाइयों की सहायता करें और हिन्दू तथा अहिन्दू से इस बात की चेष्टा करें कि किसी भी हिन्दू धर्म के अनुसार चाहे वह गीता विहित हो, वेद विहित हो, शंकर सम्प्रदाय हो या रामानुज सम्प्रदाय हो, किसी में भी किसी के साथ चाहे वह कितना भी गिरा क्यों न हो—इस तरह का व्यवहार विहित नहीं है। कांग्रेसी कट्टर हिन्दुओं को भी विनम्र भाव से इस तरह समझावें कि अछूतों के प्रति इस तरह की जड़ता अहिंसा के भाव के प्रतिकूल है।

★

क्या हम हिन्दुओं को यह उचित नहीं है कि अंग्रेजों से पहले हमें अपने हाथ के खून के दाग मिटा देने चाहिए। यह प्रश्न बहुत ही उचित और समयोपयोगी है। यदि दासता के पाश में बँधे किसी राष्ट्र का आदमी हमें हमारी अवस्था से मुक्त किये बिना ही इन पतित जातियों का उद्धार करना चाहता है तो इसे हम सहर्ष स्वीकार करते हैं। पर यह बात एक दम से असम्भव है। एक दास सही काम करने के लिए भी स्वतन्त्र नहीं है।

★

यदि धर्म परिवर्तन से सांसारिक जीवन में भी सुख और शान्ति मिल सके तो हम बिना किसी संकोच के दूसरों से भी ऐसा ही चाहते हैं। इसी तरह हमें भी उचित है कि जो बुराई हमने की है उसके लिए पश्चाताप प्रकट करें। अपने दिल की प्रवृत्ति को बदलें और जिस शैतानी वर्ताव के साथ हमने उन्हें दबाया है, उसके लिए पश्चाताप करें। केवल चन्द स्कूल उनके लिए खोल

देने से काम नहीं चलेगा। हमें उनपर अपना बड़प्पन नहीं प्रगट करना चाहिए। हमें उन्हें अपना सगा भाई समझना चाहिए। पर यह काम चन्द अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोगों का ही न होना चाहिए बल्कि सर्वसाधारण को अपने हृदय की प्रेरणा से यह कार्य करना चाहिए।

★

वेदों का तत्व है पवित्रता, सचाई, निर्दोषिता, नम्रता, सादगी, क्षमादान, आत्म विस्मृति, देवत्व और अन्य वे सब बातें जिससे नर और नारी नम्र और वीर हो सकते हैं। समाज के उन असंख्य न बोलनेवालों को कतवार की तरह समझना तो कोई बहादुरी में शामिल नहीं है। क्या ईश्वर ने इसीलिए हमें शक्ति दी है कि हम राष्ट्र के पतन के कारण हों जैसा कि हम लोगों ने अछूत जातियों को बना डाला है।

★

मेरी समझ में तो एक ब्राह्मण को तो जन्म से लेकर मरण तक ब्राह्मण समझने में बड़ा लाभ है। यदि वह अपना व्यवहार और आचार-विचार ब्राह्मणों का सा नहीं रखता तो उसकी मर्यादा आप से आप ही लुप्त हो जायगी और लोग उसकी जिस तरह प्रतिष्ठा कर रहे हैं नहीं करेंगे। अनुमान कीजिये कि एक न्यायालय ऐसा खुल गया जहां दण्ड की व्यवस्था ऊपर चढ़ाने और नीचे उतार देने की है। आप ही समझिये इसमें कितनी कठिनाई उपस्थित होने की सम्भावना है। यदि हिन्दू धर्म के अनुसार हमें विश्वास है कि हमारा पुनः जन्म होगा और अपनी क्रिया और कर्म के अनुसार हम ऊपर या नीचे की योनि में उत्पन्न होंगे तो ब्राह्मण को जो अपना कर्म-धर्म ठीक तरह से नहीं करता यह बात स्मरण रखनी चाहिये कि दूसरे जन्म में वह किसी नीच योनि में ढकेल दिया जायगा और नीच जाति का जो व्यक्ति उत्तम काम करता दिखाई देगा वह ब्राह्मण योनि में उत्पन्न होगा।

★

अछूतों के प्रश्न से भारत को घोर हानि उठानी पड़ रही है और यह मानव समाज के प्रति घोरतम अन्याय है। यह आत्म-संयम का कोई सिद्धांत या निशानी नहीं है पर इससे यह व्यक्त होता है कि लोगों के हृदय में आत्म उच्चता का प्रबल भाव उत्पन्न हो गया है और वही इस तरह के आचरण का जिम्मेदार है। इससे मानव-समाज का कोई हित नहीं हुआ है बल्कि इसने मानव-समाज के उतने अंश को नीचे दबा दिया है जो विद्या और बल-बुद्धि में हमारे समान हो सकते हैं और जीवन के अनेक अंशों में देश की बड़ी ही उत्तम सेवा कर रहे हैं।

यदि इस तरह के पापाचार रोकने के लिए कोई अस्पष्ट और अनर्गल प्रमाण उपस्थित भी कर दिये गये तो मैं उन्हें इन्कार करने के लिये तैयार हूँ।

★

छूआछूत, खानपान तथा विवाह-शादी व्यक्तिगत बातें हैं। यदि आप किसी को छूना नहीं चाहते तो इसका अभिप्राय यह हुआ कि आप उसके साथ सम्पूर्ण संसर्ग छोड़ देना चाहते हैं। इस तरह सामाजिक विकास का समस्त अवसर उसकी दृष्टि से लुप्त हो जाता है। जो छूत के काबिल हैं वे कथा कीर्तन आदि में सम्मिलित हो सकते हैं, मन्दिरों में प्रवेश कर सकते हैं और इस तरह स्वतन्त्र धार्मिक शिक्षा पा सकते हैं। मन्दिरों में परस्पर प्रेम और सेवा आदि का विन्यास होता है, इस तरह लोग आधुनिक सभ्यता का फल प्राप्त कर लेते हैं। अछूत जातियाँ इस लाभ से सदा वंचित रहती हैं। गाँवों में प्रायः वे बस्ती से अलग रहती हैं। इस तरह उनके जानमाल की रक्षा भी पूरी तरह से नहीं हो पाती। सामाजिक बटवारे के हिसाब से मानव-समाज के सबसे प्रधान कर्तव्य का भार उनके ऊपर है। पर वर्ण-व्यवस्था के अनुसार समाज के अन्दर जो सुविधायें प्राप्त है उनसे वे सदा वंचित रहती हैं। छुआछूत के प्रश्न ने पतित जातियों को हिन्दू-समाज का कतवार बना दिया है।

अछूत जातियों को मिलाए बिना स्वराज उसी प्रकार असम्भव है जिस प्रकार हिन्दू-मुसलमानों एकता के बिना। मेरी तो यह सम्मति है कि हम साम्राज्य के इसलिये गुलाम हैं कि हमने अपने मध्य गुलामों की सृष्टि की है। गुलाम के मालिक को गुलाम की अपेक्षा अधिक धक्का पहुँचता है। जबतक हम भारत की जनता के पाँचवें भाग को गुलामी में रखेंगे तब तक हम स्वराज पाने के योग्य नहीं होंगे।

रीति रस्म के कारण ही कुछ जातियों को अछूत समझने की परिपाटी चाल गई है, अछूत जातियाँ हिन्दू-समाज से पृथक हैं यह कोई बात नहीं है। संसार भाव में अग्रसर हुआ है, यद्यपि कार्य में वह बर्बर बना हुआ है। जो धर्म वास्तविक तत्वों की नींव पर नहीं खड़ा किया गया है वह कभी ठहर नहीं सकता। भूल की प्रतिष्ठा करना धर्म को उसी प्रकार नाश कर देगा जैसे रोग की परवा न करने से वह शरीर का अन्त कर देता है।

स्वराज के प्रेमी किसी भी हिन्दू को अछूत जाति का उत्थान करने के लिए उसी प्रकार निरन्तर उद्योग करना चाहिये जिस प्रकार वह हिन्दू-मुसलमानों की एकता बढ़ाने के लिए करता है। हम अछूतों के साथ अपने जैसा बर्ताव करें और उन्हें वही अधिकार दें जिसके लिए हम लड़ रहे हैं।

★

उनसे कठिन से कठिन सेवा लेकर हम उन्हें कम से कम मजदूरी देते हैं। उनके लिए तो सिरपर आसमान और पैर तले धरती है। क्या यह वैष्णव धर्म की निशानी है? इसे दयाधर्म कहा जाय अथवा क्रूरता धर्म? जिस अंग्रेजी सरकार के साथ हमने असहयोग युद्ध छेड़ रखा था वह भी इस हद तक हमारा तिरस्कार नहीं करती किन्तु हम तो अन्त्यजों के सम्बन्ध में प्रचलित अपनी डायरशाही को धर्म मानकर उसका पोषण करते हैं।

★

अस्पृश्यता का निवारण तो तुरन्त हो ही जाना चाहिए। अभी तक ऐसा नहीं हुआ इसमें दोष तो दैव को ही दिया जायगा। हिन्दुओं की नस-नस में अस्पृश्यता का पाप फैल गया है जिसे सारा जगत पाप की तरह देख रहा है और जिसके कारण हिन्दू जाति आज सारे जगत् के सामने तिरस्कृत है।

★

आपने और मैंने, अछूतों के प्रति अपने कर्तव्य से बहुत दिनों तक लापरवाही दिखाई है और इस हद तक हम और आप हिन्दू धर्म के झूठे प्रतिनिधि रहे हैं। मैं बिना किसी हिचक के आपको सलाह देता हूँ कि जो कोई अस्पृश्यता का समर्थन करने आवे, आप उसकी बात तुरंत इन्कार कर दें। युग में एक आदमी या कई आदमियों की कोई मंडली कोई काम करती है तो वह काम अधिक दिनों तक छिपा नहीं रहता। हमारी जाँच रोज ही होती रहती है और जब तक हम अस्पृश्यता को रखे हुए हैं, हममें कमी बनी हुई है। संसार के सभी धर्मों की जाँच आज हो रही है। हमी लोग शुतुरमुर्ग जैसे अपने अज्ञान में खतरे की ओर से आँखें मूँद लेते हैं। मुझे इसमें ज़रा भी शक नहीं है कि आज के इस झगड़े में या तो अस्पृश्यता का नाश हो जायगा या हिन्दू-धर्म ही गायब हो जायगा। मगर मैं जानता हूँ कि हिन्दू-धर्म नष्ट नहीं हो रहा है क्योंकि मैं देखता हूँ कि अस्पृश्यता तो एक मुर्दा है जो अपनी आखिरी साँस तो थोड़ी देर और रखने के लिए लड़ रहा है। किन्तु भंगी के कार्य से संसार का उपकार होता है और वह डाक्टर के कार्य से बहुत अधिक पवित्र और आवश्यक है। डाक्टर यदि अपना धन्धा छोड़ दे तो बीमारों को ही हानि पहुँचे किन्तु भंगी अपना कार्य छोड़ दे तो जगत का नाश ही हो जाय।

★

मैं देख रहा हूँ कि देश में से अस्पृश्यता की भावना घोड़े के वेग से भागी जा रही है। मैं रात-दिन कामना तो यह करता हूँ कि वह वायु-वेग से चली जाय।

★

यह सवाल सिर्फ हिन्दुओं से ही ताल्लुक रखता है और हिन्दू तब तक स्वराज का कोई दावा नहीं कर सकते और न उसे पा सकते हैं जब तक कि वे अपने दलित भाइयों को आजादी न दे दें। उनको दबा करके अपनी किश्ती खुद डुबा बैठे हैं। इतिहासकार हमें बताते हैं कि आर्य जाति के आक्रमण-कारियों ने हिन्दुस्तान के मूल निवासियों से अगर ज्यादा बुरा नहीं तो कम से कम बिल्कुल वैसा ही सलूक किया जैसा कि हमारे अंग्रेज आक्रमणकारी आज हमारे साथ कर रहे हैं। अगर बात सचमुच ऐसी ही है तो हमने जो एक अछूत जाति दुनियाँ में बना डाली है उसका यह ठीक प्रतिफल अपनी मौजूदा गुलामी के रूप में हमें मिला है। यह एक ईश्वरीय कोप ही हम पर हुआ है जिसके कि हम बिलकुल ही योग्य हैं। जितना ही जल्दी हम इस कलंक को अपने सिर से मिटा देंगे उतना ही अच्छा हम हिन्दुओं के लिए होगा।

मुसल्मान और सिक्ख भाइयों से अनुनय-विनय करनी चाहिये, कि वे हरिजनों को सार्वजनिक कूओं से पानी भरने की इजाजत दे दें। उन्हें विनयपूर्वक समझाने के साथ-साथ, या इस उपाय के कारगर न होने के बाद दूसरा रास्ता यह है कि हरिजनों को जितने पानी की ज़रूरत हो उतना वे खुद ही कुएँ से खींच कर उन्हें दे दिया करें। निस्संदेह अदालतों से भी सहायता ली जा सकती है। ठीक सर्वसाधारण की ही तरह सार्वजनिक कुओं, सड़कों आदि का उपयोग हरिजन भी क़ानूनन कर सकते हैं। पर यह अंतिम इलाज है, जो बहुत ही कम अवसरों पर करना चाहिये।

सवर्ण हिन्दुओं के अधिक-से-अधिक प्रायश्चित और हृदय परिवर्तन से ही उनके और हरिजनों के बीच का यह दिन-दिन बढ़ता हुआ मनमुटाव दूर हो सकता है। आदि-धर्मी खुद हिंदू तो हैं ही। उनका यह अलगाव उनपर अत्याचार करनेवाले सवर्ण हिन्दुओं के विरुद्ध विद्रोह का सूचक मात्र है। जब ये आदि-धर्मी देखेंगे, कि अस्पृश्यता अब जड़मूल से नष्ट हो गई है, तब वे पुनः हिन्दू धर्म में आ मिलेंगे।

विभिन्न अस्पृश्य जातियों में विद्यमान अस्पृश्यता सर्वांश में नहीं तो अधिकांश में उसी परिमाण में दूर होगी, जिस परिमाण में कि सवर्ण हिन्दू अस्पृश्यता का निवारण करेंगे। क्योंकि सवर्ण हिन्दुओं की देखा देखी ही तो हरिजन आपस में छुआछूत मानने लगे हैं, यह सब सवर्णों के पाप का ही फल है

हम लोग, जिनकी ईश्वर पर श्रद्धा है, निश्चय ही यह मानते और विश्वास करते हैं, कि

इस अवर्णनीय दुखदायी घटना (विहार के भूकम्प) के पीछे भी मनुष्य के कल्याण का कोई देवी उद्देश्य छिपा हुआ है। इस विपदा के पीछे भी उस परम शक्ति की कोई खास मर्जी है। भले ही आप मुझे अंध-विश्वासी कहें मगर मैं यह कहे बिना नहीं रह सकता कि भगवान ने हमारे पापों का दण्ड देने के लिए ही इस भयंकर भूकम्प को भेजा है।

मेरे लिए यह अनुमान लगा लेना कि अस्पृश्यता की ही बदौलत विहार पर संकट आया है, एक ऊँची भावना है। यह कल्पना मुझे विनम्र बनाती है, अस्पृश्यता दूर करने के लिए मुझे और भी अधिक प्रयत्नशीलता की ओर प्रेरित करती है। आत्मशुद्धि के लिए वह मुझे उत्साहित करती है। और मुझे मेरे सिरजनहार के और भी निकट ले जाती है। सम्भव है मेरा यह अनुमान गलत हो तो भी मैंने जो परिणाम गिनाये हैं उनपर उसके गलत होने का कोई असर नहीं पड़ता। बात यह है कि आलोचक, अस्पृश्यता-निवारण का काम करने वाले सुधारक भूकम्प को अस्पृश्यता के पाप का दंड माने। अगर उनका मेरे जैसा ही विश्वास है तो वे गलती नहीं कर सकते। और विहार के पुनर्निर्माण की किसी भी योजना में वे वहाँ अस्पृश्यता के विरुद्ध वातावरण तैयार करने का जतन करेंगे।

★

आपको पता होगा, कि पेड़ को नुकसान पहुँचाने वाली खराव टहनियों को माली काटकर फेंक देता है। लेकिन ऐसा मूर्ख माली तो नौकरी से अलग कर देने लायक ही समझा जायगा, जो कुछ खराव टहनियों को देखकर पूरे पेड़ की जड़ पर ही कुल्हाड़ी चला बैठता है। हमें तो उस भयंकर रोग का पता लगाना है जो धीरे-धीरे हिन्दू धर्म का क्षय कर रहा है। हमें तो अस्पृश्यता अर्थात् ऊँच-नीच की भावना से अपना पिंड छुड़ाना है। इस पाप पंक को धोकर जब हम अपना हृदय शुद्ध कर लेंगे तभी हम वास्तविक वर्ण-व्यवस्था की व्यवस्था पर अपनी राय दे सकेंगे। आज तो उस व्यवस्था को हम, खासकर अस्पृश्यता का ही एक प्रकार समझते हैं। मेरा यह विश्वास है कि अस्पृश्यता अब थोड़े दिनों की मेहमान है। उसकी जीवन शक्ति बड़ी तेजी से क्षीण होती जा रही है।

★

कहा जाता है कि विशप हिवर जब भारत के पश्चिमी तट पर आया तो आपसे आप उसके मुह से यह कड़ी निकल पड़ी Every prospect pleases man alone is vile अर्थात् यहाँ सृष्टि के सौंदर्य का तो पार नहीं है पर एक मनुष्य ही अधम है। मलाबार में प्रकृति ने मनुष्य के लिए सुन्दरताओं का भव्य-भंडार भर रखा है। यहाँ कैसी भीनी-भीनी सुरभित पवन की लहरें उठती हैं। मगर इस मनुष्य ने तो अस्पृश्यता के द्वारा सारा ही प्राकृतिक सौंदर्य विरूप कर डाला है और इस प्रकार वह स्वयं ही अधमता को प्राप्त हो गया है।

यह अस्पृश्यता निवारण का आन्दोलन कोई वैसा लोकप्रिय आन्दोलन तो है नहीं जैसे कि बड़े-बड़े राजनीतिक आन्दोलन देश में हुए और हो रहे हैं, अस्पृश्यता-निवारण का कार्य तो एक प्रचण्ड सामाजिक सुधार है। पर वह कोई सनसनी पैदा करने वाली प्रवृत्ति नहीं है। यह तो धीमे-धीमे जी-तोड़ परिश्रम से पूरा होने वाला कार्य है। ऐसी प्रवृत्ति को रोचक बनाने के लिए ऊँचे दर्जे की संपादकीय प्रतिभा चाहिये। परिश्रम करने वाले परिश्रमी संपादकों को ही आकर्षित कर सकते हैं। इसलिये हरिजन-प्रवृत्ति के साथ जिनका घनिष्ठ सम्बन्ध है उनके सामने तो यही एक मार्ग है कि वे अटूट श्रद्धा के साथ अनवरत रीति से बस कार्य किये चले जायँ, परिणाम क्या होगा, यह सब ईश्वर पर छोड़ दें।

*

अस्पृश्यता को मिटाने की दिशा में किया गया एक एक प्रयत्न भी हिन्दुत्व की शुद्धि की राह पर ठीक दिशा में धरा गया एक एक कदम है।

*

क्या भङ्गी चमारों को हृदय से तो तिरस्कार करते हुए परन्तु उनसे छूने का केवल ढोंग रच कर हम छूआछूत के पाप से मुक्त हो सकते हैं? जब तक हम अपने मन का मैल न धोकर उन्हें अपने भाई बहन न समझेंगे और उनके दुःख से दुःखी न होंगे तब तक हम आजाद ही नहीं हो सकते क्योंकि तब तक आजादी के लायक ही न होंगे। वही लोग हमारी प्रगति को रोकेंगे। बुखार के न होने का स्वांग बनाकर, शक्ति होने का विश्वास दिलाकर मनुष्य कितने कदम चल सकेगा? यदि हम भय के कारण हिन्दू मुसलमान की एकता का ढोंग बनाकर रहे होंगे तो हम आखिरी दम तक साथ नहीं रह सकते और सच्चे वक्त पर हमारे दिल का मैल ऊपर तैर आयेगा। पूरी कसौटी पर उतरे बिना स्वराज्य कैसे मिलेगा?

*

हमें किसी अछूत भाई को अनिच्छा से नहीं छूना चाहिये। उसे तो प्रेम से अपना कर आलिङ्गन करना चाहिये और उसकी सेवा करनी चाहिये और वह भी उसके प्रति अपने पिछले व्यवहार का हृदय से प्रायश्चित करते हुए, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार कि हम सरकार से उसके द्वारा हम पर किये गये अत्याचारों के लिए चाहते हैं। आवश्यक कर्तव्य का अनिच्छा पूर्वक पालन करने से परमेश्वर प्रसन्न नहीं होता। हमे तो अपने हृदय में ही पूरा परिवर्तन करना चाहिये। हमें उनके साथ पाठशालाओं में सम्मिलत होना चाहिये और सार्वजनिक स्थानों में भी उन्हें भाग लेने देना चाहिये। हमें अपने को उनका आश्रयदाता अन्नदाता नहीं समझना चाहिये। हमें उनके खिलाफ अपने धार्मिक ग्रन्थों की दुहाई न देनो चाहिए। जिन प्राचीन ग्रन्थों के रचयिता का ठीक ठीक पता न हो, तथा जिनके अर्थ पतित जातियों के मनुष्योचित स्वत्वों के खिलाफ लगाये

जा सकते हों उन सबका संशोधन कर डालना चाहिए। ऐसी प्रथाएँ भी प्रसन्नता पूर्वक उठा देनी चाहियें जो युक्ति, न्याय और मानवी हृदय के स्वाभाविक धर्म के खिलाफ हों। हमें किसी भी कुप्रथा का इतना गुलाम न बन जाना चाहिए कि आखिर जब हमें किसी दबाव के कारण अथवा अनिवार्य प्रसङ्ग के उपस्थित होने पर उसे छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़े तभी एक कृपण की तरह, अपनी बुरी कमाई का धन लाचार होकर छोड़ें फिर चाहे वह अज्ञान-पूर्वक या किसी अन्य भ्रम-मूलक विचार से ही क्यों न हो।

हम इन्हें पेट के बल रेंगाते हैं। हम इनसे जमीन पर नाक रगड़वाते हैं, लाल लाल आँखें करके हम इन्हें रेल के डब्बों में से ढकेल कर बाहर निकाल देते हैं। क्या ब्रिटिश शासन ने इससे कुछ अधिक किया है। हमलोग ओडायर और डायर पर जो अपराध लगाते हैं क्या वह अपराध दूसरे लोग और मेरे भाई हमारे ऊपर नहीं लगा सकते।

(स्वराज्य के माने हैं कि कोई हिन्दू या मुसलमान क्षण भर के लिए भी इस बात का दाव नहीं कर सकेगा कि वह किसी दुर्बल हिन्दू या मुसलमान को दबा सकता है।......अपने कमजोर भाइयों के प्रति हमने जो पापाचार किया है उसका जब तक परिमार्जन नहीं कर देते, हम लोग पशुओं से उन्नत नहीं हैं।

पश्चिम के वैज्ञानिक इस निर्णय पर पहुँचे हैं कि समाज के सेवकों की उपेक्षा करने से, उनकी देख भाल न करने से समाज की भारी आर्थिक हानि होती है, हरिजनों को भली भाँति रखने से उन्हें आरोग्य शौचादि नियमों का ज्ञान देने से समाज का भारी आर्थिक लाभ होगा। आर्थिक लाभ होने के साथ साथ धार्मिक लाभ भी होगा। धर्म और अर्थ के बीच मेल न मानना घोर अज्ञान की बात है। जो मनुष्य अर्थ को धर्म पर निर्भर रखता है उसे अर्थ लाभ होता है और धर्म लाभ तो है ही। यदि हम लोग हरिजनों को अपना लें, उन्हें हिन्दू समाज का एक अभिन्न अंग बना लें तो हिंदू जनता को ही नहीं बल्कि समस्त भारत वर्षको भारी अर्थ लाभ होगा।

जो लोग यह समझते हैं कि हरिजन सेवा का कार्य अस्पृश्यता दूर करने तक ही महदूद है वे गलती करते हैं। ऊँच नीच की जहरीली भावना जड़ मूल से निकाल देना ही सच्चा अछूतोद्धार है। इससे सारे सवाल हल हो जाते हैं। कुछ हिन्दू भाई मुसलमानों से छू जाने पर स्नान करते हैं और उनका पानी तो पी ही नहीं सकते, यह भी अस्पृश्यता ही है। मजदूर और पूँजीपती आपस में समानता का व्यवहार नहीं रखते यह भी अस्पृश्यता है। नवाब साहब के पास खूब पैसा है पर वे तो उसके ट्रस्टी हैं। रिआया को पेट भर खिला कर तब वे खाँय-ऐसी उनकी इच्छा होनी चाहिए। जहाँ यह बात न हो वहां भी कहना चाहिए अस्पृश्यता है।

हिन्दू-समाज रूपी शरीर में अस्पृश्यता एक सड़ा हुआ अंग है। उसे दूर करने का इलाज न किया गया, तो समाज का शरीर ठूँठ हो जायगा, ठूँठा समाज फिर कैसे चल सकता है, कैसे प्रगति कर सकता है ? इससे तो उसका नाश ही समझो। धर्म का अंग-भंग करके क्या हम उसे चला सकते हैं ? धर्म का तो प्रत्येक अंग उसका अविभाज्य अंग है। डाट में से एक ईंट निकाल ली जाय, तो डाट ढह जाती है। इसी प्रकार धर्म के एक अंग का उच्छेद हो गया, एक ईंट निकाल ली गई, तो धर्म की सारी इमारत भर्रा कर ढह गई समझिये। इस तरह वह टिकने की नहीं।

★

अस्पृयशता-निवारण का अर्थ तो सवर्ण-हिन्दुओं का हृदय-परिवर्तन है, अगर यह हृदय परिवर्तन मेरी प्रार्थना से ही हो गया तो फिर मुझे पैसा इकट्ठा करने की कोई ज़रूरत नहीं, और ज़रूरत ही हुई तो वह मेरे पास अनमांगे ही आ जायगा। पैसा देने से जो इनकार कर देते हैं उनके इनकारों से मुझे यह मालूम हो जाता है कि अभी कितनों का हृदय-परिवर्तन होने को है।

अस्पृश्यता हिन्दू धर्म का पाप है; उसपर लगी हुई जंग है। हरिजनों का तिरस्कार करना मनुष्यता को खो देना है।

★

अहंकार वश अपने आप को श्रेष्ठ समझने वाले हिन्दुओं का अत्याचार सहन करके भी जो हरिजन हिन्दू धर्म मानते हैं; वे, उन अपने आपको श्रेष्ठ मानकर हिन्दू-धर्म का तिरस्कार करने वाले हिन्दुओं से, कहीं अच्छे हिन्दू हैं।

★

हम लोग अस्पृश्यता-सम्बन्धी जो आचरण करते हैं, मैंने तो उसे पाप समझ कर धार्मिक दृष्टि से ही उसका त्याग करने के लिए आप से कहा है। क्यों कि धार्मिक दृष्टिसे अपने जीवन का निर्माण करने वाले लोग धर्म कोट की एक भी ईंट कमजोर नहीं होने देते।

★

इस वर्ताव में सिवा घोर अज्ञान के और तो कुछ दिखाई देता नहीं। यह उच्च-नीच का भाव दूर न हुआ तो धर्म का नाश ही समझिये। सवर्णों के वहिष्कार से लोग डरे नहीं हैं, यह एक शुभ चिन्ह मालूम होता है। जिन्होंने वहिष्कार किया है उनके ऊपर किसी भी प्रकार का क्रोध न किया जाय। साथ ही, इस वहिष्कार से डरकर कोई अपना कर्तव्य न छोड़े। वहिष्कार करने वालों में यदि कोई प्रतिष्ठित लोग हैं तो उनसे वार्तालाप भी किया जाय। संभव है, कि इस वहिष्कार का कारण कुछ और हो।

वास्तव में अस्पृश्यता आत्म-घातक है। असहिष्णुता की पराकाष्ठा है। इसे दूर करने का प्रयत्न करना और उसके लिए प्राण तक दे देना प्रत्येक हिन्दू का परम धर्म है, इस विषय में मुझे लवलेश भी सन्देह नहीं।

★

अब तक अपने को ऊँचे कहने वाले अगर अपनी मानी हुई ऊँचाई को नहीं त्यागते, अपने बेजा घमण्ड को नहीं निकाल सकते तो अपनी आजादी आ जाय तो भी हम उसको नहीं निबाह सकेंगे। मुझे आशा है कि चरखासंघ और नई तालीम का जो कार्य्य हो रहा है उससे छुआछूत को मिटाने में बड़ी मदद मिलेगी।

एक मनुष्य दूसरे मनुष्य को नीच समझे, यह तो मुझे नामर्दों की निशानी जान पड़ती है। जो श्रेष्ट होने का दावा करता है, वह अपनी आरोग्यता ही तो दिखाता है।

अन्त्यज का कोई उद्धार करता है, यह कहना पाप है। अस्पृश्यता दूर करके तो उच्च कहे जाने वाले लोग खुद अपना उद्धार करते हैं हिन्दू धर्म की सेवा करते हैं।

मारने-पीटने या सामाजिक बहिष्कार से तो उनकी वह आदत छूट नहीं जायगी। बल्कि हरिजनों के प्रति प्रेम दिखाने से, उनमें विद्या का प्रचार करने से, उनके साथ अच्छा बर्ताव रखने से और उनको भाई-बहन के समान मानने से ही उनकी वह कुटेव छूट सकेगी। इसलिए शुद्ध और पूर्ण रीति से अस्पृश्यता दूर करके ही हरिजन हरि के सच्चे जन बनाये जा सकते हैं।

अस्पृश्यता रूपी पाप को साथ लेकर स्वराज्य लेने का प्रयत्न आकाश में धूल फेंकने के समान है।

★

हरिजनों को अगर भगवान ने अस्पृश्य बनाया होता तो उसने हरिजन और मनुष्य के बीच मनुष्य और पशु का सा भेद रखा होता......जैसे नाक कान आदि हमारे हैं वैसे ही हरिजनों के भी हैं। जो प्राकृतिक आवश्यकताएँ हमारी हैं वही हरिजनों की भी हैं। उनको ईश्वर ने तो नहीं हमने अस्पृश्य बनाया है। आप कहें कि मैला उठाने कि वजह से वे अस्पृश्य हैं तो मैं आप से पूछता हूँ कि हमारी माता क्या मैला नहीं उठाती ? यह तो समझ में आना है कि

कैसी बात है ? माता को कोई उसके जन्म से अस्पृश्य थोड़े ही मान लेता है। तो फिर भंगी को जो सारे समाज की सेवा करता है अस्पृश्य कैसे मान लिया जाय ?

सवर्ण हिन्दुओं के व्यवहार की असलियत जानने के लिए आम तौर से यह जानना जरूरी है कि हरिजन-समूह का उसके संबंध में क्या खयाल है। अगर उनके प्रति हमारा आचार-व्यवहार सचमुच बदल गया है तो उन्हें क़दम-क़दम पर इसका अनुभव होने लगेगा। उनकी जिन्दगी का कोई भी हिस्सा ऐसा नहीं जिस पर हमारे अर्थात् सवर्ण हिन्दुओं के कार्य-कलाप का असर पड़े विना रह सके। दूर से दूर के गाँव तक में हम एक दूसरे पर निर्भर करते हैं, और हमारे इस पारस्परिक सम्बन्ध की नींव इतनी गहरी और मज़बूत है कि हम चाहें भी तो इस सारे राष्ट्र को अधिक-से-अधिक हानि पहुँचाये विना, इस संबध का विच्छेद नहीं कर सकते। पर आज हमारा यह अन्योन्याश्रय सम्बन्ध गुलाम और मालिक का है और यह दशा, तबतक सुधरने की नहीं, जब तक कि पूरी धार्मिक समता न हो जाय।

अन्त्यज 'हरिजन' हैं और हम सब 'दुरजन' हैं। इनके दोष तो मुझे राई के समान दीखते हैं और इनके गुण पहाड़ की तरह प्रतीत होते हैं। इनका तिरस्कार करके, इन्हें तुच्छ समझ कर हम लोग 'दुरजन' बन गये हैं। हमें 'दुरजन' से मिटकर अगर 'हरिजन' बनना है, तो इस पाप को निकाल बाहर कर देना चाहिये।

ये लोग मैले हैं, इसलिए कि हम खुद मैले हैं। ये झूठ बोलते हैं, कारण कि हम लोगों में असत्य है। इनमें जो दोष हैं, वे हमारे ही दोष हैं।

★

अगर हमने अस्पृश्यता को दूर नहीं किया तो हिन्दूधर्म का नाश हो जायगा। धर्म में द्वेश के लिए कोई जगह नहीं है। हमें अपने दिल से द्वेश-भाव निकाल देना चाहिए। जब अस्पृश्यता दूर हो जायेगी और हिन्दुओं के दिलों में द्वेश नहीं रहेगा, तब तो दूसरे धर्मों के प्रति भी हमारे हृदय में आदर भाव होगा। हमारे लिए तब यह कितनी सुन्दर बात होगी।

★

अस्पृश्यता में घृणा भाव स्पष्टरूप से है। कोई यदि कहे कि अस्पृश्यता को मैं प्रेम भाव से मानता हूँ तो मैं इस बात को कभी न मानूँगा। मुझे तो उसके अन्दर प्रेम भाव प्रतीत नहीं होता यदि प्रेम हो तो हम उन्हें जूठन नहीं खिलावेंगे। प्रेम हो तो हम उन्हें उसी तरह पूजेंगे जिस प्रकार माता-पिता को पूजते हैं। प्रेम हो तो हम उनके लिए अपने से अच्छे कूएँ अच्छे मदरसे बना देगें। उन्हें मन्दिरों में आने देगें।

अस्पृश्यता मिटाने के ये तरीके मुझे पसन्द नहीं मैं तो चाहता हूँ कि इस ओर साफ मन और सच्चे विचार से गौर किया जाय।

ऐसे नहीं
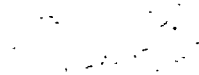
मेरे लिए तो यह सवाल सबसे अधिक नैतिक तथा धार्मिक है। इसका राजनीतिकप हलू यों महत्वपूर्ण होते हुए भी, इन दो दृष्टियों के सामने महत्वहीन हो जाता है। आप मेरे विचारों को पसन्द करेंगे जब यह जान जाँयगे कि मैं लड़कपन से ही इनकी दशा से दिलचस्पी रखता था। और इनके लिए अपना सब कुछ मैंने खतरे में डाल दिया है। मैं यह सब अपने को बड़ा दिखाने के लिए नहीं कह रहा हूँ क्योंकि मैं जानता हूँ कि किसी भी किस्म का प्रायश्चित जो हिन्दू करेंगे वह उस पतनावस्था के पाप की पूर्ति नहीं कर सकता जो हरिजन सदियों से भोगते चले आ रहे हैं।

मैं कह चुका हूँ कि मैं अपना जीवन देकर भी हरिजनों को चुनाव में अलग वोट देने की स्वीकृति का विरोध करूँगा। यह बात किसी उत्तेजना के क्षण में ही नहीं कह दी गयी थी और न तो किसी किस्म की शोभा के लिए कही गयी थी। यह गम्भीर स्वीकरण था। .. ...मैं सोचता हूँ कि मैं स्वयं उन्हीं में से एक हूँ। उनका सवाल इन किस्म के अन्य सवालों से आधारतः ही अलग है। मैं धारा सभाओं में उनके प्रतिनिधित्व का विरोधी नहीं हूँ। मै उनके सभी बालिग स्त्री पुरुष बच्चों का जो मत देने के अधिकारी घोषित किये जा चुके होंगे, समर्थन करूँगा। इस हालत में मैं उनकी शिक्षा दीक्षा, सम्पत्ति सम्बन्धी विशेषताओं का भी ख्याल न करूँगा, यों ये सब नियम और लोगों के लिए कड़े हो सकते हैं या होंगे। मेरा विश्वास है कि पृथक निर्वाचन उनके लिए और हिन्दुओं के लिए भो खतरनाक है।

मैं पहले ही कह चुका हूँ कि हरिजनों के लिए पृथक निर्वाचन का जब तक मेरी जिंदगी रहेगी विरोध करूँगा। यह बात मैंने आन्दोलन की सरगर्मी में नहीं कही थी और न तो बहुत बढ़ा चढ़ाकर अलंकारों की भाषा में ही कही थी। यह बात तो मैंने गम्भीरता पूर्वक विचार कर ही कही थी।

★

मुझे तो ऐसा लगता है कि मैं भी उन्हीं में से एक ही हूँ। दूसरे मसलों से भिन्न उनका अपना अलग मसला है। मैं धारा सभाओं में उनके प्रतिनिधित्व के खिलाफ नहीं हूँ। मैं तो यह भी चाहता हूँ कि उनमें मर्द औरत सभी बालिग वोटर बनें और इसमें उनकी माली और तालीमी योग्यता का भी खयाल न किया जाय चाहे दूसरों के लिए इसकी कैद रहे। पर मेरी यह निश्चित राय है कि पृथक निर्वाचन से हरिजनों और हिन्दू-धर्म दोनों का नुकसान होगा।

हरिजनों का सवाल तो मेरे लिए एक दम नैतिक और धार्मिक दोनों है। इसका राजनीतिक पहलू भी महत्वपूर्ण है, पर इसके नैतिक और धार्मिक पहलू के मुकाबिले मेरे सामने तो उसका कोई विशेष महत्व नहीं। आप लोग भी यह जानकर कि लड़कपन से ही मेरी दिलचस्पी इनके मसलों में रही है और मैंने इनके लिए कई बार जान का भी जोखिम उठाया है, इस बारे में मेरी राय की कद्र करेंगे। यह बात कहकर मैं किसी तरह घमण्ड नहीं कर रहा हूँ क्योंकि मेरी तो यह राय है कि हरिजनों का सदियों तक पतन बनाये रखकर सवर्ण हिन्दुओं ने जो पाप किया है उसका प्रायश्चित किसी तरह नहीं हो सकता। सवर्ण हिंदू हरिजनों का बदला नहीं चुका सकते।

अनुकूल परिस्थिति आने अर्थात् राष्ट्रीय सरकार स्थापित होने के माने यह नहीं होंगे कि लोगों पर सुधार के कानून जबरदस्ती लाद दिये जाँये। ऐसी बातों में ताकत के प्रयोग की कम से कम गुंजाइश रहती है। यह छुआछूत की बुराई जो जनता की हड्डी तक में घुसी बैठी है ऐसी जोर जबरदस्ती से दूर नहीं की जा सकती। जोर जबरदस्ती से तो विदेशी सत्ता अपने काम करवाती है। लेकिन काँग्रेस ने अपना यह स्थान जबरदस्ती ताकत के जरिये तो नहीं पाया है। यह तो पूरी तरह से एक लोकतांत्रिक संगठन है इसलिए इससे यह आशा की जाती है कि काँग्रेसी सरकारें अपने किसी भी प्रगतिशील योजना के समर्थन में जनमत को बनावेंगी और उसके सम्बन्ध में जनता का समर्थन प्राप्त करेगी।

जिसे अच्छा लगे वह भले जनेऊ पहने, मगर लोगों को जनेऊ पहनाने का आन्दोलन या प्रचार न किया जाय। अकेला जनेऊ गले में डाल लेने से कुछ होना जाना नहीं क्योंकि इससे हिन्दू धर्म की खामियाँ दूर न होंगी।

सूबे की सरकार को हरिजनों के लिए अलग मुहल्ले बसाने की प्रथा अब बंद कर देनी चाहिये और इसके बदले सवर्ण हिन्दुओं की बस्ती वाले गाँवों में सवर्णों के बीच ही उन्हें रहने की जगहें देने का रिवाज चालू कर देना चाहिए।

इसके लिए बड़े भागीदार को अपने धर्म में क्रान्तिकारी सुधार करना होगा। हम इतनी साफ हकीकत को देखने से इन्कार न करें। आज दूसरे लोग अछूतों और परिगणित जातियों को सिर्फ इसलिए अपना निशाना बनाते हैं कि वे हिन्दू धर्म की सबसे बड़ी कमजोरी हैं। छुआछूत हिन्दू धर्म का सबसे बड़ा दोष है। अखबारों में हम पढ़ते हैं कि मुस्लिम लीगी इस बात का प्रचार करते हैं कि पाकिस्तान में परिगणित जातियों को पृथक् निर्वाचन का मौका मिल सकता है। क्या यह पाकिस्तानी ढंग के इस्लाम में शरीक होने का बुलावा है? मैं यहाँ जबरन् धर्म बदलने की करुण कहानियाँ आप को याद दिलाना नहीं चाहता। लेकिन जबरन् मुसलमान बनाये गये लोगों के मुँह से इतना सब सुन कर मैं इसके बुरे से बुरे नतीजे के खयाल से भी काँप उठता

हूँ। इस डर या धमकी का क्या जवाब है? इसका सचा जवाब यकीनी तौरपर यही है कि हिन्दू धर्म से हर तरह की छूआछूत मिटा दी जाय, हिन्दुस्तान में परिगणित जाति जैसी कोई चीज़ न रहे और कानून की नज़र में जातियों और उप-जातियों की हस्ती ही खत्म कर दी जाय। सब हिन्दू समान हैं न कोइ ऊँचा है और न कोई नीचा। परिगणित जातियों और नामधारी आदि-वासियों जैसे भुलाये हुये वर्गों को शिक्षा, मकान वगैरा के मामलों में खास सहूलियतें दी जानी चाहियें। वोट देने वालों की सूची में वे सवर्ण हिन्दुओं से अलग न माने जाने चाहिये। इसका मतलब यह न होना चाहिये कि उनकी हालत आज से भी बदतर हो जाय। बहुत से हरिजन अपनी माली हालत को बेहतर बनाना चाहते हैं और तालीम सम्बन्धी सहूलियतें चाहते हैं। इसके वे हक़दार हैं। मगर खुद अपने लिए हिन्दुओं को तब तक सन्तोष नहीं हो सकता, जब तक की सारे मन्दिर हरिजनों के लिए न खुल जायँ। मेरी राय में हिन्दुओं के मन्दिर तब तक पवित्र नहीं हैं, जब तक की हर एक हिन्दू बिना किसी भेद-भाव के ठीक उसी तरह भगवान की पूजा करने का हक़दार न हो, जितना कि उनमें ऊँचे से ऊँचा व्यक्ति होता है। शुद्ध हिन्दू-धर्म में बड़े-छोटे का कोई भेद नहीं है। भगवान की नजर में सब बराबर है। दुनिया के सारे धर्मों की आज परीक्षा हो रही है। मैं चाहता हूँ कि इस जाँच में हिन्दू धर्म पूरे नम्बरों से पास हो।

✶

किसी को भी विशेष अधिकार या विशेष सुभीते नहीं दिये जाने चाहिये। सरकार को ग़रीब, भूले व कुचले हुए और कमजोर लोगों की तरफ ही विशेष ध्यान देना चाहिये। अगर हरिजनों को ऊँचा उठाने के लिए ज्यादा पैसा खर्च किया जाय तो ब्राह्मणों को नाराज नहीं होना चाहिए, हरिजनों से डाह नहीं करना चाहिये। उसी तरह किसी ब्राह्मण को सिर्फ इसलिए न कुचला जाय कि वह ब्राह्मण है। सच पूछा जाय तो ब्राह्मणों की तादाद बहुत ही कम है। पाकिस्तान और हिन्दुस्तान दोनों में हर एक नागरिक के साथ-पूरा पूरा और शुद्ध न्याय किया जाना चाहिए।

✶

अब तो योग्यता और गुणों के आधार पर ही लोगों की परख की जानी चाहिये, अंग्रेजों ने अपना मक़सद पूरा करने के लिए लम्बे अरसे तक अल्पमत वालों को आफिसों में हक़ से ज्यादा जो नौकरी और सुभीते दिये, उनका उन्हें आगे लालच नहीं करना चाहिये। उन्हें यह समझना चाहिए कि ये नौकरियाँ और खास सुभीते उन्हें रिशवत के तौरपर दिये जाते थे। आखिर

अंग्रेज तो छुआछूत को नहीं मिटा सके। दक्षिण हिन्दुस्तान में खुद हिन्दुओं ने ही पुराने मशहूर मंदिर हरिजनों के लिए खोल दिये हैं। इससे मुझे बड़ी खुशी हुई क्योंकि छुआछूत के कलंक को मिटाकर ही हिन्दूधर्म जिन्दा रह सकता है। नये हिन्दुस्तान में मंदिरों को कोई बलात्कार से तो खुलवाना नहीं चाहता। जो मन्दिर खुलेगा वह जनता के अभिमत से ही खुलेगा। यदि ऐसा ही है तो फिर क़ानून क्यों ? आज तो यह हाल है कि मंदिर में जाने वाले हिन्दू और सभी पुजारी तथा संरक्षक भी चाहें कि वहाँ हरिजन दर्शन करें, तो भी क़ानून रोकता है। यह कोई सन्देह पूर्ण नहीं, किन्तु स्वयं सिद्ध बात है। इस बाधक कानून को रद्द करने के लिए ही कानून की आवश्यकता है। कानूनी प्रतिबन्ध कानून से ही दूर हो सकता है।

यह कोई आश्चर्य्य नहीं है कि हरिजन सरकार का समर्थन पाते हैं। किसी भी कारण-वंश यदि समर्थन उनकी कुछ भी भलाई करता है तो रोने का कोई मतलब नहीं है। सरकार समर्थन करती है, ऐसा नहीं है। मुझे इसके पीछे का उद्देश्य उन्हें सवर्णों से अलग कर देने का मालूम पड़ता है। कारण पिछली घटनाओं से सम्बन्धित है। यदि सवर्णों ने उनके साथ बुरा व्यवहार न किया होता तो यह अलगाव सम्भव न हुआ होता।

कानून के सहारे किसी भी कार्य को पूर्ण करना, गलत तरीका है, और वही बुराइयों के लिए जिम्मेदार भी है। किसी भी देश का ढंग कानून से अधिक दृढ़ है। अस्पृश्यता केवल जनता में सच्चे विकसित विचार भरकर ही दूर की जा सकती है।

उन्नति विभाजन द्वारा पूरी तरह से रुक जायगी। विभाजन की पूर्णता हिन्दुओं के साथ हरिजनों का भी नाश कर देगी। अलग मतदान द्वारा उनका गलत प्रतिनिधित्व हो सकता है। जो उनके प्रति अनिच्छुक हैं, कैसे विलगाव का विरोध कर सकते हैं।

मेरी कल्पना के स्वराज्य के अन्तर्गत हरिजनों का स्थान प्रत्येक विचार से हिन्दुओं जैसा ही होगा। ऐसी ही धारणा काँग्रेस की भी है। बनिस्बत किसी भी विश्वहितैषी संस्था के जिसे मैं जानता हूँ, अल्प संख्यकों के लिए वहाँ कार्य अधिक बात कम की गई है।

काँग्रेस को हरिजनों को एक साधारण कारण-वश ही अल्पसंख्यक न मानना चाहिये। वे पारसी, यहूदी ईसाई या अन्य वर्गों की भाँति अल्पसंख्यक नहीं पुकारे जा सकते। हरिजन अल्पसंख्यक हैं यदि ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य अल्प-संख्यक हैं। तथा शूद्र बहुसंख्यक हैं। जिस अर्थ को हम ले रहे हैं वे। बहुसंख्यक और अल्प-संख्यक के अर्थ नहीं हैं। भाग्यवश हम अभी उस स्थान तक नहीं पहुँचे हैं जब ऐसा हुआ तो यह किसी भी प्रकार के स्वराज्य को अन्तिम

नमस्कार होगा। अंगरेज आज ही जा सकते हैं किसी दिन की इच्छा भी करते हैं परन्तु यदि हम एक दूसरे का गला काटते हुए जंगली बन जाते हैं तो हमारी स्वतंत्रता असभ्यों को स्वतंत्रता हो जायगी।

काँग्रेस द्वारा हरिजनों को अल्पसंख्यक न माने जाने का अभिप्राय है कि वे हिन्दुओं के अविभाज्य अंग हैं। इसलिए वे अल्पसंख्यकों से अच्छे हैं और यदि वे भिन्न सम्प्रदाय (जाति) का होने और बनने का दावा पेश करते हैं तो बुरा है। थोड़े से पढ़े लिखे हरिजन अपने को एक भिन्न-जाति के रूप में रख सकते हैं परन्तु अधिकांश को हिन्दुओं के साथ ही मरना या जीना है जो यदि वे (सवर्ण हिन्दू) हरिजन पुकारे जाने वाले लोगों के साथ अपना बुरा व्यवहार जारी रखते हैं, अवश्य ही मानव-कुटुम्ब की तरह अपना एक अलग अस्तित्व बना लेंगे।

प्रश्नकर्ता के विचार 'राजनैतिक सुरक्षा' के बारे में क्या हैं, मैं नहीं जानता। यदि उनका मतलब 'अलग चुनाव पद्धति' से है तो ये अवश्य वहाँ तक जाँय जहाँ आज वे हैं। वे पूँजीवाद नामक शैतान के विचार हैं। हरिजनों की सुरक्षा से इसका कभी अर्थ न था। यह पूँजीवाद का एक आधार थी। प्रत्येक व्यवस्था द्वारा स्थापित विभाजन 'अलग करके शासन करो' नीति का अगला क़दम रहा है। यह पूँजीवादी जीवन की विरासत है यद्यपि यह एक प्रिय नाम से पुकारी जाने को थी।

आज कल शक्ति हथियाने के लिए सब मार छीन झपट मची हुई है। अपने उन सिद्धान्तों की ओर देखकर, जिन पर मैंने पिछले ५० वर्षों में काम करने का प्रयत्न किया है, मैं इस किस्म की शक्ति हथियाने की नाशकारी लड़ाई में मन नहीं लगाता और अनिच्छुक ही बना रहा हूँ। मेरी हरिजनों को मात्र सलाह यही है कि वे अपने कर्तव्यों को सामने रख कर ही विचार करें। अधिकार तो उनके पीछे उसी तरह चलेंगे जैसे रात के बाद दिन आता है।

जहाँ तक हरिजनों का सवाल है हर हिन्दू का फर्ज है कि उनकी सहायता करे और वह उनके साथ मिल जुल कर रहे और उनके साथ उनके अकेलेपन में दोस्ती कायम करें। उनके साथ जैसी तनहाई बरती जाती है वह हिन्दुस्तान को छोड़कर और कहीं देखने को नहीं मिल सकती। मैं जानता हूँ यह काम कठिन है। लेकिन यह स्वराज निर्माण का एक अंग है। स्वराज तक जाने का रास्ता बड़ा ऊबड़ खाबड़ और सकरा है। कितनी ऊँची चढ़ाइयाँ और नीची घाटियाँ हैं। स्वराज की आखिरी मंजिल पर पहुँच कर स्वतंत्रता की साँस लेने के लिए हमें साव-धानी से रास्ता तै करना है। काँग्रेस के बहुत से लोग इन मसलों पर बिल्कुल राजनीतिक दृष्टि से

विचार करते हैं और इसे एक राजनीतिक आवश्यकता मात्र समझते हैं पर वे यह नहीं सोचते कि इसके बिना हिन्दू धर्म जी ही नहीं सकता।

★

एक सज्जन ने कहा है कि नये तरह के 'फ़्लश' लगे हुये पाखानों के हो जाने से अस्पृश्यता की समस्या का समाधान हो जायेगा। जहाँ तक इस तरीके का सवाल है मैं इसका स्वागत करता हूँ और स्वास्थ्य के लिए इसे हितकर मानता हूँ। लेकिन यह केवल शहरों में ही हो सकता है। यहाँ मेरे मशीन के विरोध की भी बात चल रही है पर मैं देखता हूँ कि अकसर मेरा विरोध बुरी तरह से गलत रूप में लिया जाता है। मैं इस तरह की मशीनों का विरोधी कतई नहीं हूँ। मैं उस तरह की मशीनों का विरोधी हूँ जो मजदूर को अपने काम की जगह से हटा देती हैं और उसे बेकार बना देती है।

पर प्रश्न तो जो अस्पृश्यता दूर करने का है वह तो है ही। वह तो इस प्रकार के तरीकों से दूर होने से रहा। यह तो तब तक नहीं जा सकती जब तब कि हम खुद भंगी बनकर इस किस्म के काम को गौरव पूर्ण न समझने लग जायँ।

★

मैं यह तो अनेक बार लिख चुका हूँ कि जो लोग हरिजनों का छुआ पानी या दूध वगैह ग्रहण करने से इन्कार करते हैं, वे यह दावा नहीं कर सकते कि उन्होंने अपने को अस्पृश्यता के कलंक से मुक्त कर लिया है। और जब हमने इस भेद भाव को अपने दिल से दूर कर दिया कि यह हरिजन पानी या दूध है, और यह सवर्ण पानी या दूध है, तब फिर इन भेदभाव-भरे रिवाज को तो उचित ठहराने का कोई अर्थ रह ही नहीं जाता कि यह मुसलमान पानी या दूध है और यह हिन्दू पानी या दूध है। अगर अस्पृश्यता निवारण की यह महान् प्रवृति महज अपने मन को समझा लेने की बात रह गई और उसके पीछे सत्य न रहा तो उसका सारा सौन्दर्य नष्ट हो जायगा। इस अस्पृश्यता रूपी राक्षसी की पहुँच सर्वत्र है; इसका रूप सर्वव्यापी है। जो इसकी इस सर्वव्यापकता में विश्वास करते हैं, वे तबतक अपने को इससे मुक्त हुआ नहीं कह सकते जब तक कि वे एक भी मनुष्य को उसके अमुक जाति में जन्म लेने के कारण या उसके सम्प्रदाय या धर्म के कारण, अस्पृश्य अथवा सामाजिक दरजे में किसी न किसी तरह अपने से उसे नीचा समझते हैं।

★

बरार प्रान्त के एक हाई-स्कूल की रजत-जयन्ती के उपलक्ष में आयोजित एक सार्वजनिक भोज में हरिजन विद्यार्थियों को भी न्योता दिया गया था। हरिजन विद्यार्थियों को तो वहाँ अलग

बिठाया गया था और दूसरी तमाम जातियों व सम्प्रदायों के आमंत्रित लोग सब एक पंक्ति में बिठाये गये थे। संस्कृतिवान हरिजन विद्यार्थियों को इस तरह वाहियात तरह से अपमानित करने की आखिर क्या ज़रूत आ पड़ी थी? और सब लोगों की पाँत में अगर उन्हें बिठा दिया जाता तो उन्हें देखकर कौन कह सकता था कि वे हरिजन हैं? एक हाई स्कूल के उत्सव के समय ऐसे अपमान जनक कृत्य से कहीं प्रगट होता है कि यद्यपि अस्पृश्यता का बहुत कुछ मैदान हम सर कर चुके हैं, तो भी यह पुराना वहम आज भी उसी तरह जमा हुआ है, और वह भी उन स्थानों में जहाँ कि हमें ऐसी बातों की आशा करनी ही नहीं चाहिए। यह ध्यान रहे कि वहाँ न तो सहयोग का प्रश्न था, न सहायक का वहाँ तो सिर्फ एक पंक्ति में बैठ कर जीमने की बात थी। अगर रेलगाड़ी के एक ही डिब्बे में एक ही बेंच पर सबके साथ बैठना और वहीं बैठकर भोजन करना सहयोग नहीं समझा जाता, तो यह भी निश्चय ही सहभोज नहीं था। मगर अस्पृश्यता के कोष में तो सहभोज का कुछ दूसरा ही अर्थ है। उसमें तो एक पंक्ति में बैठकर भोजन करने का भी निषेध है।

*

मैं नहीं मानता कि एक वर्ण के साथ दूसरे वर्ण के रोटी बेटी के व्यवहार से आदमी का जन्म के साथ मिला हुआ दरजा या हक खतम हो जाता है। वर्ण व्यवस्था ने आदमी के धन्धे तय कर दिये हैं। वह न तो आदमी के व्यवहार की सीमा बाँधती है और न उस पर कोई नियन्त्रण ही रखती है।

अलग अलग जातियों के एक साथ बैठ कर खाने या आपस में शादी ब्याह करने की मनाही हिन्दू धर्म का अंग नहीं है। आज ये पाबंदियाँ धर्म को कमजोर बना रही हैं। और जिन पर जोर देने से आप जनता का ध्यान उन बुनियादी बातों से हट जाता है जो जीवन के विकास के लिए महत्वपूर्ण और जरूरी हैं।

(ट्रावनकोर राज्य की वह विज्ञप्ति पढ़कर जिसमें वहाँ की सरकार ने घोषित किया था कि जिन सार्वजनिक स्थानों का अस्पृश्य उपयोग न कर सकते हों सरकार उनपर पैसा खर्च न करेगी गांधी जी ने कहा था) इसके लिए मैंने सरकार को बधाई तो दे दी है पर आप विश्वास रखें इस मामूली से सुधार से मुझे संतोष नहीं। रोम रोम में जिस रोग ने कर घर लिया हो उसे कोई मामूली नुस्खा थोड़े ही निर्मूल कर सकेगा। उसके लिए तो तेज से तेज दवा चाहिए। अगर हिन्दू-मरीज को जीवित रहना है तो इस रोग की जड़ पर कुठाराघात करना ही होगा।

*

राज्य सरकार को यह घोषणा कर देनी चाहिए कि राज्य किसी भी प्रकार की अस्पृश्यता दूरिता या अदर्शनीयता मानने के लिए तैयार नहीं। राज्य का इन चीजों से कोई भी वास्ता नहीं। एक वकील होने की हैसियत से, जिसे अब भी कुछ कानूनी ज्ञान है, मैं कह सकता हूँ कि कि इसमें किसी भी प्रजा के व्यक्तिगत धार्मिक विश्वास या आचरण पर किसी भी प्रकार का कोई हस्तक्षेप नहीं। जिस राज्य में विभिन्न धर्मों की मानने वाली प्रजा हो वहाँ धार्मिक मामलों के प्रति पक्षपात शून्य तटस्थता का बरताव रखना ही उस राज्य का आवश्यक कर्त्तव्य है। प्रजा के एक वर्ग में प्रचलित कुछ प्रथाओं को कानूनी संरक्षण दे देने से निश्चय ही वह राज्य सुधार की प्रगति में दखल देता है, साथ ही प्रजा के विचार स्वातंत्र्य पर भी हस्तक्षेप करता है। राज्य को अपने प्रजाजनों से सिर्फ इतना भर कह देना है कि 'तुम्हारे धार्मिक विश्वासों और रिवाजों से राजा को कोई सरोकार नहीं। राज्य तो तभी तुम्हारे बीच में पड़ेगा, जब वह देखेगा कि तुम्हारी धार्मिक प्रथाओं के कारण राज्य के सामान्य कानून या अमन में कोई खलल पहुँच रहा है। लेकिन आज तो यह हालत है कि अस्पृश्यता को खुद राज्य की कानूनी स्वीकृति मिली हुई है।

गांधीजी से किसी ने कहा कि नयाड़ियों (दक्षिण भारत की एक अत्यंत नीच समझी जाने वाली हरिजन जाति) का प्रश्न बहुत जटिल नहीं हैं, क्योंकि उनकी तादाद तो बहुत थोड़ी है और वे एक खास जगह में ही रहते हैं। गांधीजी ने उन्हें तुरंत जवाब दिया, "बेशक हम उन्हें लाखों की तादाद में और सारे भारत में फैले हुए नहीं देखना चाहते। पर हमारी शर्म में इससे तो कुछ कमी नहीं आ जाती कि ये तादाद में बहुत थोड़े हैं। मान लो कि किसी दैवी दुर्घटना से एक भी नयाड़ी जीवित न बचे और अस्पृश्यता तब भी हमारे हृदय में शेष बनी रहे, तो यह बात हमारे लिए खुशी मनाने की न होगी। अस्पृश्यता नयाड़ियों (हरिजनों) में तो है नहीं, वह तो हमारे हृदय में हैं। जहाँ तक जन्म से एक मनुष्य अस्पृश्य समझा जायगा, वहाँ तक हमारा यह युद्ध हरगिज बंद न होगा।

यदि अस्पृश्यता का कलंक हिन्दू समाज पर से दूर न किया गया तो हिन्दू धर्म के नष्ट हो जाने का पूरा पूरा खतरा है। जब तक हरिजनों को दूसरे हिन्दुओं की ही तरह तमाम मनुष्योचित अधिकार नहीं मिल जाते जो इस प्रश्न को उतनी ही गम्भीरता से महसूस करते हैं जितनी मैं, तब तक उन्हें आराम की सांस नहीं लेनी चाहिए।

इस रास्ते चलो नहीं तुम्हारा और तुम्हारे धर्म दोनों का नाश निश्चित है ।

यह प्रायश्चित का रास्ता है

यह मुक्ति का रास्ता है

जहाँ तक हरिजनों का प्रश्न है, प्रत्येक हिन्दू को उनके साथ समानकर्मी बन जाना है और उनके भयानक विलगाव की समाप्ति के लिए उनके साथ मैत्री करनी है। यह विलगाव जिस अपार मात्रा में हिन्दुस्तान में आज वर्तमान है उतना दुनिया ने और कभी कहीं भी नहीं देखा होगा। मैं अपने अनुभव के बल पर जानता हूँ कि कितना मुश्किल यह काम है। किन्तु यह भी स्वराज्य की ऊँची चोटी पर जाने के महान कार्य का एक हिस्सा है।

मद्रास में अस्पृश्यता जिस प्रकार तीव्र रूप में मौजूद है, बंगाल में वह उसी तरह व्यापक रूप में वर्तमान है। बंगाल के ब्राह्मण, कायस्थ, वैद्य और नवशाख को छोड़ बाकी सभी जातियाँ अस्पृश्य हैं। इसका मतलब यह है, कि यहाँ १० फी सदी से भी अधिक हिन्दू अस्पृश्य हैं। जिन्हें छू जाने से स्नान करना होता है वही अछूत नहीं हैं। जिन्हें शूद्रों का भी अधिकार नहीं मिला है, बंगाल में जिन्हें मंदिर-प्रवेश का अधिकार नहीं है, वही अस्पृश्य ये अछूत लोग आपस में और भी अस्पृश्यता की सृष्टि कर बैठे हैं। इस अस्पृश्यता के विष ने बंगाल के गाँवों को निष्प्राण करके अधःपतित कर दिया है। मैं फरीदपुर गया था। इस विशाल जिले में ९२ फीसदी लोग अस्पृश्य हैं। ये लोग ज्यादातर नमः शूद्र हैं। ये दुर्बल और हीन नहीं, स्वस्थ, सच्चे और समाज के मेरुदण्ड हैं। सनातनी लोग कहते हैं, कि ये बहुत दिनों से अस्पृश्य रहते आये हैं। और बंगाल के कोई कोई कहते हैं कि नमः शूद्रादि को अस्पृश्य या अछूत नहीं समझा जाता। वे जब यह बात कहते हैं तो नमः शूद्रों को अछूतों की श्रेणी में फेंकने की युक्ति अन्य सम्प्रदाय के लोगों के ऊपर डालने या उनके निर्णय पर छोड़ देने से काम नहीं चलेगा। इतनों को लेंगे और इतनों को छोड़ेंगे, इस तरह का बँटवारा चल नहीं सकता। अन्याय समझने पर उसे अपनी तमाम ताकत लगाकर त्यागना होगा। और इस प्रकार समाज को उससे मुक्त करना होगा।

बंगाल में संस्कार का काम करने वालों ने कई वर्षों से दलित जातियों को ऊपर उठाने की कुछ चेष्टा की थी। वे जिस पाप को दूर करना चाहते थे वही पाप और भी जड़ पकड़ता जाता है। "पोद" सम्प्रदाय को ही लीजिए। उनको अछूत कहा जाता है। संस्कार कराने वाले उनके अन्दर जाकर शिक्षा देने लगे, कि उन्हें शूद्र मानकर छोटा करके रक्खा गया है, वे शूद्र नहीं, क्षत्रिय हैं। उनमें से कई तो जनेऊ धारण करके क्षत्रिय हो गये। किन्तु इसके फल-स्वरूप जो

अभी तक शूद्र बने हैं, उनकी हीनता और भी नग्न हो गयी है । वास्तव में संस्कार कराने वालों को तो इस दृष्टि से देखना चाहिए था कि हिन्दू-धर्म के अनुसार कोई छोटा नहीं है ।

★

मैंने जब शुरू शुरू में कहा था कि रोटी व्यवहार या बेटी व्यवहार अस्पृश्यता निवारण के कार्यक्रम के लिए आवश्यक नहीं तो वह मर्यादा सामान्य जनता के लिये थी । इसका मतलब सिर्फ यह था कि कांग्रेस के लोग जनता के साथ इस बात का आग्रह नहीं करेंगे । अब तो यह मर्यादा भी टूटने लगी है । इसलिए जहाँ सार्वजनिक छात्रालय हैं, वहाँ तो हरिजनों को दाखिल कराने की हमें जरूर माँग करनी चाहिये ।

★

(एक सनातनी की दृष्टि से हरिजनों के मन्दिर-प्रवेश के सम्बन्ध में मुझे एक कठिनाई दिखाई देती हैं । मान लीजिये कि किसी एक खास मन्दिर के ९९ फी सदी दर्शनार्थी हरिजनों के मन्दिर-प्रवेश के पक्ष में हैं और वह मन्दिर खोल दिया जाता है, इस स्थिति में उस एक दर्शनार्थी का क्या होगा, जिसे ऐसे किसी मन्दिर में देव-पूजन करने में आपत्ति है, जिसमें हरिजन जाते हों ? अगर सुधारकों की चल गई तो क्या सनातनियों के सनातन से चले आये पूजनाधिकार में यह एक अनुचित हस्तक्षेप न होगा ?

यहाँ एक उदाहरण देता हूँ । अंग्रेजों के एक शहर में रोमन कैथलिक ईसाइयों का भी सार्वजनिक चर्च है और वहीं प्रोटेस्टेण्ट लोगों का भी चर्च है । प्रोटेस्टेण्टों का बहुमत होते हुये भी वे रोमन कैथलिक चर्च के मामलों में कोई दस्तंदाजी नहीं करेंगे । तब फिर सुधारक बहुमत होते हुये भी क्यों सनातनियों के किसी सार्वजनिक मन्दिर के मामले में हस्तक्षेप करें ?")

ऐसा ही एक दूसरा प्रश्न रखकर मैं इस प्रश्न का उत्तर दूँगा । अगर एक अकेले सनातनी को ऐसा अधिकार है—तो फिर उस दशा में उस बहुमत का क्या होगा ? बहुमत को क्या कुछ भी अधिकार नहीं ? प्रश्नकर्ता ने जो उदाहरण ऊपर दिया है, वह यहाँ लागू नहीं होता । उन्होंने विभिन्न सम्प्रदायों की दो चर्चों के पास-पास होने की कल्पना की है । प्रोटेस्टेंट अगर रोमन कैथलिक लोगों के अधिकारों में, और रोमन कैथलिक प्रोटेस्टेंटों के मामलों में हस्तक्षेप करें तो उनकी यह भारी गुस्ताखी ही होगी । मगर मान लीजिये कि सिवा एक के तमाम प्रोटेस्टेण्ट ईसाई उन लोगों को अपने अर्चना-स्थान में आने की इज़ाज़त दे दें, जिन्हें कि युगों से उन्होंने बहिष्कृत कर रखा था, तो निस्सन्देह उन्हें ऐसा करने का पूरा अधिकार है । यहाँ किसी के धर्म-परिवर्तन का तो प्रश्न ही नहीं उठता । प्रश्नकर्ता की यह कल्पना निराधार है । मन्दिर-प्रवेश की

प्रवृत्ति में सुधारक किसी से यह तो कहते नहीं, कि अपना धर्म बदल डालो। किसी मन्दिर में जाने वाले अगर बहुमत से क्या सर्व-सम्मति से भी कम-से-कम सिद्धान्त रूप में ही ऐसा कोई फैसला कर दें, तो भी उस मन्दिर का उपयोग वे ऐसे किसी काम में नहीं कर सकते, जिसका कि इरादा उसके बनाने वालों के मन में न रहा होगा। सुधारकों का तो यही दावा है, कि उनका धर्म वही धर्म है जो सनातनियों का है—सवर्ण हिन्दुओं की तरह हरिजन हिन्दुओं को भी मन्दिरों में आने की आज्ञा देता है, इसलिये प्रश्न तो यहाँ व्याख्या का है, और ऐसे मामले में बहुमत की राय जरूर मानी जायगी। अगर इसकी उपेक्षा की गई तब तो वह अल्पमत के द्वारा बहुमत के प्रति बलात्कार ही कहा जायगा और तब उस स्थिति में सब तरह की प्रगति का खात्मा ही है। प्रश्नकर्ता का उपस्थित किया हुआ उक्त मत अगर मान लिया गया तो समाज का क्षय और मरण ही समझिये। यह स्मरण रहे कि अल्पमत को अपने लिए अलग मन्दिर बनाने की स्वतंत्रता है और जहाँ तक इस प्रश्न से मेरा अपना सम्बन्ध है, मैं इस विषय में अपनी यह राय दे चुका हूँ कि एक व्यक्ति की भी अल्पमत की भावना का यहाँ तक आदर किया जाय कि एक घण्टा खासकर उसी के लिए अलग नियत कर दिया जाय, ताकि वह सुधारकों या हरिजनों के आवागमन से स्वतंत्र रहकर मन्दिर में अपने इष्टदेव की आराधना और अर्चा कर सके।

★

(हरिजनों के लिए कुएँखु लवाने के लिए गांधीजी ने कहा था) सबसे पहले हमें यह जान लेना चाहिये कि कहाँ कहाँ कौन कौन से कुएँ हैं और उनपर कौन पानी भरता है। अगर कुएँ जिला बोर्ड के हैं तो पहले हमें लोगों को समझाना होगा कि हरिजनों को वहाँ से पानी लेने दें क्योंकि इसका उन्हें अधिकार है। अगर वह उन्हें रोकें तो हम सरकार की मदद भी लेंगे। हरिजनों के साथ हम खुद कुओं पर जायँगे। बड़ी संख्या में हरिजनों को ले जाने की आवश्यकता नहीं। क्योंकि वे सबके सब स्वच्छता के नियम का पालन नहीं कर सकते। सिर्फ उन्हें ही जाना चाहिये जो स्वच्छता के नियम का पालन अच्छी तरह करते हों। अगर कोई दंगा फसाद करे तो सिर हमारा फूटेगा, हम हरिजनों की हड्डी टूटने न देंगे। इस तरह से अगर एक दो कुएँ भी खुल जायँ तो काफी होगा। बाद में धीरे-धीरे काम अपने आप बढ़ेगा।

जो कुएँ खास हरिजनों के लिये ही खुदे हैं, उनका पानी मीठा होगा तो सवर्ण हिन्दू भी वहाँ पानी लेने आयँगे—पहले संकोच के साथ, बाद में खुले दिल से। हमें उन्हें आने देना चाहिये। मगर मानो कि वह वहाँ कब्जा करके ही बैठ जाते है और हरिजनों पर ही मार पीट करते हैं तो भी हम हरिजनों को वहाँ से हटने की सलाह न देंगे। सिर्फ इस डर से कि झगड़ा होगा हम उन्हें चुपचाप बैठने को नहीं कह सकते।

★

हमारा उद्देश्य है कि हरिजन ऊँचे से ऊँचे दर्जे पर पहुँच सकें। मगर हमारा आदर्श यह होते हुए भी अच्छे हरिजन रसोइये तैयार करना एक अच्छी बात है। मैंने देखा है कि जितना हम हरिजनों को अपने घर के क्षेत्र में खींचते हैं, उतना ही सुधार कार्य शीघ्रता से आगे बढ़ता है। जो हरिजन हमारे घर में घुल मिल जाते हैं, वे नीचपन की भावना से मुक्त हो जाते हैं और हरिजनों और सवर्ण हिन्दुओं के बीच की एक कड़ी बन जाते हैं।

पाँच बड़ी बड़ी नदियाँ जिस प्रान्त में बह रही हों, उस पंचनद प्रदेश के हरिजनों की जल-कष्ट की रिपोर्ट पाठक पढ़ें। यह क्या शर्म की बात नहीं है कि वहाँ के लोग हरिजनों के लिए पानी का प्रबन्ध नहीं कर सकते। इस तरफ जिन लोगों ने सहायता का संकल्प किया था उनका रुख उन्होंने दूसरी तरफ मोड़ दिया तो उन्हें अन्तर्यामी ईश्वर की अदालत में गबन के अपराधियों के रूप में हाजिर होना पड़ेगा।

कराईकुडी में राजपूतों ने हरिजनों पर जो अत्याचार किया है वह मूर्खतापूर्ण अत्याचार इस अस्पृश्यता का, इस मूर्खतापूर्ण विश्वास का ही एक प्रत्यक्ष परिणाम है कि ईश्वर ने जो मानवसृष्टि बनायी है उसमें कुछ मनुष्य दूसरों से बड़े या ऊँचे हैं और यह दर्प भावना इस हद तक पहुँच जाती है कि छोटे आदमी अस्पृश्य ही नहीं अदर्शनीय भी हो जाते हैं। × × अस्पृश्यता के उग्ररूप को नष्ट करने में जहाँ हम सफल हुए तहाँ उसका शेष रूप तो अपने आप ही खतम हो जायगा।

★

हरिजनों को उनकी वर्तमान दशा पर धिक्कारना वैसा ही है जैसा एक गुलाम का मालिक अपने गुलाम की दुर्दशा और गंदगी के लिए उसे ही दोषी ठहराता है। वह शायद यह भूल जाता है कि उनकी इस अवस्था के लिए दोषी वही है।

यह आन्दोलन केवल हरिजनों को खुश करने के लिए नहीं चलाया जा रहा है। इसका लक्ष्य तो हिन्दुत्व के रूढ़िगत पापों को दूर करना ही है। 'प्राणी मात्र समान है' हिन्दू धर्म का महा सिद्धान्त है पर उसमें भी ऊँच नीच का भेदभाव जो घर कर बैठा है उसी को नष्ट कर देने के लिए आन्दोलन चलाया गया है।

★

सन् १९१५ से जब दक्खिणी अफ्रीका से लौटकर इस आन्दोलन की नीव डाली थी, तब मैंने सोचा था कि अस्पृश्यता-निवारण के साथ अछूतों के लिए अलग मन्दिर या पाठशालायें खोलना सर्वथा असंगत है। लेकिन बाद के अनुभव से पता चला कि शुष्क तर्क के आधार पर यह आन्दोलन सफल नहीं हो सकता। हम हिन्दुओं ने अपने तिहाई हिस्से को इस तरह दबा रखा है कि समझदार हिन्दुओं के एक स्वर से अस्पृश्यता को मिटा डालने की घोषणा कर चुकने पर भी दलित और अस्पृश्य वर्ग को हमारी सहायता की कई तरह से आवश्यकता होगी। इसलिए मैं मान लेता हूँ कि दोनो काम एक साथ होने चाहिएँ, यानी साधारण मन्दिरों, आम मदरसों और कुओं का उपयोग करने की पूर्ण स्वतंत्रता के साथ ही साथ अछूतों के लिए खास तौर पर नमूनेदार मन्दिर और मदरसे बनवाने चाहिएँ। × × मेरी इस चीज की आड़ में कोई बेजा फ़ायदा न उठावे तो अच्छा।

हरिजनों के सम्बन्ध का मेरा कार्यक्रम है कि हरिजनों को पाठशालाओं, छात्रालयों तथा दवा दारू वगैरह की तमाम सुविधाएँ प्राप्त करा दी जायँ साधारणतया उनके लिए ऐसा वातावरण तैयार कर दिया जाय जिससे समाज में उन्हें दूसरों के बिलकुल बराबर का दर्जा मिल जाय।

गांधी जी के हरिजन कार्यक्रम के एक आलोचक ने एक बार कहा था कि इन गरीबों को मजूरी में अनाज दिया जाता है और उनसे चाहे जब तक काम लिया जाता है। काम के घंटे नियत नहीं हैं। मंदिर-प्रवेश की अपील करने के बजाय उन्हें अधिक पैसा दिलाने और उनके काम के घंटे नियत कराने का प्रयत्न आप क्यों नही करते ?

गान्धीजी ने कहा—

'इन सब बातों का संबंध अस्पृश्यता से नहीं है, इनके कारण तो दूसरे ही हैं।'

'ये दोनों प्रश्न एक दूसरे पर निर्भर करते हैं।' आलोचक बोले।

'मैं जनता हूं कि इन प्रश्नों का कुछ परस्पर संबंध है। अगर मैं अस्पृश्यता दूर करने में सफल हो सका, तो दूसरे प्रश्नों को भी देखूँगा। बतौर वैद्य के मैं जानता हूँ कि मुझे क्या करना चाहिए ? वैद्य रोग का मूल कारण देखता है और पहले उसी का इलाज करता है। इसी तरह मैं भी प्रथम इस रोग की जड़ को ही निर्मूल करने का प्रयत्न कर रहा हूँ।' गांधी जी ने जवाब दिया।

'हम तो यह महसूस करते हैं कि हरिजनों को पेट के लिए रोटी और समाज में अपना

उचित दर्जा मिलना चाहिए। परन्तु आपको तो एक मंदिर प्रवेश की ही रट लगी हुई है' —आलोचक ने अपनी आशंका प्रकट की।

'यह आपका गलत खयाल है। अपने भाषणों में तो मैं प्रयोगवश ही मंदिरप्रवेश की चर्चा करता हूँ। पर मंदिरप्रवेश की वात किये विना रह नहीं सकता। उसे मैं अस्पृश्यता निवारण का एक आवश्यक अंग समझता हूँ।"

'पर क्या इस आंदोलन को आप आत्म-शुद्धि का आंदोलन नहीं कहा करते? 'आलोचक ने फिर प्रश्न किया।

गांधी जी ने जवाब दिया—इसमें संदेह ही क्या? हरिजनों ने पल्लुसति में मुझ पर इलजाम लगाया था, कि मैं वतौर हिंदू के यह सुधार कार्य कर रहा हूँ। मैंने अपना यह अपराध स्वीकार कर लिया। मुझे कुछ छिपाना नहीं है। उन्होंने कहा था कि अगर उनकी माली हालत सुधर जाय तो और बातें तो अपने आप ठीक हो जायँगी। मैंने कहा यह नहीं हो सकता और मैं अपनी वात के समर्थन में आपको कई उदाहरण दे सकता हूं। आप मंदिर नहीं चाहते तो जाने दें। मंदिरों में आप न जायँ। लेकिन मंदिरों में जाने और वहाँ पूजा करने का अधिकार तो आपका होना ही चाहिए। यह आपकी मर्जी पर है कि मंदिर प्रवेश के उस अधिकार को आप काम में लायें या न लायें। परन्तु आपकी तरह सभी लोगों का तो यह विचार नहीं। मैं हजारों को जानता हूँ जिनके चेहरे मंदिर खुलने की वात सुनते ही खिल उठते हैं। वे यह नहीं जानते कि ऐसा क्यों होता है पर उन्हें खुशी होती है।

★

अभी अजमेर में राजकुमारी वहन चली गई थीं। उन्होंने वहाँ की खतरनाक और हमारे लिये बड़ी शर्म की वात सुनायी। वहाँ जो हरिजन रहते हैं उनसे वहाँ वाले काम लेते हैं और वे करते हैं। मगर जिस जगह वे रहते हैं वह वहुत गंदी और मैली है। वहाँ तो हमारी ही हुकूमत है और अच्छी खासी हुकूमत है। वहाँ के हिन्दू और सिक्ख अमलदार इसी हुकूमत के मातहत काम करते हैं। क्या उन्हें ख्याल नहीं आता कि ऐसे शर्म का काम हम कैसे करते हैं? वहाँ सफेद पोशाक पहनने वाले वहुत से हिन्दू हैं। वे खासा पैसा कमाते हैं और खुशहाली में रहते हैं वे क्यों न एक दिन के लिए जाकर हरिजन वस्ती में रहें? वे अगर वहाँ आवें तो उन्हें क्य हो जायगी और उनमें से कोई तो शायद मर भी जायेंगे। ऐसी जगह इन्सानों को रखना, क्योंकि उनका यह गुनाह है कि वे हरिजनों के घर पैदा हुए हैं, वहुत वुरी वात है। यहाँ दिल्ली में भी मैं हरिजनों की वस्ती में गया हूँ। वह भी वहुत खराव है, मगर अजमेर उससे भी वदतर है। यह बड़ी शर्म की वात है। क्या ऐसी शर्मनाक वातें हम करते ही रहेंगे। हमने आजादी तो पायी, लेकिन उस

आजादी की तब तक कोई क़ीमत नहीं ? जब तक हम इस तरह की चीजें बन्द नहीं कर सकते। यह तो एक दिन में बन्द हो सकता है। क्या हम हरिजनों को सूखी जगह में नहीं रख सकते ? वे मैला उठाने का काम तो करें लेकिन वे मैले में ही पड़े रहें, ऐसा तो नहीं हो सकता। हमारी तो आज अक़्ल मारी गई है। हमारे पास हृदय नहीं रहा और हम ईश्वर को भूल गये हैं। इसीलिए तो गुनाह के काम करते जाते हैं।

अस्पृश्यता निवारण का काम अस्पृश्यों के स्पर्श से शुरू होता है मगर वहीं खतम नहीं हो सकता। एक विद्वान ब्राह्मण होते हुए भी बुरा आदमी हो सकता है। उसे ब्राह्मण कहना भारी भूल होगी। ब्राह्मण वह है जो ब्रह्म को जानता है। मनुष्य को बनाने वाला उसका अपना चरित्र होता है, धंधा नहीं। समाज में जो स्थान ब्राह्मण का है, भंगी का भी है, या होना चाहिए। दूसरी शक्ति समान हो तो कोई वजह नहीं कि क्यों एक भंगी मौलाना अबुल कलाम आजाद के मानिन्द कांग्रेस की कुर्सी को सुशोभित नहीं कर सकता। एक भंगी को, भंगी का काम करते हुए, महासभा के सदर की कुर्सी पर बैठते देखकर मुझे अपार हर्ष होगा।

अस्पृश्यता का घाव इतना गहरा चला गया है कि उसका ज़हर हमारे जीवन की रग रग में घुस गया है। ब्राह्मण-अब्राह्मण के भेदभाव की और अलग अलग प्रांतों व धर्मों के बीच के भेदभाव की जड़ अस्पृश्यता में रही है। अस्पृश्यता का यह जहर क्यों रहना चाहिए ? हम सब भारत माता के बच्चे हैं। हम सारे हिंदुस्तान को अपना कुनबा क्यों न मानें ? और दरअसल तो सारी मनुष्य-जाति हमारा कुटुम्ब है। क्या हम सब एक ही वृक्ष की शाखाएँ नहीं हैं ?

★

जब छुआछूत जड़ मूल से नष्ट हो जायेगी ये सारे भेदभाव अपने आप मिट जाएँगे, और कोई अपने आपको दूसरों से ऊँचा नहीं समझेगा। इसका सीधा नतीजा यह होगा कि गरीबों और दलितों का शोषण भी बंद हो जायगा और चारों तरफ़ प्रेम और सहयोग देखने में आएगा।

★

जनता यह न समझे कि मैं पत्थर की या सोने-चाँदी की मूर्त्ति में किसी तरह का विश्वास करता हूँ ! मूर्त्ति को भक्त जैसी बनाता है, वैसी वह बन जाती है। जब तक हरिजनों को

दिर में जाने की इजाजत न थी मेरे लिए वे मूर्त्तियाँ निष्प्राण थीं । मैं पहले भी मदुरा के मीनाक्षी मंदिर के सामने से गुज़र चुका था। मगर जब तक हरिजन वहाँ नहीं जा सकते थे मैंने कभी भीतर जाने की इच्छा तक न की। मैं तो भंगी होने का दावा करता हूँ। जिसमें भंगी न जा सकें, ऐसे मंदिरों में जाने की इच्छा मैं कैसे कर सकता था ? मेरा यह भी विश्वास है कि हिंदुस्तान के देव उसके मैदानों में हैं, जहाँ करोड़ों हिन्दुस्तानी रहते है। हिमालय पर कितने लोग पहुँच सकते हैं ? पलनी पर कुछ ज्यादा पहुँचते होंगे मगर ४० करोड़ तो वहाँ भी नहीं पहुँच सकते। मैं तो करोड़ों में से एक हूँ इसलिए वहीं रहना चाहूँगा।

देव तो मनुष्य के हृदय को पहचानते हैं। उसी की वे परवा करते हैं। उनके लिए बाहर का दिखावा, अगर वह भीतर का प्रतिबिम्ब न हो, कोई अर्थ नहीं रखता। मेरे लिए यह जान लेना बस था कि मेरे हरिजन भाई दूसरे हिंदुओं की तरह पलनी के मंदिर में जा सकते थे।

मगर एक चिड़िया के आने से वसन्त ऋतु तो नहीं आ जाती। इस एक प्रसंग से कोई निश्चयात्मक परिणाम नहीं निकाला जा सकता। तो भी मैं इसमें से यह आश्वासन लिए लेता हूँ कि हिन्दुस्तान के स्वराज्य के लिए यह शुभसूचक है।

★

मुझे यह सुनकर बड़ी खुशी हुई कि चितरंजन सेवा सदन पर एक बूढ़ी मेहतरानी के हाथों तिरंगा फहराया गया। यह मेहतरानी इसी संस्था में ईमानदारी से काम कर रही है। इसी तरह एक जिला काँग्रेस कमेटी के दफ्तर पर जिसका नाम मुझे इस वक्त याद नहीं आ रहा है, एक हरिजन लड़की के द्वारा झण्डा चढ़ाया गया। ये सारे काम उचित दिशा में किये जा रहे हैं।

★

गुजरात को गर्वीला करके कौन नहीं जानना चाहेगा ? पर जब मैं इस विषय पर लिखने चल रहा हूँ तब मेरे सामने गर्वीले नहीं वरन् पागल गुजरात का चित्र है। अब तक लोग जीते हुए हरिजन को जानते थे पर जो कहानी मैंने सुनी है उसमें मरे हुए हरिजनों की कहानी मैंने सुनी है।उसमें मरे हुए हरिजन को भी अन्त्यज मान लिया गया है। श्मशान भूमि में किसी भी रूप में आदमी-आदमी के बीच विभेद न होना चाहिए। जहाँ मरी देह जलकर राख हुई सब अपवित्रता खत्म हो जाती है।

★

बहनों से—

आप लोग हिन्दू धर्म से छुआछूत के काले दाग को धो डालिये। अब भी अगर आप अछूतों को अपनाने में आनाकानी करेंगी तो आपको इससे भी ज्यादा मुसीबतें उठानी पड़ेंगी। आप सब हर रोज अपने साथ खाना खाने के लिए एक हरिजन को न्योतना शुरू कीजिये। अगर आप से यह न बन सके तो खाना खाने से पहले किसी हरिजन को बुला कर उससे कहिये कि वह आपके पीने के पानी को या आपकी रसोई को छूये। इस तरीके से आम लोगों के जुदा-जुदा तबकों के बीच जात पाँत के गैर कुदरती भेदों के कारण पड़े हुये अन्तर को मिटाने में आप काफी आगे बढ़ सकेंगी।

अगर भीतरी परिवर्तन हुआ है तो जनता में उसके प्रचार की क्या आवश्यकता है? अब (अगर ब्राह्मण अपने तईं भंगी बन गया है) तो उसे भंगियों में बिना हिचक के मिल जुल जाना चाहिए और उनके कार्यों में कार्यतः साथ देना चाहिए। सम्भव हो तो उसे उनके साथ ही रहना चाहिए या किसी भंगी को अपने साथ रखना चाहिए। उसे अपने बच्चों की शादी हरिजनों में कर देनी चाहिए और पूछने पर कहना चाहिए कि वह अपनी इच्छा से हरिजन बना है और मतगणना में अपने को वह हरिजन या भंगी ही लिखायेगा।.......उसे प्रत्येक कर्तव्य पालना है बिना इसकी आशा किए कि अधिकार भी उसे मिलेगा।

अगर ऊँचे चरित्र के हिन्दू से कोई हरिजन लड़की शादी करती है तो वे दोनों हिन्दू और हरिजन दोनों जातियों का हित करेंगे। वे नया आदर्श उपस्थित करेंगे और अगर हरिजन लड़की सचमुच ही लायक होगी तो वह अपने गुण की सुगन्ध चारों ओर फैलायेगी और दूसरों को ऐसा करने की हिम्मत दिलायेगी।.......अगर ऐसे दम्पति से अच्छे पुत्र उत्पन्न होंगे तो वे अस्पृश्यता दूर करने में और भी सहायक होंगे। हरएक सुधार की गति पहले बहुत धीमी होती है।

लोग निश्चित ही इच्छा कर सकते हैं कि सवर्ण हिन्दू लड़कियों को हरिजन पति चुन लेना चाहिए। मैं इसे अच्छा कहने में हिचकता हूँ। इससे तो यह साफ लगेगा कि औरतें मर्दों से कम महत्व की हैं। मैं जानता हूँ कि इस तरह की छोटी समझी जाने वाली भावना यहाँ उपस्थित है। यों इस समय मैं हरिजन लड़कियों के हिन्दू पति से विवाह करने से अच्छा समझूँगा कि सवर्ण-लड़कियाँ हरिजन पति चुनें। अगर मैं अपनी करने पाऊँ तो मैं अपने प्रभाव क्षेत्र में आने वाली प्रत्येक सवर्ण लड़की से कहूँगा कि वह हरिजन पति चुन ले। यह काम सब से

मुश्किल है, मैं जानता हूँ। पुराने वैषम्यों को दूर कर देना सरल काम है भी नहीं पर धीरज के साथ चल कर उन्हें दूर भी किया जा सकता है। और अगर एक लड़की केवल शादी करके ही अपना काम खतम समझती है तो यह स्थिति तो पहली वाली से भी खराब हो जायगी। इस प्रकार की शादी की अन्तिम परीक्षा इसी में है कि कितनी दूर तक इसने दोनों दलों में सेवा की भावना उत्पन्न की है।

★

बच्चों और बेवाओं की शादी के बारे में आपकी क्या राय है?

उत्तर—मेरी राय तय है। पहले तो बच्चे बेवाओं की सम्भावना होनी ही न चाहिये। मैं बच्चों की शादियों के खिलाफ़ हूँ। वह एक बुरा रिवाज़ है जो शायद कमनसीबी से नाम-शूद्रों ने ऊँची कहलाने वाली जातियों से ले लिया है।

मैं दहेज के रिवाज के भी खिलाफ हूँ। यह बच्चियों के बेचने के सिवा और कुछ नहीं है। नाम-शूद्रों में भी जातियाँ हों, यह दुःख की बात है। मैं जोरों से उन्हें सलाह दूँगा कि वे अपने बीच से जाति-पांति का बखेड़ा छुड़ावें और सिर्फ़ एकही जाति होनी चाहिए जो भंगी हो। सब हिन्दुओं को भंगी कहलानें का घमण्ड होना चाहिए। दूसरा कुछ भी नहीं यह नाम-शूद्रों में भी लागू है।

हरिजन भाइयों से—

भंगी तो 'शिव' को भी कहा जाता है। वे जगत को पवित्र करते हैं और आप समाज को पवित्र और स्वस्थ रखते हैं।

जब आप सदियों की नींद के बाद जागेंगे तब अपने चारों ओर फैले गन्दे वातावरण को साफ कर देंगे।

भारत तब सफाई का एक नमूना बन जायगा।

●

धर्म परिवर्तन विनाश का रास्ता है—

धर्मान्तर से उस कार्य की, जिसे आप करना चाहते हैं केवल हार ही होगी……

मैं आपसे यह बात दृढ़तापूर्वक कह सकता हूं कि हिन्दू धर्म का त्याग कर आप अपनी दशा नहीं सुधार सकते।

आपका उद्धार स्वयं आपके हाथ में है।

●

सुधारकों से—

सुधारकों को विरोधियों की रोषाग्नि में

प्राणों की आहुति देनी पड़ेगी।

●

उद्धार, दृढ़ता और आहुति

जब भंगी सचमुच ही सदियों की नींद के बाद जागेंगे तब वे सफलता पूर्वक सब कहीं फैले गन्दे वातावरण को स्वच्छ कर देंगे और भारत सफाई का एक अच्छा सा नमूना बन जायगा जिससे देश में प्लेग या इसी तरह की वे बीमारियाँ ही न रहेंगी जो इसी कीचड़ और मैल से फैलती हैं।

★

मेरे विचार से तो तुम 'हरिजन' हो ही, पर अपने मन से तुम्हें हरिजन बनना हो तो तुम्हें हरि की सच्ची भक्ति प्राप्त करनी होगी और तुम्हें भी अपनी स्वच्छता और शुद्धि बढ़ानी पड़ेगी। तुम ऐसा करोगे तो इस धर्म की शोभा बढ़ाओगे।

★

डॉक्टर का धन्धा रोगी के उपकार के लिए है, लेकिन मेहतर का धन्धा तो सारे संसार का उपकारक होने के कारण अधिक उपयोगी और अधिक पवित्र है।

डाक्टर यदि डाक्टरी छोड़ दे, तो उसके रोगी का सर्वनाश हो जाय। किन्तु मेहतर अगर अपना काम बन्द कर दे, तो जगत् का ही विनाश हो जाय।

★

सब कुछ आपकी कोशिशों पर निर्भर है। स्वर्गीय मालवीय जी कहा करते थे कि भगवान के बच्चे ईमानदारी के साथ चाहे एक कौड़ी ही जमावें या कमावें मगर उन्हें उससे ही गुजर करके संतोष मानना चाहिये। इससे आपको सुख प्राप्त होगा और छुवाछूत मिट जायगी। जिन्हें ऊंची जातों का माना जाता है वे आपके खिलाफ किए हुए कामों के लिये शर्मिन्दा होंगे।

★

मैं चेतावनी देता हूँ कि अपने आपको गिरा हुआ या अछूत न समझो। असल में ऊंची कहलानेवाली जातें गुनाहगार हैं। आपकी गिरी हुई हालत की जिम्मेदारी उन पर है। अगर आपने वह सचाई महसूस की है। तो आप उन लोगों के बुरे रीत-रस्म और बुरी आदतों की नकल कभी न करें।

★

मुझे यह सुनकर दुख हुआ है कि आप लोगों में बच्चे के व्याह कर दिये जाते हैं और ऊंची जातों की देखा देखी छोटी छोटी बेवाओं को फिर से व्याह करने से रोका जाता है। मैंने सुना है कि इसके नतीजों के तौर पर बदचलनी से पैदा होनेवाली बीमारियां आप लोगों में फैल गई हैं। आपकी भलाई कानून सभाओं या किन्ही बाहरी जरियों से न होगी।

★

जो हरिजन या दूसरे भाई मन्दिरों में जाना चाहें उनके लिए दो तीन शर्तें शास्त्रों ने रखी हैं। हृदय से और शरीर से शुद्ध होकर मन्दिर में जाना चाहिए। स्वच्छता के नियमों का पालन सबके लिए आवश्यक है। अतः हरिजनों को चाहिए कि वे शौचाचार का पालन करें। दूसरी शर्त यह है कि गोमांस सभी धर्मों में त्याज्य माना गया है। मैं नहीं जानता कि कहीं भी संसार के सभ्य और धार्मिक लोग मुर्दार मांस खाते हैं। मुर्दार मांस के प्रति सारी मानव जाति घृणा करती है। सवर्ण हिन्दू उन्हें अपनावें या न अपनावें फिर भी हरिजनों को इसका त्याग कर देना चाहिए। अपने को हिन्दू मानने वाले को गोमांस भी छोड़ देना चाहिए। अब एक चौथी चीज है, मद्य-पान का भी परित्याग। चाहे और हिन्दू उसे छोड़ें या न छोड़ें पर तुम लोगों को तो उसे छोड़ ही देना चाहिए। यह बड़ा ही बुरा व्यसन है। शराब छोड़ने से हिन्दुस्तान का करोड़ों रुपया बचेगा और हैवान न रहकर लोग इंसान बनेंगे। जिसे पीने से मा बहन का भेद मनुष्य भूल जाता है उसे तुम लोग मत पियो। जूठन माँगने और खाने की कुटेव तुम्हे सदा के लिए छोड़ देनी चाहिए। इसमें सवर्ण हिन्दुओं का दोष है। अज्ञान के वश होकर सवर्ण स्त्रियाँ हरिजनों को जूठन देती है। उन्हें चाहिए कि जूठन के बदले वे नित्य हरिजनों के लिए अलग निकालकर रख दिया करें। हरिजन भाई जो मन्दिर में जावें उन्हें वहाँ के तमाम नियमों का पालन करना चाहिए जो सवर्णों के लिए लागू हों।

★

मैं कह सकता हूँ कि भंगी का और चमार का काम इस तरह किया जा सकता है कि जिसमें सफाई और स्वास्थ्य की पूरी तरह रक्षा हो सके। प्रत्येक माता अपने बच्चे की मेहतरानी होती है और आधुनिक चिकित्सा शास्त्र का प्रत्येक विद्यार्थी चमार का काम करता है क्योंकि उसे आदमी की लाश चीरनी पड़ती है और उसकी खाल उतारनी पड़ती है। पर उसके धन्धे को हम पवित्र मानते हैं। मेरा कहना है कि साधारण भंगी और चमार का धन्धा भी माताओं और डाक्टरों के कार्यों से कम पवित्र और उपयोगी नहीं है।

★

भारत के सभी प्रान्तों के अछूतों से मिलने का अवसर मुझे मिला है। मैंने देखा है कि उनके अन्तर्गत जो विशेषता छिपी है उसका न तो उन्होंने कभी अनुमान किया है और न किसी हिन्दू ने ही किया है। उनकी बुद्धि की प्रखरता एक दम पवित्र है। मैं आपको सलाह दूँगा कि आप चर्खा और करघा उठा लीजिये, जिस दिन आप चरखा कातना सीख जायेंगे उसी दिन दरिद्रता आपसे कोसों दूर भाग जायगी। भंगियों के साथ अपका व्यवहार कैसा होना चाहिये

इसके सम्बन्ध में गोधरा में मैंने कहा था कि आप भेद भाव क्यों लाते हैं। उनमें किसी तरह का भेद नहीं है। उनका पेशा उतना ही मर्यादित है जितना किसी वकील या सरकारी कर्मचारी का।

★

आपको उच्छिष्ट भोजन नहीं ग्रहण करना चाहिये चाहे देने वाले कितने भी पवित्र क्यों न हों। आपको मजूरी में सूखा दाना लेना-देना चाहिये। यदि आपने मेरे कथन के अनुसार काम किया तो निश्चय जानिये कि आपका उद्धार देखते देखते हो जायगा।

★

वे आत्म निर्भर हैं। और गैर पञ्चम अपना धर्म समझकर अपनी पूर्ण इच्छा से उनकी जो कुछ सहायता करें उससे ही अपना काम चलावें। असहयोग की आवश्यकता पड़ती है। इस व्यक्त बुराई को दूर करने के लिए सुसंगठित असहयोग की योजना ही उचित समझता हूँ। पर असहयोग के माने हैं बाहरी सहायता से एकदम बरी रहना। अपनी शक्ति के उपयोग की सहायता ही उसका धर्म है।

इसलिए इनके साथ जो दुर्व्यवहार किया जाता है उसके विरोध में पञ्चम जातियों को उचित है कि वे हिन्दुओं के साथ तब तक असहयोग कर अपना सम्बन्ध विच्छेद कर लें जब तक उनकी उस अयोग्यता का प्रतिकार न कर दिया जाय। इसके लिए सुसंगठित प्रयास की आवश्यकता है। पर जहाँ तक मुझे दिखाई देता है पंचम जातियों में ऐसा कोई नहीं हैं जो असहयोग द्वारा उन्हें सफल मनोरथ कर सके।

हिन्दुओं को यह बात भलीभाँति समझ लेनी चाहिए कि यदि वे लोग सरकार के साथ असहयोग कर उसमें सफलता प्राप्त करना चाहते हैं तो उन्हें पंचम जातियों को अपने में मिलना होगा, जिस तरह उन्होंने मुसलमानों को मिलाया है।

★

पहले पत्र में लिखनेवाले भाई ने मन्दिरों के जो अलग अलग भाग किये हैं उसमें मुझे कोई सचाई नहीं मालूम होती। स्वामी नारायण के मन्दिर, जैन मन्दिर वगैरह में हर एक हिन्दू जा सकता है और जाता है। उनमें हरिजनों को भी जाना चाहिये। यह बात सिद्ध करनेवाली हलचल से चलती आई है कि हरिजनों और ब्राह्मणों के एक से हक हैं। उसमें बहुत हद तक सफलता मिली है। अब तो बम्बई सूबे में एक कानून बन गया है। इसलिए

अब सत्याग्रह का कोई स्थान है, ऐसा मुझे लगता नहीं। जो कायदा लोकमत के अनुसार होगा, उसे स्वभाव से जनता का आदर मिलेगा। अगर कायदा लोकमत के खिलाफ होगा, तो उसका अमल धीरे धीरे होगा। लोकशाही में कायदे का अमल जबरन नहीं होसकता। उसमें विवेक की जरूरत सदा रहती है। सुधारक समझ पूर्वक कायदे की मदद ले, तो वह सफल होता है। अगर वह जल्दीबाजी करता है तो कायदा बेकार साबित होता।

★

ट्रस्टी, मन्दिर का बनानेवाला भी, जब वह आम जनता के लिए उसे बनाता है मालिक नहीं रह जाता है। मन्दिरों के मालिक उसके पुजारी हैं। पुजारी वह है जो उसमें पूजा करने या पूजा का दिखावा करने जाता है। इस दृष्टि से जैन मन्दिर, स्वामीनारायण मन्दिर वगैरह हिन्दुओं के माने जाते हैं। इन मन्दिरों में मैं खुद गया हूँ। मुझे या मुझ जैसे सैकड़ों आदमियों को कोई पूछता नहीं कि तुम किस जाति के हो। हिन्दू जैसा लगूँ, इतना बस है। इसलिए जहां हिन्दू जायें, वहां हरिजन भी जायं। हरिजन नाम की कोई अलग जाति आज नहीं है। वह चार या अठारह वर्णों में शामिल है। जागृत लोकमत ऐसा कहता है, उसे आदर देनेवाला कानून ऐसा कहता है। उसके खिलाफ जानेवाला मत आज नहीं चल सकता। देव में प्राण डालने वाले पुजारी होते हैं। वे अच्छे, तो देव अच्छे।

★

ऊपर कहे मुताबिक मेरा दृढ़ मत होते हुए भी हरिजनों का आग्रह मेरी समझ में नहीं आता। जो हठ पकड़कर बैठे हैं वे सच्चे भक्त नहीं हैं। उन्हें देवदर्शन की नहीं पड़ी है वे हक के पीछे दौड़ते हैं और इसलिये धर्म से दूर जाते हैं। वे लिखें, उसपर सही न करें और अपनी तरफ से दूसरे को लिखने दें। सच्चा पुजारी तो भक्त नन्दनार का अनुसरण करता है। नन्दनार की पीठ पर ईश्वर के सिवा दूसरा कोई न था। उस नन्दनार को आज अपने को ऊँचा मनाने वाले ब्राह्मण भी उत्साह से पूजते हैं। अपनी इच्छा से हरिजन बना हुआ मैं हरिजनों में नन्दनार को देखने की इच्छा रखता हूँ। और उसी तरह जन्म से माने जानेवाले हरिजन भी इच्छा रखें। अगर गैर-हरिजन-हिन्दू को इज्जत के साथ मन्दिर में ले जाय। ऐसा न हो, तब तक हरिजन घर बैठे गंगा लावें और उसमें स्नान करें। उन्हें किसी मन्दिर के सामने जाकर फाका करने की जरूरत नहीं। इसे मैं अधर्म मानता हूँ। ऐसे फाके को हिन्दी में 'धरना देना कहते हैं। गुजराती में इसे लंघन करना या 'त्रागा' (दूसरे को रास्ते पर लाने लिये अपने ऊपर की जानेवाली जबरदस्ती) कहते हैं। उसमें पुण्य तो नहीं, पाप ही है। ऐसे पाप से सब सौ कोस दूर रहें।

धर्मपरिवर्तन करने वालों से

प्रश्न—'जहां हरिजनों में धर्मान्तर की प्रवृत्त चलती हो वहां हमें क्या करना चाहिये ?

उत्तर—हम इस प्रवृत्ति को रोक नहीं सकते। पर हम खुद हरिजनों के बीच में जाकर बैठ जायेंगे। सेवाग्राम की ही एक बात है। एक ईसाई-धर्म प्रचारक ने आकर स्कूल खोल दिया। पैसे वगैरह की लालच भी देता था मगर हम लोगों ने जाकर देहात के लोगों को समझा दिया कि अगर समझपूर्वक लोक-परलोक का विचार करके बच्चों को वहां भेजते हो तो भले, नहीं तो उन्हें वहाँ भेजना बन्द कर देना चाहिये। वे समझ गये। धर्मान्तर की बात तो वे बेचारे समझते भी न थे। अब तो बड़े पादरी का वह आदमी भी अपने पास ही आकर रह गया है।

"इस तरह जगह जगह हरिजनों के बीच हमारी छावनियाँ होनी चाहियें। अगर हमारा उनसे ठीक ठीक सम्बन्ध हो गया है तो वे हमें कुटुम्ब के आदमी जैसा ही समझेंगे और दुख सुख की हर एक बात में हमारी सलाह लेकर चला करेंगे। परन्तु हमारा मुख्य काम लोगों के बीच होगा। कई जगह किताबों रुपये वगैरह का लालच भी इन प्रचारकों की ओर से दिया जाता है। हमें जाग्रत रहना चाहिये। इसके बावजूद भी यदि वे धर्म बदलते हैं तो हमें उसकी परवाह नहीं करनी चाहिये।

★

हिन्दू रहकर मरने की अपेक्षा किसी दूसरे धर्म को ग्रहण कर लेने की डा० अम्बेडर ने जो धमकी दी है वह ठीक नहीं। यदि धर्म का परिवर्तन उचित भी मान लिया जाय तो भी डा० अम्बेडकर के इस धर्मान्तर से उस कार्य की, जिसे वे करना चाहते हैं, केवल हार ही होगी। डा० अम्बेडकर जैसे शक्तिशाली लोगों के हिन्दू धर्म से सम्बन्ध विच्छेद कर लेने से हरिजनों के बचाव के हकमें कुछ कमजोरी ही आ सकती है।

डा० अम्बेडकर के इस उचित रोष से सुधारकों को अधीर या उद्विग्न नहीं होना चाहिए। यद्यपि यह सच है कि अस्पृश्यता से लड़नेवाले कर्यकर्ताओं की संख्या बहुत बढ़ गयी है पर वह अब भी इतनी छोटी है कि उससे युगों का दुराग्रह दूर नहीं हो सकता। तो भी अस्पृश्यता-निवारण जैसी प्रवृत्ति ने जहाँ तक प्रगति की है उसे देख कर तो यही कहा जा सकता है कि अस्पृश्यता अब अपनी आखिरी सांसें ले रही है। मानवता अब उसे अधिक दिनों तक बर्दाश्त नहीं कर सकती।

★

आज की हालत में इससे एकदम यह सवाल उठता है कि पाकिस्तान के परिगणित जातियों के लोगों का, जहाँ वे एक दूसरे से मिले हुए हिस्सों में नहीं रहते, बल्कि बिखरे हुए रहते हैं, क्या होगा ? क्या उन सबको इस्लाम स्वीकार करना पड़ेगा ? मैं तो सिर्फ इतना ही कह सकता हूँ

कि अगर वे अपने कपड़ों की तरह अपना धर्म भी वदल देते हैं तो उनका धर्म बहुत हलके तत्वों का बना हुआ होना चाहिये। धर्म इससे ज्यादा मजबूत तत्वों से बना होता है, वह गहरा निजी मामला है, वह इज्जत से भी ज्यादा निजी चीज़ है। सच पूछा जाय तो उसमें बड़ी से बड़ी जोर ज़बरदस्ती का सामना करने की ताक़त होनी चाहिये।

★

यहाँ मुझे एक खत लिखनेवाले भाई की पिछले दिनों की गयी यह दलील याद आती है कि अगर निजी धर्म के बारे में कहे गये मेरे 'हिम्मत भरे' शब्द सिर्फ सन्यासियों तक ही सीमित हों तो ठीक है, मगर जिन्दगी में कई क़िस्म के प्रलोभनों के शिकार बने हुये गृहस्थों पर वे लागू नहीं होते। अगरचे मैं इस दलील का समर्थन नहीं करता क्योंकि जिनकी तरफ से यह की जाती है, उन्हीं को यह कमजोर बनाती है फिर भी मैं यह महसूस किये बगैर नहीं रह सकता कि इसमें काफ़ी ज़ोर है। खास कर जब वह परिगणित जाति के लोगों पर लागू की जाती है जो अपने हिन्दू भाइयों के बुरे बरताव से पीड़ित हैं और झूठमूठ अपने बड़प्पन का बेजा अधिकार जमाने वाले अपने साथियों के बुरे व्यवहार से बचने की उम्मीद में ज़ोर-ज़बरदस्ती से धर्म बदलनेवालों के सामने झुक सकते हैं। इस ज़ोर-ज़बरदस्तीमें कई चालाकी भरे तरीके अख्तियार किये जाते हैं। जैसे मुफ्त में ज़मीन दे देना, या क़ाबिलीयत का खयाल किये बगैर नौकरी दिला देना।

★

यदि धर्म परिवर्तन से सुख मिले तो मैं बिना संशय सलाह दे सकता हूँ। पर धर्म हृदय की बात है। शारीरिक यातना या असुविधा से धर्म-त्याग की भावना नहीं उठ सकती। यदि पंचम जातियों के साथ यह अत्याचार पूर्ण व्यवहार हिन्दू-धर्म में निहित हो तो उन्हें उचित है कि उस धर्म का तुरत त्याग कर दें और अपनी इस हीनता का सारा दोष उसी हिन्दू-धर्म के सिर पर मढ़ें। पर मैं जानता हूँ कि हिन्दू-धर्म में अछूतों का कोई प्रश्न नहीं आया है। हिन्दू-धर्म का कथन है कि इस तरह की बातें उठा देनी चाहिएँ। इस समय अनेक समाज-सुधारक हिन्दू-धर्म पर से यह काला धब्बा मिटा देने के लिए प्राणप्रण से यत्न कर रहे हैं। इस लिए धर्म-परिवर्तन से कोई लाभ नहीं हो सकता।]

★

हरिजनों को ख्याल रखना चाहिए कि आप हिन्दू समाज को पवित्र करते हैं। आप स्वयं पवित्र हों जिसमे कोई भी आप से कुछ कह न सके। इसलिये यदि साफ रहने के लिये आप साबुन का यथेष्ट प्रयोग नहीं कर सकते तो मिट्टी का प्रयोग कीजिये। आप में से अनेक शराब पीते हैं और जुआ खेलते हैं। आपको यह आदत छोड़ देनी चाहिये। आप लोग कदाचित ब्राह्मणों की तरफ उँगली उठाकर कहेंगे कि उनमें भी इस तरह की आदत है। पर उनमें और आपमें भेद है। उन्हें कोई भी अप-

वित्र नहीं कहता पर आप अपवित्र समझे जाते हैं। आपको हिन्दुओं से प्रार्थना करके अपना उद्धार नहीं करवाना चाहिये। आप उनसे कृपा की भीख न माँगिए। हिन्दुओं को यह काम करना ही पड़ेगा, यदि वे अपने स्वार्थ की सिद्धि चाहते हैं। इसलिये आपको चाहिये कि आप अपनी आत्मा को शुद्ध रखें, अपने में से बुराइयों को दूर कर दें और इस तरह हिन्दुओं को लज्जित करें।

आप लोग हिन्दू हैं। भागवत पढ़ते हैं इसलिये यदि हिन्दू लोग आपको सताते हैं तो आपको समझना चाहिये कि इसका दोष हिन्दू धर्म पर नहीं है बल्कि यह उसके विधायक लोगों की भूल है और वे ही इसके दोषी और जिम्मेदार हैं। अपना उद्धार करने के लिए आपको अपनी शुद्धि करनी होगी।

सुधारकों से

यदि आप अपनी अवस्था में परिवर्तन करना चाहते हैं, यदि आप स्वराज्य प्राप्त करना चाहते हैं, तो आपको आत्म निर्भर होना चाहिये। बम्बई में मुझसे कहा गया था कि आप में से कुछ लोग असहयोग के खिलाफ हैं और ब्रिटिश सरकार की छत्रछाया में ही आप लोग अपनी मुक्ति समझते हैं। मैं आपसे यह बात दृढ़ता पूर्वक कह सकता हूँ कि हिन्दू-धर्म को त्यागकर आप अपनी दशा नहीं सुधार सकते। आपका उद्धार स्वयं आपके हाथ में है।

मैं तो स्वार्थी आदमी हूँ और खुद अपने आनन्द में मग्न रहता हूँ। मैं तो अपनी आत्मा का कल्याण चाहता हूँ। इसलिए मैं तटस्थ और निश्चिन्त बनकर बैठा हूँ। पर मैं चाहता हूँ कि जिस आनन्द का अनुभव मैं कर रहा हूँ उसका उपभोग आप भी करें। इसलिये मैं आपसे कहता हूँ कि अन्त्यजों का स्पर्श करके उनकी सेवा करके जो आनन्द प्राप्त होता है उसका उपभोग आप भी कीजिये।

अस्पृश्यता स्वयं एक असत्य है। असत्य का समर्थन कभी सत्य से नहीं हुआ जैसे कि सत्य का समर्थन असत्य से नहीं हो सकता। अगर होता है तो वह स्वयं असत्य हो जाता है। × × अस्पृश्यता—निवारण का समर्थन तो सुधारकों की चरित्र शुद्धि, परिश्रमशीलता और कड़ी से कड़ी ईमानदारी से होगा। मुझे इसमें आश्चर्य नहीं कि सुधारकों को विरोधियों की रोषाग्नि में प्राणों की आहुति देनी पड़े। विरोधियों का कोई भी बलिदान चाहे वह कितना भी महत्वपूर्ण क्यों न हो हिन्दू धर्म को अस्पृश्यता से मुक्त करने में सुधारकों को रोक नहीं सकता। पर मैं एक नहीं हजार बार कहूँगा कि अगर अस्पृश्यता जीवित रही तो हिन्दू धर्म का अन्त हो जायगा और हो जाना चाहिए।

एक बात सुधारकों से भी। ये सब बातें तभी सम्भव हैं जब कि सेवक अधिक जागरूकता से काम लें। उनकी सहायता के काम में खुद अपना भी उत्थान हुआ समझें। हरिजनों के लिए मन्दिर प्रवेश जैसे सुधारों में जो लोग लगे हुए हैं और जिनपर इसका असर पड़ता है, उनके जीवन भी आम तौर से ऊँचे उठने चाहिएँ।

अस्पृश्यता की भावनावाला व्यक्ति हर्गिज़ सत्याग्रही-सेना में भर्ती होने के काबिल नहीं। मैं अस्पृश्यता को अपने अधःपतन और हिन्दू-मुसलिम झगड़े की जड़ मानता हूँ।

जिस प्रकार हम अपने किसी बीमार सहवासी की सेवा-शुश्रूषा करते हैं उसी प्रकार इन बीमार 'अछूतों' की भी परिचर्या हमें करनी चाहिये।

मेरी राय में कोई व्यक्ति प्रथम दर्जे का हरिजन-सेवक नहीं बन सकता अगर उसमें धर्म भावना नहीं है। अगर धर्म की सेवा का खयाल उसमें नहीं तो सवर्णों पर उसका प्रभाव क्या पड़ेगा? सवर्णों को राजकारण की बहुत परवाह नहीं। परन्तु जब वे देखेंगे कि वह आदमी जो कि मेरी तरह हिन्दू-धर्म का प्रेमी है, जो शास्त्र मैंने पढ़े हैं वही वह भी पढ़ता है, तो वह अपने से पूछेगा कि क्यों यह आदमी अस्पृश्यता को हिन्दू-धर्म की मैल कहता है मैं क्यों नहीं? ऐसा विचार वह करने लगेगा।

★

हरिजन सेवक में यदि त्याग होगा तो उसका असर हरिजन जनता पर होगा। सब को वह अपना कुटुम्बीजन सा ही लगेगा। अगर कोई भूखा हरिजन उसके समीप होगा तो वह पहले उसे खिलायेगा, पीछे आप खायगा।

★

यह एक निर्विवाद सूत्र है कि अगर हम न्याय चाहते हैं तो पहले हमें खुद औरों पर न्याय करना चाहिए। परन्तु एक हिस्सा कांग्रेसियों का ऐसा भी है जिनकी आजादी का अर्थ अंग्रेजों से छुटकारा पाने तक ही सीमित है। वह मानते हैं कि अस्पृश्यता-निवारण तो धीरे-धीरे पीछे से भी हो सकेगा। उनकी यह मनोभूमिका आहिस्ते-आहिस्ते ही बदलेगी।

सुधारकों का दावा है, सनातनियों का नहीं, कि जिसे अस्पृश्य कह सकें, ऐसी कोई जाति नहीं है। दुर्भाग्यवश सवर्ण हिन्दुओं ने कई हिन्दू-जातियों को अलबत्ता अस्पृश्य मान रखा है और आज वे जातियाँ सरकारी दफ्तरों में भी अस्पृश्य नाम से लिखी जाती हैं। इसलिये जब तक सनातनी भाइयों को हम न समझा सकें, तब तक इस जाति-जनित अस्पृश्यता को दूर करने के लिए लड़ना सुधारकों का धर्म हो जाता है।

★

धोबी, हजाम, चमार, डोम, मेहतर ये लोग प्रजा के सच्चे सेवक हैं। अगर ये अपना धर्म छोड़ दें, तो प्रजा का ही नाश हो जाय। इन कर्मों को नीच और ऐसे कर्म करने वालों को अस्पृश्य मानने वाले सवर्ण हिन्दुओं ने गलती की, पाप किया, ऐसे सुधारक मानते हैं। सुधारक की धारणा है कि मेहतर और डोम का कर्म पवित्र है। सवर्णों का कर्तव्य है, कि इन कर्मों में यथा सम्भव सुधार करें। माता मलादि उठाती और साफ करती है। डाक्टर हाड़-मास और चमड़ा काटता है। लेकिन माता और डाक्टर अपना कर्म सफाई के साथ करते हैं, और कर्म करने के बाद स्वच्छ हो जाते हैं। कर्म करते समय वे अस्पृश्य बन जाते हैं। ठीक इसी तरह अपने मेहतर आदि के प्रति भी हमें वर्ताव करना चाहिए।